राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-१२ नवी मुंबई सितम्बर २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३२ निःशुल्क

प्रधानमंत्री मोदी की 'मन की बात' : धर्म के नाम पर हिंसा स्वीकार नहीं

नई दिल्ली। २७ अगस्त को अपने नियमित रेडियो संबोधन 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने कहा, 'भारत गांधी और बुद्ध का देश है. देश में हिंसा किसी भी तरह से स्वीकार नहीं की जाएगी. कानून हाथ में लेने वाले व्यक्ति या समूह को न तो ये देश और न ही कोई सरकार बर्दाश्त करेगी.'

'मन की बात' की खास बातें

सिर्फ घर में नहीं, पूरे देश में सार्वजनिक रूप से स्वच्छता का आग्रह. त्योहार हमारी आस्था व विश्वास के प्रतीक, नए भारत में हमें त्योहारों को स्वच्छता का भी प्रतीक बनाना है. अब टूरिज्म के आकर्षण का भी कारण बनते जा रहे हैं हमारे त्योहार.

हम पांच सितंबर को शिक्षक दिवस मनाते हैं. मैं डॉक्टर राधाकृष्णन जी को नमन करता हूं. इस बार हम सब मिलकर एक संकल्प कर सकते हैं. हम बदलाव के लिए सिखाएंगे, सशक्तिकरण के लिए शिक्षित करेंगे.

देश २६ अगस्त को हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी का जन्मदिन राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मना रहा है. खेल मंत्रालय ने खेल प्रतिभाओं की खोज के लिए स्पोर्ट्स टैलेंट सर्च पोर्टल तैयार किया है.

युवा पीढ़ी खेल जगत में आगे आए, कम्प्यूटर युग में आगाह करना चाहूँगा कि खेल का मैदान प्ले स्टेशन से ज्यादा अहम है. नई पीढ़ी खेल से जुड़े, अगर हम दुनिया के युवा देश हैं तो हमारी ये तरुणाई खेल के मैदान में भी नजर आनी चाहिए.

प्रधानमंत्री जन-धन योजना में गरीबों के द्वारा कद्रीब ६५ हजार करोड़ रुपया बैंकों में जमा हुआ है. २८ अगस्त को 'प्रधानमंत्री जन-धन योजना' के अभियान को ३ साल हो रहे हैं. ३० करोड़ परिवारों को इसके साथ जोड़ा गया है.

'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना' से बैंकों से बिना किसी गारंटी के पैसे मिले और करोड़ों नौजवान खुद अपने पैरों पर खड़े हुए. प्रधानमंत्री जन-धन योजना के साथ जिनका अकाउंट खुला है, उनको बीमा का भी लाभ मिला है.

प्रसन्नता का समाचार है कि भारत में ६ से २८ अक्टूबर तक फीफा अंडर-१७ वर्ल्ड कप का आयोजन होने जा रहा है.

कुछ दिनों बाद देश में ईद-उल-जुहा का त्योहार मनाया जाएगा, सभी को बधाई. प्रधानमंत्री ने पर्यूषण पर्व की परम्परा के अनुसार कहा- मेरे प्यारे देशवासियो, फिर एक बार आपको मिच्छामि दुक्कड़म! ■

सुप्रीम कोर्ट का फैसला : तीन तलाक अवैध घोषित

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने बहुमत के निर्णय में मुस्लिम समाज में एक बार में तीन बार तलाक देने की प्रथा को निरस्त करते हुए अपनी व्यवस्था में इसे असंवैधानिक, गैरकानूनी और शून्य करार दिया. कोर्ट ने कहा कि तीन तलाक की यह प्रथा कुरान के मूल सिद्धांत के खिलाफ है.

प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने अपने ३६५ पेज के फैसले में कहा, '३:२ के बहुमत से दर्ज की गई अलग-अलग राय के मद्देनजर 'तलाक-ए-बिद्दत' तीन तलाक को निरस्त किया जाता है. प्रधान न्यायाधीश जगदीश सिंह खेहर और न्यायमूर्ति एस अब्दुल नजीर ने तीन तलाक की इस प्रथा पर छह महीने की रोक लगाने की हिमायत करते हुए सरकार से कहा कि वह इस संबंध में कानून बनाए जबकि न्यायमूर्ति कुरियन जोसेफ, न्यायमूर्ति आर एफ नरिमन और न्यायमूर्ति उदय यू ललित ने इस प्रथा को संविधान का उल्लंघन करने वाला करार दिया. बहुमत के फैसले में कहा गया कि तीन तलाक सहित कोई भी प्रथा जो कुरान के सिद्धांतों के खिलाफ है, अस्वीकार्य है.

तीन न्यायाधीशों ने यह भी कहा कि तीन तलाक के माध्यम से विवाह विच्छेद करने की प्रथा मनमानी है और इससे संविधान का उल्लंघन होता हैं, इसलिए इसे निरस्त किया जाना चाहिए. ■

डोकलाम विवाद पर भारत और चीन में समझौता

नई दिल्ली। डोकलाम विवाद पर भारत और चीन में समझौते के बाद वहाँ से भारत एवं चीन की सेनाए हट गयी हैं. इससे दोनों देशों के बीच लगभग ढाई महीने से बना गतिरोध समाप्त हो गया है.

विदेश मंत्रालय ने बताया कि हाल के सप्ताहों में भारत एवं चीन के बीच डोकलाम की घटना को लेकर जो कूटनीतिक बातचीत हुई उससे यह रास्ता निकला. भारत अपनी चिंताओं एवं हितों को चीन को बताने और अपने विचारों से अवगत कराने में समर्थ रहा है.

उल्लेखनीय है कि सितंबर महीने के पहले हफ्ते मे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के चीन जाने वाले हैं. उससे पहले इस विवाद का सुलझ जाना भारतीय कूटनीति की सफलता है.

भूटान एवं चीन के बीच विवादित क्षेत्र डोकलाम में चीन की ओर से एकतरफा ढंग से सड़क निर्माण के प्रयास का पहले भूटानी सेना ने विरोध किया था. चीनी सेना ने उसे नहीं माना. इसके बाद भूटान के संकेत के बाद भारतीय सेना ने १६ जून को आगे बढ़कर चीनी सेना को रोका था. तभी से यह विवाद चल रहा था. ■

वेंकैया नायडू उपराष्ट्रपति चुने गये

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के नेता एम. वेंकैया नायडू उपराष्ट्रपति चुन लिये गए. इस पद के लिए हुए मतदान में उन्होंने विपक्ष के साझा प्रत्याशी गोपाल कृष्ण गांधी को २७२ वोटों से हराया. वेंकैया नायडू को ५१६ वोट मिले, जबकि गोपाल कृष्ण गांधी को २४४ मत मिले. नायडू उपराष्ट्रपति बनने वाले संघ की पृष्ठभूमि के दूसरे नेता हैं. इससे पहले भाजपा नेता भैरों सिंह शेखावत (१९२३-२०१०) इस पद के लिए २००२ में चुने गए थे.

मुप्पवरपु वेंकैया नायडू वर्तमान में भारत के उपराष्ट्रपति हैं। वे २००२ से २००४ तक भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। केंद्र में कई विभागों के मंत्री पदों को भी सुशोभित कर चुके हैं। भारत के सत्ताधारी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक संघ (एनडीए) ने १७ जुलाई २०१७ को उन्हें भारत के उपराष्ट्रपति पद का प्रत्याशी घोषित किया था। ५ अगस्त २०१७ को हुए चुनाव में गोपालकृष्ण गाँधी को पराजित करके वे भारत के तेरहवें उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए और ११ अगस्त २०११ को उपराष्ट्रपति बने।

प्रारंभिक जीवन

वेंकैया नायडू का जन्म १ जुलाई १९४९ को आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के चावटपलेम में एक कम्मू परिवार में हुआ था। उन्होंने वी.आर. हाईस्कूल, नेल्लोर से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और वी.आर. कालेज से राजनीति तथा राजनयिक अध्ययन में स्नातक किया। वे स्नातक प्रतिष्ठा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। तत्पश्चात उन्होंने आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखा-पत्तनम से कानून में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। १९७४ में वे आंध्र विश्वविद्यालय में छात्र संघ के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए। कुछ दिनों तक वे आंध्र प्रदेश की छात्र संगठन समिति के संयोजक भी रह चुके हैं।

राजनीतिक जीवन

वेंकैया नायडू की पहचान सदा एक आंदोलनकारी के रूप में रही है। वे १९७२ में 'जय आंध्र आंदोलन' के समय पहली बार सुर्खियों में आए। उन्होंने इसी बीच नेल्लोर के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुये विजयवाड़ा से आंदोलन का नेतृत्व किया। छात्र जीवन में उन्होंने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की विचारधारा से प्रभावित होकर आपातकालीन संघर्ष में हिस्सा लिया। वे आपातकाल के विरोध में सड़कों पर उतर आए और उन्हें जेल भी जाना पड़ा। आपातकाल के बाद वे १९७७ से १९८० तक जनता पार्टी के युवा शाखा के अध्यक्ष रहे। वर्ष २००२ से २००४ तक उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का उतरदायित्व निभाया। वे अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री रहे और उपराष्ट्रपति बनने से पहले नरेन्द्र मोदी की सरकार में वे शहरी विकास, आवास तथा शहरी गरीबी उन्मूलन तथा संसदीय कार्य मंत्री थे। ■

मालेगांव ब्लास्ट : ९ साल बाद ले. कर्नल पुरोहित रिहा

मुंबई। मालेगांव ब्लास्ट केस में आरोपी लेफ्टिनेंट कर्नल श्रीकांत प्रसाद पुरोहित नौ साल बाद २४ अगस्त को जेल से बाहर आ गए। जेल से वे सेना की गाड़ी से रवाना हुए। नियमों के अनुसार अभी उन्हें सेना की खुली देखरेख में रखकर उनकी गतिविधि पर नजर रखी जाएगी। ज्ञात हो कि पुरोहित को सुप्रीम कोर्ट से इस आधार पर जमानत दी गई है कि उनके विरुद्ध लगायी गयी चार्जशीट में कोई दृढ़ सबूत नहीं है।

कोर्ट में पेशी के बाद जेल जाते समय पुरोहित ने कहा था कि आर्मी ने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा। निर्दोष होते हुए भी लम्बे समय तक जेल में रहने के बाद भी उन्होंने अपना समर्थन करने के लिए सेना के प्रति आभार व्यक्त किया।

उल्लेखनीय है कि २९ सितम्बर २००८ को महाराष्ट्र में नासिक जिले के मालेगांव में बम ब्लास्ट हुआ था। इसमें ७ लोगों की मृत्यु हो गई थी व लगभग १०० लोग घायल हुए थे। इस मामले में साध्वी प्रज्ञा और पुरोहित सहित १२ लोग पकड़े गए थे। ■

कार्टून स्वच्छता अभियान -- मनोज कुरील

बाबा राम रहीम को २० साल की सजा, ३० लाख रूपये का जुर्माना

रोहतक। सिरसा के डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को १५ साल पुराने साध्वी रेप केस में २० साल कैद की सजा सुनाई गई. रोहतक जेल में ही जज जगदीप सिंह ने गुरमीत राम रहीम सिंह को सजा सुनाई. बाबा गुरमीत राम रहीम को बलात्कार के दो मामलों में कुल २० साल की सजा मिली है. राम रहीम ने सजा सुनते हुए अदालत में जज के सामने दया की भीख मांगी, लेकिन अदालत ने दया की अपील रद्द कर दी. कोर्ट ने अपने फैसले में राम रहीम सिंह पर ३० लाख जुर्माना भी लगाया है. जुर्माने की इस रकम में से इस केस की दोनों पीड़िता साध्वियों को १४-१४ लाख रुपये दिये जायेंगे. ■

सुभाषित

कामधेनु गुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी।
प्रवासे मातृ सदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- विद्या ही कामधेनु गाय है जो बिना समय के ही फल देती रहती है। घर से बाहर माता के समान संरक्षण करती है। विद्या को ही सुरक्षित धन समझो।

पद्यार्थ- कामधेनु विद्या समझ, यथा समय दे दान।
घर बाहर माता समझ, छिपा हुआ धन मान।। (आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

एक क्रांतिकारी निर्णय

माननीय सर्वोच्च न्यायालय की एक संविधान पीठ ने फटफटिया तीन तलाक को असंवैधानिक और अवैधानिक घोषित करके एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी निर्णय दिया है, जिसके बहुत दूरगामी परिणाम होंगे। एक साथ तीन शब्द बोलकर पत्नी को बेसहारा, अपमानित और पीड़ित करने की यह प्रवृत्ति इतनी अमानवीय है कि इसकी जितनी निन्दा की जाये कम है। प्रायः मुसलमान पति नशे, क्रोध और आवेश में तीन शब्द बोलकर पत्नी को अपमानित किया करते थे, जिससे पत्नी हमेशा उससे डरी-डरी और दबी हुई रहती थी। दूसरे शब्दों में, पत्नी के सिर पर तलाक की तलवार हमेशा लटकी रहती थी और पति अपनी पत्नी का एक प्रकार से भयादोहन करता था।

तीन शब्द बोलकर तलाक देने के कुछ समय बाद जब पति को अपनी मूर्खता का भान होता था, तो वह बहुत पछताता था और फिर उसी महिला से दोबारा निकाह करना चाहता था। ऐसा करने के लिए पत्नी को हलाला की अत्यन्त अमानवीय और अपमानजनक परिस्थिति से गुजरना पड़ता था, जिसमें उसका निकाह किसी अन्य व्यक्ति से कराया जाता था और कम से कम एक रात उसके साथ गुजारनी पड़ती थी। अगले दिन जब वह व्यक्ति भी उसको इसी प्रकार तलाक देता था, तब महिला का निकाह उसके पूर्व पति से कराया जाता था। सारी गलती पति की होने पर भी केवल पत्नी को इस जघन्य प्रक्रिया से गुजरना होता था, जिसका घाव वह जिन्दगीभर सहन करती थी।

कई मुल्ला-मौलवी हलाला का बाकायदा कारोबार किया करते थे। इसका अर्थ है कि वे अस्थायी रूप से तलाकशुदा महिला के साथ अपना निकाह करा लेते थे और एक रात उसके साथ ऐश करने के बाद दूसरे दिन उसे तलाक दे देते थे। इतना ही नहीं वे इस कार्य के लिए अच्छी खासी रकम भी पति से वसूल करते थे। दूसरे शब्दों में, मुल्ला-मौलवी एक प्रकार से पुरुष वेश्या की भूमिका निभाते थे। आशा की जानी चाहिए कि अब इस कारोबार पर पूरी तरह रोक लग जाएगी, क्योंकि जब फटफटिया तलाक नहीं होगा, तो हलाला होने का प्रश्न ही नहीं है। बहुत से लोग तो कहते हैं कि मुल्ले इसीलिए तीन तलाक पर रोक का विरोध कर रहे थे कि उनका धंधा खत्म हो जाएगा। लेकिन वास्तव में तो यह उनके लिए प्रसन्नता की बात है, क्योंकि अब वे पुरुष वेश्या जैसा कार्य करने को बाध्य नहीं होंगे।

लेकिन मुस्लिम समाज में सुधार का यह कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है। अभी भी उसमें चार-चार शादियों का अधिकार बना हुआ है, जिससे मुस्लिम महिलाओं को पीड़ित किया जा सकता है। कोई भी महिला अपनी सौत को पसन्द नहीं कर सकती। लेकिन पुरुष उसे तलाक दिये बिना ही दूसरी-तीसरी-चौथी शादी कर लेंगे और इस तरह उसे प्रताड़ित करते रहेंगे। इस पर तभी रोक लग सकती है जब चार-चार शादियों वाला अधिकार भी कानून बनाकर समाप्त कर दिया जाये। इसके विरोध में मुल्ले वे ही थोथे तर्क देंगे कि यह कुरान में है, शरियत में है, बहुत कम लोग दूसरी शादी करते हैं आदि-आदि। लेकिन इन तर्कों में कोई दम नहीं है। शरियत में तो चोरों के हाथ-पैर काटने की भी व्यवस्था है, क्यों नहीं वे अपने ऊपर उसको लागू करने की माँग करते? फिर देश के नागरिकों पर देश का संविधान लागू होता है, शरियत या कुरान नहीं। जिनको देश के संविधान में विश्वास नहीं है, वे यह देश छोड़कर अपनी पसन्द के देश में जाने के लिए स्वतंत्र हैं। ■

आपके पत्र

पत्रिका मिली, बहुत सुन्दर एवं प्रभावशाली अंक है। **- अशोक सिन्हा**

बहुत ही सुंदर अंक। मेरी लघुकथा को स्थान देने हेतु हार्दिक आभार। **- लक्ष्मी थपलियाल**

जय विजय का अंक भव्य सज्जा के साथ प्राप्त हुआ। सफलतापूर्वक एक और अंक निकालने की बधाई। **- बासुदेव अग्रवाल नमन**

अति सुंदर, संतुलित और सराहनीय 'जय विजय' मासिक पत्रिका का अगस्त २०१७ अंक साहित्यिक शिल्पकारों के अनुपम विचारों से ओतप्रोत है। मेरी एक गजल को इस अंक में स्थान मिला। सादर धन्यवाद। **- महातम मिश्र**

मेरी लघुकथा 'वन महोत्सव' को अगस्त के अंक में स्थान देने के लिए संपादक महोदय का हृदय तल से आभार। **- लवी मिश्रा**

अपनी प्रिय पत्रिका जय विजय का अगस्त का बेहद सुंदर अंक भेजने के लिए धन्यवाद। धुरंधर विद्वान लेखकों की अनुपम रचनाओं के बीच मेरी भी एक लघुकथा को शामिल करने के लिए आपका कोटिशः आभार। **- राजकुमार कांदु**

जय-विजय के अगस्त अंक में विविध प्रकार की उच्चस्तरीय और संग्रहणीय सामग्री प्रकाशित हुई है। मेरा सादर साधुवाद स्वीकार करें। इस अंक में मेरी लघुकथा 'क्या बताऊँ यार' को स्थान देने हेतु हार्दिक आभार। **- डॉ रमा द्विवेदी**

श्रमसाध्य एवं उत्कृष्ट सामग्री के लिए धन्यवाद। **- अजय पारीक**

इस सुन्दर अंक के सुसंपादन के लिए अभिनन्दन। **- मंजु महिमा**

जय विजय का अगस्त अंक मिला, हमेशा की तरह साहित्य से भरपूर और सामयिक राजनीतिक बातों पर सहज ही अपनी प्रतिक्रिया देते लेख और परिचर्चायें। अंक पिछले अंकों की तरह ही बेहतरीन बना है। मेरी रचना को शामिल करने के लिए हार्दिक आभार. समयाभाव में अक्सर समूह में सक्रिय नहीं हो पाता लेकिन मासिक पत्रिका को पढना नहीं भूलता. पत्रिका अपने आप में सब कुछ समेटे, काफी आकर्षक बनती है। एक पृष्ठ यदि सिनेमा से जुड़ा हुआ जो समय समय पर अलग अलग विषय को पकड़ने का प्रयास करे. तो काफी अच्छा रहेगा (सिर्फ मेरा एक निजी सुझाव) एक बात जानना चाहूँगा, इतनी अच्छी पत्रिका को क्या 'पेपर प्रिंट' संस्करण में लाने का कोई विचार है. यदि ऐसा हो तो बहुत उम्दा होगा. **- विरेंदर वीर मेहता**

(आपने कई उपयोगी सुझाव दिए हैं. हमने उन पर विचार किया है. भविष्य में साधन हुए तो पत्रिका छापने पर अवश्य विचार किया जायेगा. धन्यवाद. **- सम्पादक**)

अच्छी पठनीय सामग्री। **- भारत भूषण गोयल**

मैंने जुलाई और अगस्त माह के दोनों अंक देखे और पढ़े। दोनों ही अंक बेहद सुंदर बन पड़े हैं। कुछ समय से थोड़ी-सी अस्वस्थता के चलते जल्दी लिख नहीं पायी थी। दोनों अंकों में जिन बेहतरीन रचनाओं का चुनाव आपने किया है, उनमें आपके अथक परिश्रम व कार्यकुशलता की झलक मिलती है। सभी सुधी रचनाकारों को बेहतरीन रचनाओं के लिए तहे दिल से मुबारकबाद। **- रवि रश्मि 'अनुभूति'**

यह अंक भी उत्कृष्ट और संग्रहणीय है। 'शान्तिदूत' एवं सभी श्रेष्ठ रचनाओं के लिए हार्दिक बधाई। **- शुभा शुक्ला मिश्र 'अधर'**

जय विजय का अगस्त २०१७ अंक मिला। आभार। समूचा अंक एक सार्थक और सफल सम्पादन का वस्तुनिष्ठ उदाहरण है। बधाई। विशेष रूप से कहानी 'मैट्रिक का रिजल्ट' अच्छी लगी। कहानियों, लघुकथाओं, कविताओं तथा गजलों का चयन अच्छा है। 'हिंसा के लिए सभी गौरक्षक दोषी नहीं' यह लेख अत्यन्त एकांगी लगा। साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्र की गतिविधियों से अवगत कराने के लिए धन्यवाद। **- डॉ संजय जाधव**

हर बार की तरह बहुत ही सुन्दर अंक। **- रमेश कुमार सिंह, भरत मल्होत्रा, कल्पना भट्ट, अल्पना हर्ष, अंजु गुप्ता, सुवर्णा परतानी, संयोगिता शर्मा**

धन्यवाद। **- संजय वर्मा 'दृष्टि', गुलाब चन्द पटेल, राजीव चौधरी, लाल बिहारी लाल, प्रदीप कुमार तिवारी, महेश्वरी कनेरी, अरुण निषाद, बबली सिन्हा, निवेदिता चतुर्वेदी**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

रक्षाबंधन के नाम पर सेक्युलर इतिहास घोटाला

डॉ विवेक आर्य

बचपन में हमें अपने पाठयक्रम में पढ़ाया जाता रहा है कि रक्षाबंधन के त्यौहार पर बहनें अपने भाई को राखी बांधकर उनकी लम्बी आयु की कामना करती हैं। रक्षा बंधन का सबसे प्रचलित उदीहरण चित्तौड़ की रानी कर्णावती और मुगल बादशाह हुमायूँ का दिया जाता है। कहा जाता है कि जब गुजरात के शासक बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर हमला किया तब चित्तौड़ की रानी कर्णावती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को पत्र लिखकर सहायता करने का निवेदन किया। पत्र के साथ रानी ने भाई समझ कर राखी भी भेजी थी। हुमायूँ रानी की रक्षा के लिए आया मगर तब तक देर हो चुकी थी। रानी ने जौहर कर आत्महत्या कर ली थी। इस इतिहास को हिन्दू-मुस्लिम एकता के तौर पर पढ़ाया जाता है।

हमारे देश का इतिहास सेक्युलर इतिहासकारों ने लिखा है। भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद थे, जिन्हें साम्यवादी विचारधारा के नेहरू ने सख्त हिदायत देकर यह कहा था कि जो भी इतिहास पाठयक्रम में शामिल किया जाये उसमें यह न पढ़ाया जाये कि मुस्लिम हमलावरों ने हिन्दू मंदिरों को तोड़ा, हिन्दुओं को जबरन धर्मान्तरित किया और उन पर अनेक अमानुषिक अत्याचार किये। मौलाना ने नेहरू की सलाह को मानते हुए न केवल सत्य इतिहास को छुपाया अपितु उसे विकृत भी कर दिया।

रानी कर्णावती और मुगल बादशाह हुमायूँ के किस्से के साथ भी यही अत्याचार हुआ। जब रानी को पता चला कि बहादुर शाह उस पर हमला करने वाला है तो उसने हुमायूँ को पत्र तो लिखा, मगर हुमायूँ को पत्र लिखे जाने का बहादुर खान को पता चल गया। बहादुर खान ने स्वयं हुमायूँ को पत्र लिखकर इस्लाम की दुहाई दी और उसे एक काफिर की सहायता करने से रोका।

मिरात-ए-सिकंदरी में गुजरात विषय से पृष्ठ संख्या ३८२ पर लिखा मिलता है- "सुल्तान के पत्र का हुमायूँ पर बुरा प्रभाव हुआ। वह आगरे से चित्तौड़ के लिए निकल गया था। अभी वह ग्वालियर ही पहुंचा था। उसे विचार आया, 'सुलतान चित्तौड़ पर हमला करने जा रहा है। अगर मैंने चित्तौड़ की मदद की तो मैं एक प्रकार से एक काफिर की मदद करूँगा। इस्लाम के अनुसार काफिर की मदद करना हराम है। इसलिए देरी करना सबसे सही रहेगा।' यह विचार करके हुमायूँ ग्वालियर में ही रुक गया और आगे नहीं सरका।"

इधर बहादुर शाह ने जब चित्तौड़ को घेर लिया, तो रानी ने पूरी वीरता से उसका सामना किया। हुमायूँ का कोई नामोनिशान नहीं था। अंत में जौहर करने का फैसला हुआ। किले के दरवाजे खोल दिए गए। केसरिया बाना पहनकर पुरुष युद्ध के लिए उतर गए। पीछे से राजपूत औरतें जौहर की आग में कूद गईं। रानी कर्णावती १३ हजार स्त्रियों के साथ जौहर में कूद गई। ३ हजार छोटे बच्चों को कुँए और खाई में फेंक दिया गया, ताकि वे मुसलमानों के हाथ न लगें। कुल मिलाकर ३२ हजार निर्दोष लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

बहादुर शाह किले में लूटपाट कर वापिस चला गया। हुमायूँ चित्तौड़ आया। मगर पूरे एक वर्ष के बाद आया। परन्तु किसलिए आया? अपने वार्षिक लगान को इकठ्ठा करने के लिए। ध्यान दीजिये कि यही हुमायूँ जब शेरशाह सूरी के डर से रेगिस्तान की धूल छानता फिर रहा था। तब उमरकोट सिंध के हिन्दू राजपूत राणा ने हुमायूँ को आश्रय दिया था। यहीं उमरकोट में अकबर का जन्म हुआ था। एक काफिर का आश्रय लेते हुमायूँ को कभी इस्लाम याद नहीं आया। और धिक्कार है ऐसे राणा पर जिसने अपने हिन्दू राजपूत रियासत चित्तौड़ से दगा करने वाले हुमायूँ को आश्रय दिया। अगर हुमायूँ यही रेगिस्तान में मर जाता। तो भारत से मुगलों का अंत तभी हो जाता। आगे चलकर अकबर से लेकर औरंगजेब के अत्याचार हिन्दुओं को न सहने पड़ते।

इरफान हबीब, रोमिला थापर जैसे इतिहासकारों ने इतिहास का केवल विकृतिकरण ही नहीं किया अपितु उसका पूरा बलात्कार ही कर दिया। हुमायूँ द्वारा इस्लाम के नाम पर की गई दगाबाजी को हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे और रक्षाबंधन का नाम दे दिया। इसे हमारे पाठयक्रम में पढ़ा-पढ़ाकर हिन्दू बच्चों को इतना भ्रमित किया गया कि उन्हें कभी सत्य का ज्ञान ही न हो। इसीलिए आज हिन्दुओं के बच्चे दिल्ली में हुमायूँ के मकबरे के दर्शन करने जाते हैं। जहाँ पर गाइड उन्हें हुमायूँ को हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे के प्रतीक के रूप में बताते हैं। ■

हमारे बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं

किरण सिंह

हमारे बुजुर्ग हमारे धरोहर हैं, जिन्होंने अपने सुन्दर घर बगिया को अपने खून पसीने से सींच-सींच कर सजाया है इस आशा से कि कुछ दिनों की मुश्किलों के बाद वे उस बाग में वह सुकून से रह सकेंगे। परन्तु जब उन्हें ही अपनी सुन्दर सी बगिया के छांव से वंचित कर दिया जाता है, तब वे बर्दाश्त नहीं कर पाते और खीझ से इतने चिड़चिड़े हो जाते हैं कि अपनी झल्लाहट घर के लोगों पर बेवजह ही निकालने लगते हैं जिसके परिणामस्वरूप घर के लोग उनसे कतराने लगते हैं। तब बुजुर्ग अपने आप को उपेक्षित महसूस करने लगते हैं। उनके अन्दर नकारात्मक विचार पनपने लगता है। फिर शुरू हो जाती है बुजुर्गों की समस्याएँ।

परन्तु कुछ बुजुर्ग बहुत ही समझदार होते हैं, वे नई पीढ़ी के जीवन शैली के साथ समझौता कर लेते हैं। उनके क्रिया कलापों में टांग नहीं अड़ाते, बल्कि घर के छोटे-मोटे कार्यों में उनकी मदद करके उनके साथ दोस्तों की भांति विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और घर के सभी सदस्यों के हृदय में अपना सर्वोच्च स्थान बना लेते हैं। उनका जीवन खुशहाल रहता है।

बुजुर्गों की समस्याओं का मुख्य कारण एकल परिवार का होना है। जहाँ उनके बेटे-बेटियाँ बाहर कार्यरत रहते हैं, जिनकी दिनचर्या काफी व्यस्त रहती है। उनके यहाँ जाने पर बुजुर्ग कुछ अलग-थलग से पड़ जाते हैं, क्योंकि बेटा और बहू दोनों कार्यरत रहते हैं। वहां की दिनचर्या उनके अनुकूल नहीं होती, जिनमें सामंजस्य स्थापित करना उनके लिए कठिन हो जाता है। इसलिए वे अपने घर और समाज में रहना अधिक पसंद करते हैं। ऐसी स्थिति में कौन दोषी है कहना कठिन है क्योंकि यहां पर परिस्थितियों को ही दोषी ठहराकर हम तसल्ली कर सकते हैं, क्योंकि जो बोया वही काटेंगे।

भौतिक सुखों की चाह में सभी अपने बच्चों को ऐसे रेस का घोड़ा बना रहे हैं जिनका लक्ष्य होता है किसी कीमत पर सिर्फ अमीर बनना। इसलिए उनकी कोमल भावनायें दिल के किसी कोने में दम तोड़ रही होती हैं, बल्कि भावुक लोगों को को वे इमोशनल फूल की संज्ञा तक दे डालते हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए कुछ उपाय किये जा सकते है।

अपार्टमेंट निर्माण के दौरान युवा और बच्चों के सुविधाओं का ध्यान रखने के साथ-साथ बुजुर्गों के सुविधाओं तथा मनोरंजन का भी खयाल रखना चाहिए वहां बुजुर्गों के लिए अपना कम्युनिटी हॉल हो, जहां वे बैठकर बातचीत, भजन कीर्तन, पठन-पाठन आदि कर सकें। साथ ही सरकारी तथा समाजसेवी संस्थानों को भी ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जहां बुजुर्गों की सुरक्षा, सुविधा एवं मनोरंजन का पूर्ण व्यवस्था हो। बुजुर्गों के पास अनुभव बहुत रहता है। सरकार को ऐसी व्यवस्था बनाना चाहिए जहां उनके अनुभवों का सदुपयोग हो सके, जिससे उनकी व्यस्तता बनी रहे।

बुजुर्गों को अपने लिए कुछ पैसे बचाकर रखना चाहिए। सबकुछ अपनी जिंदगी में ही औलाद के नाम नहीं कर देना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर अपनी सेवा-सुश्रुषा दवाइयों आदि में खर्च कर सकें।

जिन्हें अपनी संतान न हो उन्हें किसी भी बच्चे को गोद अवश्य ले लेना चाहिए, क्योंकि जिनके औलाद नहीं होती उनकी सम्पत्ति में हिस्सेदारी लेने तो बहुत से लोग आ जाते हैं परन्तु उनके सेवा सुश्रुषा का कर्तव्य निभाने के लिए बहुत कम लोग ही तैयार होते हैं।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

क्यों हम बेटियों को बचाएँ?

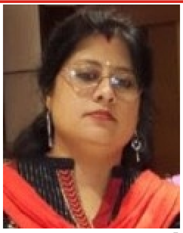

डॉ नीलम महेन्द्र

'मुझे मत पढ़ाओ, मुझे मत बचाओ, मेरी इज्जत अगर नहीं कर सकते, तो मुझे इस दुनिया में ही मत लाओ। मत पूजो मुझे देवी बनाकर तुम, मत कन्या रूप में मुझे 'माँ' का वरदान कहो। अपने अंदर के राक्षस का पहले तुम खुद ही संहार करो।' एक बेटी का दर्द!

चंडीगढ़ की सड़कों पर जो ५ अगस्त की रात हुआ वो देश में पहली बार तो नहीं हुआ। और ऐसा भी नहीं है कि हम इस घटना से सीख लें और यह इस प्रकार की आखिरी घटना ही हो।

बात यह नहीं है कि यह सवाल कहीं नहीं उठ रहे कि रात बारह बजे दो लड़के एक लड़की का पीछा क्यों करते हैं, बल्कि सवाल तो यह उठ रहे हैं कि रात बारह बजे एक लड़की घर के बाहर क्या कर रही थी?

बात यह भी नहीं है कि वे लड़के नशे में धुत्त होकर एक लड़की को परेशान कर रहे थे, बात यह है कि ऐसी घटनाएं इस देश की सड़कों पर आए दिन और आए रात होती रहती हैं।

बात यह नहीं है कि इनमें से अधिकतर घटनाओं का अंत पुलिस स्टेशन पर पीड़ित परिवार द्वारा न्याय के लिए अपनी आवाज उठाने के साथ नहीं होता। बात यह है कि ऐसे अधिकतर मामलों का अन्त पीड़ित परिवार द्वारा घर की चार दीवारी में अपनी जख्मी आत्मा की चीखों को दबाने के साथ होता है।

बात यह नहीं है कि दुनिया के इस सबसे बड़े लोकतंत्र में न्याय के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है, बात यह है कि इस देश में अधिकार भी भीख स्वरूप दिये जाते है।

इस पूरे घटनाक्रम में सबसे बड़ा पहलू यह है कि वर्णिका कुंडु जिन्होंने रिपोर्ट लिखवाई है, एक आईएएस अफसर की बेटी हैं, यानी उनके पिता इस सिस्टम का हिस्सा हैं। जब वे और उनके पिता उन लड़कों के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाने के लिए पुलिस स्टेशन गए थे तब तक उन्हें नहीं पता था कि वे एक राजनैतिक परिवार का सामना करने जा रहे हैं, लेकिन जैसे ही यह भेद खुला कि लड़के किस परिवार से ताल्लुक रखते हैं तो पिता को यह आभास हो गया था कि न्याय की यह लड़ाई कुछ लम्बी और मुश्किल होने वाली है।

उनका अंदेशा सही साबित भी हुआ। न सिर्फ लड़कों को थाने से ही जमानत मिल गई बल्कि एफआईआर में लड़कों के खिलाफ लगी धाराएँ भी बदल कर केस को कमजोर करने की कोशिशें की गईं।

जब उनके साथ यह व्यवहार हो सकता है तो फिर एक आम आदमी इस सिस्टम से क्या अपेक्षा करे? जब एक आईएएस अफ्सर को अपने पिता का फर्ज निभाने में इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है तो एक साधारण पिता क्या उम्मीद करे?

वर्णिका के पिता ने तो आईएएस लाबी से समर्थन जुटा कर इस केस को सिस्टम वर्सिस पालिटिक्स करके इसके रुख को बदलने की कोशिश की है लेकिन एक आम पिता क्या करता?

जब एक लोकतांत्रिक प्रणाली में सत्ताधारी पार्टी के अध्यक्ष का बेटा ऐसा काम करता है, तो वह पार्टी अपने नेता के बचाव में आगे आ जाती है, क्योंकि वह सत्ता तंत्र में विश्वास करती है लोकतंत्र में नहीं, वह तो सत्ता हासिल करने का एक जरिया मात्र है।

उसके नेता यह कहते हैं कि पुत्र की करनी की सजा पिता को नहीं दी जा सकती, तो बिना योग्यता के पिता की राजनैतिक विरासत उसे क्यों दे दी जाती है?

आप अपनी ही पार्टी के प्रधानमंत्री के लाल किले से दिए गए भाषण को भी नकार देते हैं जो कहते हैं कि हम अपनी बेटियों से तो तरह-तरह के सवाल पूछते हैं, उन पर पाबंदियां भी लगाते हैं लेकिन कभी बेटे से कोई सवाल कर लेते, कुछ संस्कारों के बीज उनमें डाल देते, कुछ लगाम बेटों पर लगा देते तो बेटियों पर बंदिशें नहीं लगानी पड़तीं।

यह कैसा लोकतंत्र है जिसमें सरकार अपने नागरिकों की सुरक्षा से ऊपर अपने नेताओं और स्वार्थों को रखती है? यह कैसी व्यवस्था है जहाँ अपने अधिकारों की बात करना एक हिम्मत का काम कहा जाता है। हम एक ऐसा देश क्यों नहीं बना सकते जहाँ हमारी बेटियाँ भी बेटों की तरह आजादी से जी पाएँ?

हम अपने भूतपूर्व सांसदों, विधायकों, नेताओं को आजीवन सुविधाएं दे सकते हैं, लेकिन अपने नागरिकों को सुरक्षा नहीं दे सकते। हम नेताओं को अपने ही देश में अपने ही क्षेत्र में जेड प्लस सेक्यूरिटी दे सकते हैं लेकिन अपनी बेटियों को सुरक्षा तो छोड़िये न्याय भी नहीं दे सकते?

देश निर्भया कांड को भूला नहीं हैं और न ही इस सच्चाई से अनजान है कि हर रोज कहीं न कहीं कोई न कोई बेटी किसी न किसी अन्याय का शिकार हो रही है।

उस दस साल की मासूम और उसके माता पिता का दर्द कौन समझ सकता है जो किसी और की हैवानियत का बोझ इस अबोध उम्र में उठाने के लिए मजबूर है। जिसकी खिलौनों से खेलने की उम्र थी वो खुद किसी अपने के ही हाथ का खिलौना बन गई। जिसकी हँसने खिलखिलाने की उम्र थी वह आज दर्द से कराह रही है। जो स्वयं एक बच्ची है लेकिन माँ बनने के लिए मजबूर है।

क्यों हम बेटियों को बचाएँ? इन हैवानों के लिए? हम अपने बेटों को क्यों नहीं सभ्यता और संस्कारों का पाठ पढ़ाएँ? बेहतर यह होगा कि पहले बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के बजाय बेटों को सिखाओ! बेटी बचानी है तो पहले बेटों को सभ्यता और संस्कारों का पाठ पढ़ाओ। उन्हें बेटियों की इज्जत करना तो सिखाओ। ■

चोट लगने पर प्राकृतिक चिकित्सा

विजय कुमार सिंघल

कई बार हमें घर पर या बाहर चोट लग जाती है। कभी-कभी खून भी निकलने लगता है। ऐसी स्थितियों में आप सफलता से घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा स्वयं कर सकते हैं और न्यूनतम समय में स्वस्थ हो सकते हैं। चोट लगने पर सबसे पहले यह देखिये कि शरीर के किस भाग में चोट लगी है और वहाँ खून निकल रहा है या नहीं। यदि खून न निकल रहा हो, तो चोट वाले स्थान पर तत्काल बर्फ का टुकड़ा लगाना चाहिए। यदि बर्फ तत्काल उपलब्ध न हो तो उस स्थान को ठंडे पानी से धोना चाहिए।

यदि ऐसे अंग में चोट लगी हो जिसे पानी में डुबोया जा सकता है, जैसे हाथ और पैर, तो तुरन्त उसको ठंडे पानी में डुबो देना चाहिए। ऐसा करने पर ८० प्रतिशत मामलों में दर्द से तुरन्त राहत मिल जाती है। यदि ठंडे पानी में डुबोने और बर्फ लगाने पर भी दर्द से आराम न मिल रहा हो, तो वहाँ हेयरलाइन फ्रैक्चर हो सकता है। ऐसी स्थिति में उस स्थान का एक्सरे कराना चाहिए और पट्टी बँधवा लेनी चाहिए। लगभग १५ दिनों में ऐसा फ्रैक्चर अपने आप जुड़ जाता है। यदि फ्रैक्चर बड़ा है, तो डॉक्टर की सलाह पर चलना चाहिए।

अगर चोट लगने पर खून निकल रहा है, तो यह देखिये कि कितना खून निकल रहा है। यदि मामूली खरोंच आदि हो तो उस स्थान को ठंडे पानी से धोकर पहले वहाँ फिटकरी का टुकड़ा मलना चाहिए। इससे खून निकलना बन्द हो जाता है। फिर वहाँ बर्फ लगानी चाहिए या ठंडे पानी से गीली रुई बाँध लेनी चाहिए। रुई को ठंडे पानी से तर करते रहना चाहिए। ऐसा करने से दो-तीन दिन में ही आराम मिल जाता है। मरहम पट्टी कराने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि घाव अधिक न हो, परन्तु खून अधिक निकल रहा हो और फिटकरी लगाने से भी बन्द न हो रहा हो, तो उस स्थान पर गोमूत्र या पुराने स्वमूत्र में भीगी रुई बाँध लेनी चाहिए। ऐसा करने से खून निकलना बंद हो जाएगा और घाव जल्दी भर जाएगा। यदि गोमूत्र और पुराने स्वमूत्र का भी प्रबंध तुरन्त न हो सके, तो तब तक वहाँ ठंडे पानी में भीगी रुई लगाकर कसकर बाँध देना चाहिए।

बड़ा घाव होने पर या बहुत अधिक खून निकलने पर किसी अस्पताल में जाकर उचित मरहम पट्टी करा लेनी चाहिए और उनकी सलाह का पालन करना चाहिए। ■

मुझे अस्तित्व ने परखा बहुत है
कि मैंने भी उसे सोचा बहुत है
उसी का जिक्र करती हैं ये साँसें
महकता भी वो खुशबू सा बहुत है
मेरी जानिब वो झाँके कनखियों से
मेरे हिस्से में बस इतना बहुत है
मिलेगा वो अगर पहचान लेगा
कि उसने तो मुझे देखा बहुत है
हम उसके पास जिद करके चलेंगे
सुना है 'शान्त' वो तनहा बहुत है

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

उठाकर चल दिये सपने, बड़े अरमान आँखों में
ठिठककर पग बढ़े आगे, डगर अंजान आँखों में
दिखी मूरत तुम्हारी तो, न मन विश्वास रख पाया
मिरे तो बोझिल हैं कंधे, कहाँ दिनमान आँखों में
खिली है चाँदनी पथ पर, उगी सूरत विराने नभ
डराकर बढ़ रही मंजिल, सड़क सुनसान आँखों में
करिश्मा हो गया कोई, महेर मुझ दीवाने पर
परी है आ गई उड़कर, नहीं गूमान आँखों में
उड़े जो आ रहे बादल, कहीं घिर जाए न मैना
फुदककर गा रही बुलबुल, जगी पहचान आँखों में
बड़े सुंदर तिरे नैना, नक्श नजरों का क्या कहना
कयामत ढा रहीं पलकें, ललक विद्यमान आँखों में
मिलूँ कैसे तुझे गौतम, न उड़ना सीख पाया हूँ
न मेरे पास पर कोई, नया यजमान आँखों में

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

नए चेहरों की कुछ दरकार है क्या
बदलनी अब तुम्हें सरकार है क्या
बड़ी मुश्किल से रोजी मिल सकी है
किया तुमने कोई उपकार है क्या
सुना मासूम की सांसें बिकी हैं
तुम्हारा यह नया व्यापार है क्या
इलेक्शन लड़ गए तुम जात कहकर
तुम्हारी बात का आधार है क्या
यहां पर जिस्म फिर नोचा गया है
यहां भी भेड़िया खूंखार है क्या
बड़ी शिद्दत से मुझको पढ़ रहे हो
मेरा चेहरा कोई अखबार है क्या
हिजाबों में खरीदारों की रौनक
गली में खुल गया बाजार है क्या
बहुत दिन से कसीदे लिख रहे हैं
कलम में आपके भी धार है क्या
कदम उसके जमीं पर अब नहीं हैं
हुआ कुछ चांद का दीदार है क्या
तबस्सुम पर तेरे हैरत हुई है
गमों की हो गयी भरमार है क्या
महज मजहब मेरा पूछा था उसने
कहा तू देश का गद्दार है क्या

-- नवीन मणि त्रिपाठी

हम उजाले का सफर तय इस तरह करते रहे
धूप में उगते रहे, खिलते रहे, तपते रहे
घिर गयी संवेदना जब भीड़ आहों की बढ़ी
बंद कमरे में अकेले गीत हम रचते रहे
आदमी के रूप में अनुभूति क्यों इतनी मिली
अश्रु से अपने नयन की ष्टि हम धुलते रहे
जिंदगी में कुछ न कुछ आवारगी भी चाहिए
गम-खुशी के द्वन्द्व में जो पड़ गये पिसते रहे
फूल हैं, काँटे भी हैं, शीशे भी हैं, पत्थर भी हैं
पाँव भी बढ़ते रहे, पथ भी नये बनते रहे
गीत, कविता या गजल केवल बहाना दोस्तो
आदमी से, आदमी की बात हम करते रहे

-- डॉ डी एम मिश्र

हुआ क्या है तुझे चेहरा बुझा क्यों है
हँसी उल्लास सबकुछ अब लुटा क्यों है?
नयन कुछ आज कहता और दिल कुछ और
सच बता आज तू इतना डरा क्यों है
कभी मिलता नहीं है आचरण, आदत
यही क्या सोचती वो बेवफा क्यों है?
जरा दिल से बता तू सोच कर मुझको
हमारे बीच में ये फासला क्यों है?
मुहब्बत ही तो जीवन सार है जग में
जवाँ दिल को यही करना मना क्यों है?
मुहब्बत से अगर जीना ही जीवन है
मुहब्बत की सजा जग में कजा क्यों है
मिलाया है नजर से जब नजर 'प्रसाद'
दिलों का राज परदे में छुपा क्यों है?

-- कालीपद 'प्रसाद'

भले कुछ कह रहे हो तुम सियासत और ही कुछ है
तुम्हारी हर हकीकत की हकीकत और ही कुछ है
मुहब्बत तुम करोगे सोचकर हैरान हूँ बेहद
मुझे पक्का यकीं है ये शरारत और ही कुछ है
बनाए और तोड़े है कई रिश्ते कई नाते
तुम्हारी दोस्तों से यार चाहत और ही कुछ है
नये किस्से नये सपने कहानी है नयी हर सब
बताते और हो पर यार हसरत और ही कुछ है
धरम के नाम पर बस ढ़ोंग केवल ढ़ोंग करते हो
बताते हो जिसे रब की इबादत और ही कुछ है
लगाकर टोपियाँ कोई दुशाला ओढ़कर निकला
दिखावा बंदगी का है हकीकत और ही कुछ है
मुसलमां सिख इसाई पारसी हिन्दू नहीं मुजरिम
कहूँ सच देश की असली मुसीबत और ही कुछ है

-- सतीश बंसल

तू भी मेरी तरह ही गलती का पुतला निकला
मैंने समझा था तुझे क्या और तू क्या निकला
तमाम शहर के अबरू पे तब शिकन आई
मैं जब कभी भी ढूँढने तेरा पता निकला
आज छोड़ा जो आसमां में तो ये राज खुला
बाज दिखता था जो हमको वो फाख्ता निकला
नहीं कसूर किसी का मेरी तबाही में
मेरा नसीब ही मुझसे खफा-खफा निकला
मैं क्यों ना जीता-जागता खुदा कहूँ माँ को
इसी के पैरों से जन्नत का रास्ता निकला

-- भरत मल्होत्रा

दास्ताँ दर्दे दिल की सुनाते रहे
वो हमें देखकर मुस्कराते रहे
टूट करके बिखरने से क्या फायदा
ये गलत है उन्हें हम सिखाते रहे
जब कभी देखा गमगीन मैंने उन्हें
आँख में अश्क अपने छुपाते रहे
हम शिकायत करें भी तो किससे करें
जब खुदा खुद ही मुझको सताते रहे
याद में हम उन्हीं के तो शायर बने
गा सके ना गजल गुनगुनाते रहे
'बेखबर' को खबर हर पलों की जो थी
इन पलों में वो सपने सजाते रहे

-- बेखबर देहलवी

मातृभूमि पर शीश झुकाऊं, ये गगन ओढ़ लूं आज
एक तिरंगा बदन लपेटूं, अपना वतन ओढ़ लूं आज
अम्नो-अमान हो फिर से कायम गर वादियां महक उठे
काश्मीर की केशर क्यारी अपने बदन ओढ़ लूं आज
तुलसी, सूर, मीरा, कबीर, गालिब, फिराक, रसखान
एक की गजल मैं गाऊं, एक के भजन ओढ़ लूं आज
आजादी के मतवालों की अब राह सभी को चलना है
जन-जन के मन में अलख जगे, ये लगन ओढ़ लूं आज
जीवन की अंतिम सांस अपनी कर दूं देश पर अर्पण
मिट जाने का जज्बा लेकर इक कफन ओढ़ लूं आज

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

भरे नीर से नैन हारे कहाँ हैं
मिरी आँखों के वो सहारे कहाँ हैं
बढ़े साथ पाये पनाहे कहाँ हैं
जले नभ सितारे नजारे कहाँ हैं
चलो भूल दुनिया निहारें नया सा
कहीं आस बढ़िया पुकारे कहाँ हैं
अगर गुम हुए हैं रहे जो हमारे
उदासी सुनाती इशारे कहाँ हैं
मिरे हिस्से के सारे नजारे कहाँ हैं
मुकद्दर के मेरे सितारे कहाँ हैं

-- रेखा मोहन

दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है

आनन्द अजय

जेठ की दुपहरी, पुरवईया हवा, पछिया हवा के साथ संघर्ष करती हुई, मालदह, कृष्णभोग और बमई आम-महुआ मादक गंध लिए चहुंओर घूम रही है। कोयल की कूक से वातावरण गुंजायमान है। गरमी देख के तो सुमित्रा चाची सूरज भगवान से बतिया रही है, काहे सनक गए है सूरुज देव, अंगना में से दुहारी पर निकलते-निकलते गोर जल के राख हो गया, उफर पड़ो ई गरमी के, हमरो अंग-अंग घमौरी पीट दिया है। उ नाईसिल के हरियर का डिब्बा वाला पाउडर प्रमोदबा के दुकान से मंगवाए हैं, दिन में ४ बार छीटते हैं। जीना हराम हो गया है, मेघ बूनी भी न आ रहा है।

तभी बगल में चबूतरे पर ताश खेल रहे और लाल पान की बीबी पटकते हुए सरयू बाबा बोले हैं- ये भउजी केतना अधर्म बढ़ गया है, न देख रहे हैं, परसों उ पड़ोस गांव में बारिश हुआ, ईहां नहीं हुआ, कभी सुरूज देव गर्माते हैं तो कभी शेषनाग फन हिला के भूकंप करवा देते हैं। धरती के विनाश तो अब निश्चित है, आ गीता में भी कहा गया है- 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत...' मतलब ऐतना अधर्म बढ़ गया है अब तो भगवान पक्का आएंगे।

तभी ताश खेल रहे हमउम्र के वैद्यनाथ बाबा ने कहा है, 'चल सरयू ज्यादा आध्यात्मिक ज्ञान मत पेल, चुपचाप खेल, बहुते ज्ञान ठेल रहा है। खुद भोरे-भोरे सुंदरकाड और बजरंग बाण पढ़ता है, आ सांझ होते दूसरे के खेत से जई, जनेरा काट लेता है। कहियो बजरंग बली तुम्हरे देहिया पर ही गदा बजारेंगे।' सरयू बाबा तो जर के झरिया के कोयला हो गए हैं, उपस्थित सभी लोगों ने जोरदार ठहाका लगाया है।

गरमी के प्रकोप का क्या कहना? लग रहा कि सूर्य देव खुद पृथ्वी पर आकर ही नाभिकीय संलयन करेंगे। २ बजते-बजते और गरमा गए हैं, रोड के किनारे लगे आम के वृक्ष और उसके नीचे कहीं दूर से मोटर-साईकिल चलाकर पसीना से भीगा हुआ पथिक ठहरा है। तभी पास के मरईयै में आम की रखवाली कर रहे किसान उतरकर उस अंजान बाबू के लिए एक लोटा पानी लेकर के आया है। बाबू साहेब थोड़ा ठंडा लीजिए, फिर पानी पी लीजिएगा। तभी थोड़ी देर में ही गच्छपक्कू मालदह रस से भरा हुआ गिरता है। 'ई अमबा भी खा लीजिए बाबू भूखे होंगे।' मोटरसाईकिल वाला बाबू भी इस आवभगत को स्वीकार करने में परहेज नहीं करता।

आज उतरवारी टोले रामकृपाल सिंह की तीसरी बिटिया का विवाह है, डीजे बज रहा है, आवाज पूरे गांव में गूंज रही है। जबसे रामकृपाल सिंह की गईया सुमित्रा चाची के खेत में चर गई थी तब से सुमित्रा चाची से छतीस का आंकड़ा रहता है, लेकिन नेवता मिला है। कल तक तो चाची कह रही थी कि मरला जिनगी रामकृपलबा के दुहारी पर न जाएंगे। लेकिन आज भोरे-भोरे ललका साड़ी निकाली है, शिल्पी छाप बिंदी और गणेश पौरंगा से पैर रंग के सजबज के तैयार हो गयी है भोरे-भोरे। उनके पति ने पूछा अचानके काहे विचार बदल गया? चाची बोली है कि झगड़ा हमरा और रमकृपलबा के बीच है। रउआ देखी, बेटी सांझी होती है, पूरे गांव की होती है, आ पहिलकी दूनू बेटी के बियाह में हमहीं गीत गाएं थे, तब जाके माहौल जमका था। ऐह बेर में न जाएं हो न सकता। गांव का स्वभाव ही ऐसा होता है, हर व्यक्ति एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। जन्म हो मृत्यु हो सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हम कितना भी आपस में झगड़ लें, लेकिन हम सब एक ही हैं। बिना किसी के कोई काम नहीं चलता है, उन्हें और कुछ नहीं चाहिए वो बस प्यार के वाहक है।

शाम हुआ बारात आने को है, गांव के लौंडे सब तो दूल्हे की गाड़ी को निहार रहे हैं। दूल्हा दक्षिण भारत के किसी कालेज से इंजीनियरिंग किया था, गुड़गाँव में काम कर रहा है। एक बात है, विवाह के दिन दूल्हा का पावर सम्राट समुद्रगुप्त से कम नहीं होता है, जो बोल दिया सो बोल दिया, मतलब ब्रह्मवाक्य! एकदमे अईसन फीलिंग लेता है कि समुद्रगुप्त जी दक्षिणापथ विजय के लिए निकले हैं। कनपटा के पास लंबी चौड़ी पट्टी रखे लईका का भाई शेरवानी पहने उतरा है। पहले उतरकर दूल्हा के दरवाजे को खोला है, दूल्हा बाबू शान से महाराजा वाली फीलिंग लेते हुए नीचे लैंड किए हैं। गांव के कुत्ते सब भी माहौल में है, अलग सी ईनर्जी दौड़ गई है उनमें। पता न कौन उनको खबर किया है कि इधर दूल्हाबाबू आ रहे हैं।

गोद में उठाकर दूल्हा बाबू को सरकारी स्कूल के दोमंजिले पर लैंड करवाया गया है, कायदे से तो स्कूल को सरकार ने केवल बारात ठहराने के लिए ही बनवाया है। शिक्षकों के अभाव के कारण पढ़ाई तो होती नहीं है। बारात में दो-चार अप्सराएं भी आई हैं, दूल्हा की कजिन हैं। गांव के लौंडे तो बस उन्हें ही निहारे जा रहे हैं, ललनमा तो झट से पेप्सी बोतल लेकर पहुंचा है, लीजिए महराज लजाइए नहीं, अपना ही घर समझिए। एक मोहतरमा ने गिलास लिया है और पेप्सी पीते वक्त इस बात का पूरा ख्याल रख रही है कि लिपस्टिक गड़बड़ा न जाए। सोनुआ तो फेसबुक निकालकर सर्च कर रहा और People you may know पर खोज रहा है कि कहीं भेंटा गई तो झट से फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज देंगे।

उधर दूल्हे के जीजाजी, जो वरपक्ष को लीड कर रहे हैं, रामकृपाल बाबू को खोज रहे हैं। दहेज का अढ़ाई लाख रुपया बाकी रह गया था। रामकृपाल बाबू पता न कहां गायब हैं। शिवम वस्त्रालय वाला ललका पालीथिन लिये सुपरसोनिक वेग से भागते हुए रामकृपाल बाबू आए हैं। उत्क्रमित विद्यालय की नीचे वाले फ्लोर की बिल्डिंग के कोने वाले कमरे में दोनों पक्ष से दो-दो आदमी कमरे अंदर गया है। कुल खुदरा जोड़-जाड़ कर रामकृपाल बाबू ने १ लाख ७० हजार रूपया इकट्ठा कर दिया है। वर पक्ष की ओर से आए दूल्हे के जीजाजी भड़क गए, 'अईसे कैसे काम चलेगा, महराज आप खुद बोले थे, अढ़ाई लाख अभी बाकी है। उ बैंड बाजा वाला को देना है, गाड़ी वाला को देना है। हम तो उसको कहे थे कि चलो वहीं देते हैं, और आप कह रहे हैं कि नहीं होगा, जबान को कोई वैल्यूए नहीं है? आधा घंटा में अरेंज कीजिए, नहीं तो बारात आगे नहीं बढ़ेगा।

उन्होंने कहा है कि हम परसों तक दे देंगे, नदी किनारे वाला पंचकठवा खेत बेचे थे न तब ये जुगाड़ हुआ है, और पैसा कल तक हो जाएगा। आप टेंसन मत लीजिए, हम परसों तक आपके दरवाजे पर पहुंचा देंगे। वर पक्ष मानने को तैयार नहीं है, 'नहीं, नहीं और कुछो नहीं चलेगा' बोलते हुए दूल्हे के जीजाजी भागकर निकले हैं। पसीना से तर रामकृपाल बाबू वहां से भागकर आए हैं। दरवाजे पर लगे साउंड बॉक्स में गाना बज रहा है कि 'दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है, दुल्हन का तो दिल दीवाना लगता है...'।

रात के १० बजने को हैं, चहुंओर खुशी छायी हुई है। सब विवाह का आनंद ले रहे हैं। उधर बैंड बाजा भी अंधाधुंध बज रहा है, बारातियन सब तो नागिन डांस कर रहा है। बारात में आए सबसे निठल्ले लौंडे पर जिम्मेवारी है कि वो पटाखा उड़ाए। तड़ातड़ आवाज से माहौल बना हुआ, सब खुश हैं। बस रामकृपाल बाबू सैकड़ों की भीड़ में अकेला महसूस कर रहे हैं। उनके पास कोई विकल्प नहीं है, पसीना से भीगते हुए भागकर पत्नी के पास आए हैं। सारी व्यथा उनको सुनाने के पश्चात् पत्नी तो रोने लगी है, सारे रिश्तेदारों में कानाफूसी होने लगी है। दुल्हन भी अब रो रही है।

दूर बैठी सुमित्रा चाची के कान में भनक लगी है कि पैसों के कारण बारात जाने को है। खाली पैर भागकर वो घर गयी है, 'गेट खोलिए गोलूआ के पापा उ अलमरिया के चाभी दीजिए त', पति बिनोद बाबू ने पूछा है- ई समय का करोगे चाभी लेकर? 'अरे दीजिए न ऐसे कैसे दरवाजा पर से बारात चल जतई, उ हमर बेटी नई है, जमीन जत्था अगला बेरी खरीदतई' अलमारी से पिछले दो वर्ष की जमा की गई पूंजी को निकालकर रामकृपाल सिंह के घर पहुंच गई है, और बोली है- लीजिए और जाके मुंह पर फेंक के मारिए ई पैसा को, पास खड़े सभी की आंखें आंसू से नम हैं।

नम आंखों से रामकृपाल बाबू पहुंचे हैं फिर उत्क्रमित विद्यालय में, जहां इस बार उचित डील होगा। एक-एक कर ८० हजार रुपया गिन दिए हैं। सबके चेहरे पर फिर से कुटिल मुस्कान लौट आयी है। बैंडबाजे की ध्वनि और तेज हो गई है, दूल्हा बाबू भी अब सजने लगे हैं। रामकृपाल बाबू अब लौटकर दरवाजे पर आएं हैं। दरवाजे पर बज रहे डीजे से आवाज आ रही है- 'दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है...!' ■

(दूसरा और अंतिम भाग)

भारतीय लिपियों का मिश्रित विकास

नरेन्द्र परिहार

(९) **ग्रंथ लिपि-** छठी शताब्दी में ब्राह्मण संस्कृत में ग्रंथों के लिखना चाहते थे, पर तामिल लिपि में संस्कृत भाषा के उच्चारणार्थ वर्ण नहीं थे, इसलिए इसे ग्रंथ लिपि कहा गया।

(१०) **पश्चिमी लिपि-** छठी शताब्दी में गुप्तवंश के पतन के कारण प्रांतपति शनैः शनैः स्वतंत्र होने लगे। दो शाखाएँ बनी (अ) कठियावाद-नरेश द्रोण ५०६ से ५२५ ई. (ब) पश्चिमी मालवा-नरेश शिलादित्य- इस लिपि में दो ताम्र दान पत्र जिनमें ३६ पंक्तियाँ उत्कीर्ण थी, यह ध्रुवसेन द्वितीय ने ई. ५३६ से ५६७ में उत्कीर्ण करवाये।

(११) **कन्नड़ लिपि-** कदम्ब वृक्ष को पूजने वाले ब्राह्मण ने कदम्ब वंश की नींव डाली। इस लिपि का विकास चालुक्य राजाओं द्वारा सातवीं शताब्दी में हुआ। बारहवीं शताब्दी तक कन्नड़ व तेलगु भाषा का प्रयोग इस लिपि में हुआ जो तेरहवीं शताब्दी से पृथक हो गया।

(१२) **तेलगु लिपि-** पहले कन्नड़ लिपि का ही प्रयोग हुआ। ११वीं शताब्दी से पृथक होते-होते १३वीं शताब्दी में पृथक लिपि हुई, जिसका विकास दक्षिणी ब्राह्मी द्वारा हुआ।

(१३) **बंगला लिपि-** सामन्त सेन मूलरूप से मैसूर कर्नाटक के मूल निवासी थे। वे जन्म से ब्राह्मण व कर्म से क्षत्रिय थे, सेन वंश था। ई. १०६५ से ११५८ तक इन्होंने तथा पुत्रों हेमंत व विजयसेन ने राज्य का विस्तार कामरूप, तिरहुत, कलिंग तक किया। ये शैव धर्म के अनुयायी थे। कामरूप की बंगला लिपि पौराणिक काल पूर्वकाल (३०० से १३०० ई.) अहोन काल (१३०० से १८०० ई.), आधुनिक काल (१८२६ से अब तक) पुण्यवर्णन, मलेच्छों व सेन वंश में प्रसार हुआ। यह लिपि ११वीं शताब्दी में देवनागरी लिपि में विकसित हुई।

(१४) **उड़िया लिपि-** चोल सम्राट से वज्रहस्त पंचम ने स्वतंत्र किया (१०३८-१०६० ई.) अनन्त वर्मन (गंगवंश) ने जगन्नाथ पुरी मंदिर का निर्माण किया। इस पर तेलगु व संस्कृति का प्रभाव था जो गंगा से कावेरी तक पंद्रहवी शताब्दी में कपिलेन्द्र वंश तक चला, जिसे मुगलों ने परास्त किया।

(१५) **शारदा लिपि-** कश्मीर की देवी शारदा के नाम पर ब्राह्मी से कुटिल लिपि द्वारा उद्भव हुआ जिसका १०वीं शताब्दी में चम्बा, कश्मीर, पंजाब में चलन रहा, जिसे अब देवनागरी व उर्दू ने ले लिया।

(१६) **मौड़ी लिपि-** शिवाजी के शासनकाल में बीजापुर किले को आधीन किया गया। इस काल में अक्षरों को मोड़कर लिखा जाता है, इसलिए इसे मौड़ी लिपि कहते हैं।

(१७) **उत्तर-पूर्व मध्यकालीन लिपियाँ-** (अ) मैथिल- मिथिला के ब्राह्मणों द्वारा, जो १५वीं शताब्दी में देवनागरी द्वारा विकसित हुई (ब) तिरहुतिया- १६वीं शताब्दी के बिहार के चम्पारण, दरभंगा, मुजफ्फरपुर में विकसित हुई। (स) **भोजपुरी-** १५वीं शताब्दी में बिहार के चम्पारण व सारण जिले में। (ड) मागधी- मगधी भी कहते हैं। गया व पटना जिलों में विकसित हुई। (क) **कैथी-** कायस्थों द्वारा १५वीं शताब्दी में दिखी, जिसमें शिरोरेखा नहीं होती। (ख) **अहोम-** थाई जाति की उपजाति १२२८ में असम पर आक्रमण कर वहीं बस गयी। १६४५ में हिंदु धर्म की दीक्षा ली। अठारहवीं शताब्दी में ब्राह्मणों ने इस जाति को परास्त किया, जिन्हें १८२४ में अँग्रेजों ने परास्त किया। इस लिपि का १४वीं शताब्दी में आविष्कार हुआ और १६२० में लोप हो गयी। (ग) **खाम्बी-** थाई की उपजाति अहोम के साथ आकर भारत में बसे। १५वीं शताब्दी में लिपि बनाई, १६वीं शताब्दी में देवनागरी में विकास हुआ, बीसवीं सदी के चौथे दशक में लोप हो गयी। (घ) **मेई-थेई लिपि-** मणिपुर जिसका इतिहास १७१४ में ज्ञात हुआ। इसे १६२५ में ब्रह्मा ने जीत लिया बाद में इन पर अँग्रेजों का शासन था, जिसे १६४८ में भारत ने जीत लिया। प्राचीन में मणिपुर को मेई-थेई कहते थे। भाषा कुकीचिन (बंगला व बर्मी) थी, इसका अर्थ है पहाड़ी जातियाँ। यहाँ सारा व्यापार स्त्रियाँ करती थीं। ये स्वयं को अर्जुन के वंशज मानते थे। इनका विकास बंगला द्वारा १७०० ई. में हुआ।

(१८) **उत्तर-पश्चिम की मध्यकालीन लिपियाँ** (अ) **उर्दू-** इसे लश्करी जुबान यानी सेना की भाषा, तुर्की में उर्दू का अर्थ है सैनिक पड़ाव। इसका अरबी-फारसी भारतीय भाषा के मिश्रण से जन्म हुआ। १४वीं शताब्दी में अरबी के २८ अक्षर, फारसी के ४ अक्षर (पे, चे, झाल, गाफ) जोड़े, ५ चिह्न जोड़ ३७ शब्द उर्दू लिपि में बने। कश्मीर सहित समस्त उत्तर भारत की भाषा है। (ब) **अरबी सिन्धी लिपि-** आठवीं शताब्दी में सिंध के निवासियों द्वारा अरबी का प्रयोगात्मक रूप बना, लिपि का नाम अरबी-सिंधु पड़ा जो बीसवीं शताब्दी में पृथक हो गयी। अरबी के २८ चिह्न के साथ २४ चिह्न का आविष्कार कर ५२ चिह्न हो गये। (स) **बनियाकार लिपि-** सिंध के महाजन व्यापारी ने लेखा-जोखा गुप्त रखने के लिए आविष्कार किया। इस लिपि में भी शिरोरेखा का प्रयोग नहीं होता था। यह ३० अक्षर की भाषा है, जो १७ वीं शताब्दी में दिखी। (ड) **हिंदी सिंधी लिपि-** ब्राह्मणों ने अरबी से अलग रखने के लिए इस लिपि का विकास किया। १५वीं शताब्दी में विकास हुआ।

(क) **टाकरी लिपि-** यह शारदा लिपि का घसीट रूप है, टाकरी शब्द (ठाकुर) भगवान से बना है, इसका प्रयोग कश्मीर से डोंगरों द्वारा चम्बा व हिमाचल भूभाग में था। (ख) **लाण्डा लिपि-** १५ वीं शताब्दी में अपभ्रंश प्राकृत भाषा वृच्छा से हुआ। १८६८ में इसमें संशोधन हुआ इसे जाटकी (जाटों की), हिंदु की (हिंदुओं की) भी कहते थे। इसका प्रयोग सिंध, मुल्तान व सारे पंजाब में हुआ। (ग) **गुरुमुखी लिपि-** गुरुमुख से निकली भाषा, उपनाम पंजाबी। धर्मगुरु श्री अंगद ने इसका आविष्कार किया। शारदा व लाण्डा लिपि के वर्णों द्वारा इसका आविष्कार हुआ। १६ वीं शताब्दी में मुसलमान आये तो फारसी भाषा की ध्वनियाँ लाये। गुरुमुखी ने नीचे नुक्ता लगाकर इसका उच्चारण कर लिया जो उर्दू व फारसी की तरह ही पंजाबी में भी संयुक्त वर्ण नहीं होते।

(१९) **आधुनिक लिपियाँ** (अ) **मलयालम लिपि-** ग्रंथ लिपि का घसीट रूप है, दसवीं शताब्दी में केरल प्रांत (ब) **तुळु लिपि-** इसका उद्भव मलयालम लिपि से, प्रयोग कन्नड़ प्रांत के कुर्म में हुआ, बाद में कन्नड़ लिपि बनी। (स) **उड़िया लिपि-** इसका उद्भव देवनागरी व बंगला द्वारा हुआ, प्रांत उड़ीसा। (ड) **गुजराती-** १७वीं शताब्दी में देवनागरी से इस लिपि का विकास हुआ। इसमें भी शिरो रेखा नहीं होती।

(२०) **देवनागरी लिपि-** इसका जन्म भारत के दक्षिण में हुआ। इसका विकास उत्तर में गुप्त लिपि व कुटिल लिपि द्वारा हुआ। यह महाराष्ट्र से बिहार तक फैलाव लिये हुए है। यह आठवीं शताब्दी में राजा दन्ति दुर्ग द्वितीय (७४७ से ७५३ ईसवी) दक्षिण राज्य में तीन ताम्रदान पत्रों पर अंकित है। समनगढ़ के पहाड़ी दर्ग वेलगांव से ४० कि.मी. दूर कोल्हापुर, पहले इसका नाम नन्दी नागरी था, जो यह नगर बैंगलूर से ५८ कि.मी. उत्तर में था। दसवीं शताब्दी में और फैलाव लिये १२वीं शताब्दी में विकसित हुई। इस शताब्दी में शिरोरेखा का प्रयोग होने लगा। इसमें स्वर बढ़ गये। यह १५वीं शताब्दी में पूर्ण विकसित हुई। इसे कल्पित नाम गुजरात के नागर ब्राह्मणों (देव) के कारण देवनागरी कहलाई। इसमें जो लिखा वही पढ़ा जाता है, वर्ण मूक नहीं होते, एक चिह्न एक ध्वनि देता है। भारत ही नहीं विश्व की सभी भाषाओं को व्यक्त करने का इसमें साहस है वहीं निरर्थक शब्द शिरोरेखा से जटिल तथा गतिरोधक है, अक्षर अधिक जगह घेरते हैं आदि देवनागरी में सरलता की ओर कई संशोधन व प्रयोग हो रहे हैं। इससे लिपि का भविष्य सुधरेगा, पर भूत बिगड़ेगा और इसके प्रसार से कई लिपियाँ अपना अस्तित्व भूल काल का ग्रास बन रही हैं, बन जायेंगी।

मानव जाति जिज्ञासु, परिवर्तनशील व सरलता की ओर अग्रसर रहती है। भविष्य में हो सकता है नयी भाषा या लिपि का उद्भव हो, परंतु प्रमाण प्राप्त हुए लिपियों को नकारा नहीं जा सकता और साथ में इस सत्य को आज स्वीकार करना होगा। भारतीय भाषाओं का विस्तार व विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ। भाषा कोई भी हो लिपि प्रमाण बनती है। (समाप्त)

कुछ तो हो रहा/दिल में एहसास ऐसा
जैसे हुआ था/पहली मुहब्बत का
पर तुम मेरा प्यार नहीं/फिर भी दिल
तुम्हारी ओर खिंचता जा रहा
अजीब राहों पर चक पड़ा है दिल
प्यार मुकम्मल है मेरा
फिर नए रास्ते तलाशता है
ये दिल की ख्वाइशें भी/बड़ी शरारती हैं
न जाने क्यों एक बार फिर से/मुहब्बत चाहती हैं
ऐ नासमझ दिल/समझ इस बात को
प्यार एकबार होता है बार-बार नहीं!
इसके बाद सभी दिल्लगी है!

-- बबली सिन्हा

कुछ अपने अरमान दबा कर
कुछ अपने जज्बात छिपा कर
कुछ उनके अहसान उठा कर
कुछ अपना वक्त बिता कर
कुछ सुन कर कुछ सुना कर
कुछ उनकी खतायें भुला कर
मैंने कुछ पैसे कमा लिए
अब मैं इन पैसों से/क्या क्या जिम्मेवारियां निभाऊँ
अब मेरे प्यारे दोस्तो/मुझे वो दुकान तो बता दो
जहाँ से मैं 'खुशियां' खरीद लाऊं...!

-- जय प्रकाश भाटिया

क्या रखा है इस जीवन में/क्यों इतराना इस दुनिया में
एक दिन तो खाक होना है/फिर क्यों लड़ते हैं आपस में
है क्यों अभिमान खुद पर/नहीं रखते दया भाव किसी पर
सब एक जगह से आये हैं
फिर यहाँ क्यों कतराते हैं मिलने पर
कुछ करना है यदि जीवन में
तो जगह बनाओ लोगों के दिलों में
एक दिन इस शरीर को राख होना है
तो क्यों नहीं नाम कमायें इस जग में

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

तन्हा होती हूँ जब/अपने आप से बातें करती हूँ
कभी सोचती हूँ/कि तुम न होते तो...
कोने में टेबल पर रखा/तुम्हारा दिया लाल गुलाब
अब सूखने को है/देकर अपने अहसास मुझे,
टपकी फिर कुछ बून्दें/मेरे अन्तर्मन में प्यार की
सुनो क्या हमारे इश्क के बीच
कुछ अलग सा अहसास नहीं
कभी कभी बस कुछ सोचकर बेसिरपैर की बातें
जवां कर लेती हूँ अपने
पुराने खतों की स्याही को
आज ये गुलाब फिर महका देगा
अपने प्यार की बून्दों से
मेरे तेरे उलझे से प्रेम को।
सुनो लाते रहा करो ना
लाल गुलाब मेरे तुम्हारे इश्क के लिए

-- अल्पना हर्ष

मेरी आँखों में देख/क्या क्या नजर आता है
हकीकत है/या ख्वाब नजर आता है
तुम्हें तो लगता होगा/कि बहुत खुश है यह
तुम क्या जानो/इन आँखों में भी किसी का
इंतजार नजर आता है/माना जुबान पे बेरुखी बहुत है
इस बेरुखी से/कोई अपना दुखी बहुत है
पर हो सके तो
बेरुखी के पीछे भी देख लेना
और बताना
क्या मेरी भावनाओं का
इजहार नजर आता है या
जन्म-जन्म का प्यार नजर आता है

-- महेश कुमार माटा

सरसराती ठंडी हवा/खेतों की मचान पर बैठकर
रात में तारे गिनना/चिड़ियों की चहचहाहट से उठना
कुछ यूं कमाल करती थी/गांव की आबोहवा
बैलों के घुंघरू गीत गाते/बड़े-बूढ़े बैठ छोटों को समझाते
बैठकर हम दादी के पास पंखा हिलाते
काश वो दिन दोबारा आ जाते
काश वो दिन दोबारा आ जाते
दूध, दही, घी, शीत का खानपान हो
महल नहीं छोटा सा मकान हो
लोगों के दिलों में जान हो
मुंडेर पर कौवा बोले
घर पर आते मेहमान हों/फिर घर में बैठकर इतराते
काश वो दिन दोबारा आ जाते!

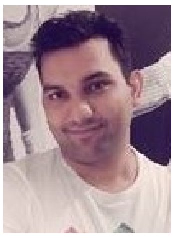

-- परवीन माटी

यह जो तुम्हारे होठों पर काला तिल है,
यही तो मेरा कातिल है
तिरछी नजर से देखकर जो मुस्कुराते हो
मेरे दिल को तुम कितना जलाते हो
यह जो तुम मुड़ मुड़कर देखते जाते हो
मेरी धड़कनों को नाहक बढ़ाते हो
बार-बार मिलने का बहाना करते हो
जानता हूं मुझ पर मरते हो
अजब विडम्बना है हमारी तुम्हारी
मैं भी कुछ कहने से बचता हूं
तुम भी कुछ कहने से बचते हो

-- राजेश सिंह

तुम्हारी दोस्ती एक अहसास है
जो मेरे जिन्दा रहने की आस है
तुम से दूर रह कर बस साँस लेता हूँ
तुम्हारे साथ ही जिन्दा रहने का अहसास लेता हूँ
खून के रिश्ते तो बाट देते हैं
तुम्हारी दोस्ती तो केवल साथ देती है
खुदा से दुआ करता हूँ
तू कभी मेरा सगा न बने
तू जब भी जन्मे मेरा अपना ही बने

-- रवि प्रभात

कितना जानदार अभिनय करती हैं औरतें!
ऐसा कि कोई समझ न पाये/सच है या है कोई नाटक
पीड़ा छुपाकर मुस्कुराना/स्याह आँखों में काजल सजाना
नीले निशान चूड़ियों/और साडी में छुपाना
अभावों में भी सम्पूर्णता/भूखे पेट दिखाना पूर्णता
ताने सुन अनसुना करना/गरल को अमृत समझना
सलवटों भरी जिंदगी में भी/इत्मीनान से रहना
थक के चूर होने पर भी
खुशी से चादर सा बिछ जाना
कौन कहता है अभिनय
सिर्फ कलाकार करते हैं!
रोजमर्रा की जिंदगी में भी जानदार
जीवंत अभिनय करती हैं औरतें!

-- प्रिया वच्छानी

बाधाएँ तो आती रहेंगी राह में
कमी मगर न होने देना चाह में
उन्नति का पथ मिलता सभी को
सीढ़ियाँ सफलता की चढ़ोगे कभी तो
चाहे कठिन हो जिंदगी का सफर
हो उलझनों से भरी यह डगर
हौसलों की उड़ान भरते रहो/कदम दर कदम बढ़ते रहो
दिन वह दूर नहीं होगा तब/चाँद तारे भी होंगे तेरे जब
देह मनुज की पाई है तुमने
फिर आशा की लौ क्यूँ बुझाई है तुमने!

-- डॉ सोनिया गुप्ता

जहां जन्म सड़क पर होता है/और कंधे पर लाशें ढोईं जायें
वहां मुफ्त में डाटा बंटता है/आटो पर इज्जत खोई जाये
धन का अभाव दुर्भाग्य बना/ऐसा ही सब बतलाते हैं
जीवन रक्षक गैस नहीं तो/नवजात यूं ही मर जाते हैं
पटरी काट के बैठ गए/परमिशन लेना भूल गए
गाड़ी आई और टूट गई
सांसें कितनों की छूट गई
कुछ लापरवाही जानबूझकर,
सरकारी सेवा लूटपाट कर
अफसर रखते जेब में अपने,
आंखें अपनी मूंद मांदकर

-- प्रदीप कुमार तिवारी

बेटियों का जीवन/आँगन की तुलसी की तरह होता है
जिसे रोज सींचा जाता है/पूज्य माना जाता है
कहीं वीरान जगह पर लगे/पेड़ की तरह होता है
जिसे गर्मी की लपटें/ठंडी के थपेड़े/मूसलाधार बारिश
सब कुछ सहन करना पड़ता है
जो बेटियों को आँगन की
तुलसी की तरह मानता है
उसका ही आँगन महकता है
जो बेटियों को वीरान
जंगल के पेड़ की तरह समझता है
उसके आँगन में पतझड़ के पत्ते ही आते हैं

-- नवीन कुमार जैन

सच्चा जीवन साथी

'गुड मोर्निंग माई स्वीट हार्ट लीजिए गरमा गर्म सूप और टोस्ट का लुत्फ उठाइए।' चंदर ने ट्रे मेज पर रखते हुए कहा। 'शुक्रिया चंद्र! आप मेरे लिए कितनी तकलीफ उठा रहे हैं।' चंद्र को प्यार और आदर से निहारते हुए चांदनी की आँखों में मोती चमक उठे।

'अरे ये क्या जानू! इन प्यारी आँखों में आंसू अच्छे नहीं लगते ऊं.. हूँ' चांदनी की आँखों से आंसू पोछते हुए चंद्र बोला। जितनी तकलीफ तुमने हमारे बच्चे को जन्म देते वक्त सही है, जितना ख्याल तुम हर वक्त मेरा रखती हो पत्नी होने का हर फर्ज बखूबी निभाती हो चांदनी, उसके सामने तो मेरी ये छोटी सी कोशिश कुछ भी नहीं और ये मेरे लिए कोई तकलीफ नहीं ये तो तुमारे प्रति मेरा फर्ज है।'

इन बातों को सुन कर चांदनी के दिल में अपने पति का सन्मान और भी बढ़ गया। 'अरे ये लो जी, हमारा शहजादा भी उठ गया।' उसको बाँहों में लेते हुए 'अरे रे रे! हम पहले आपके कपडे बदलेंगे, फिर आपको भूख भी लगी होगी न! है ना।' बच्चे के कपड़े बदलकर चांदनी की गोद में लिटाते हुए 'ये आ गया आपका शहजादा! अब आप दोनों माँ बेटा बाते। करो मैं जरा किचन में काम खतम कर लूँ।'

गाना गुनगुनाते हुए दाल को तड़का लगाने के लिए प्याज काटने लगां तभी दरवाजे पर दस्तक हुई देखा तो सामने उसका दोस्त रवि खड़ा है। 'हैलो रवी! कैसे हो भाई? आज कैसे रास्ता भूल गए! आओ आओ अन्दर आओ' चंद्र ने कहा।

' हैलो चंद्र मैं यहाँ से गुजर रहा था तो सोचा तुमे पापा बनने की बधाई देता चलूँ।' रवी ने अन्दर आते हुए कहा। फिर बोला- 'मेरी ओर से पापा बनने की बहुत बहुत बधाई तुम्हें।'

'शुक्रिया' कहते हुए चंद्र बोला- 'दोस्त बैठो दाल को तड़का लगाने वाला था, अब अच्छी सी चाय बना कर लाता हूँ। फिर तुमको शहजादे से भी मिलवाएँगे और बैठ कर गपशप भी करेंगें।' हैरानी से रवी बोला- 'क्या! तुम किचन में काम कर रहे हो? भाभी जी कहाँ हैं? तुम भी क्या औरतों वाले काम कर रहे हो, मर्दों को ये घर के काम शोभा नहीं देते।' रवि ने मजाक उड़ाया।

'क्यों भाई घर का काम करने में क्या बुराई है?' चंद्र ने पूछा और फिर बोला- 'बेबी की डिलीवरी ओपरेशन के साथ हुई है जिस कारण तुमारी भाभी को बहुत कमजोरी है। डाक्टर ने उसे आराम के लिए कहा है। सुख-दुःख में एक-दूसरे का साथ देना, जीवन साथी इसी को तो कहते हैं, और शादी के वक्त दिए हुए वचन दिखावे के लिए नहीं होते, निभाने के लिए होते हैं। मुश्किल घडी में पत्नी और बच्चे को अकेला छोड़ देने वाला और वचन तोड़ने वाला क्या खाक मर्द हुआ भला?'

अब खोखली मर्दानगी के ढोल पीटने वाले रवि की नजरें शर्म से झुक गई थी।

-- मनजीत कौर

शर्त

शादी का कार्ड देखकर मनीषा चंद महीने पीछे चली गई। वरुण उसके सामने बैठा था। वह कोई फाइल देख रही थी। 'शादी के बाद अपने इस सेंटर की जिम्मेदारी किसे सौंपोगी?'

मनीषा ने सर उठाकर उसे देखा और बोली- 'जिम्मेदारी किसी और को क्यों दूंगी? मैं ही संभालूंगी।'

वरुण कुछ सोचकर बोला- 'हमारे परिवार की साख है। तुम शादी के बाद भी इन औरतों के साथ काम करोगी।'

मनीषा को उसकी बात अच्छी नहीं लगी। उसने कहा- 'भले ही समाज इन्हें अच्छी नजर से ना देखता हो, किंतु यहाँ इन्हें आत्मसम्मान-पूर्वक जीने के योग्य बनाया जाता है।' वह कुछ देर मौन रहकर बोली- 'अगर इन्हें छोड़ना शादी की शर्त है तो मुझे मंजूर नहीं।'

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

लोभी गुरु, लालची चेला

'सुचित्रा आजकल हमेशा ऑनलाइन रहती हो, क्या करती रहती हो?'

'हाँ साधना! मैं कविता लिखना सीख रही हूँ। कविता की इतनी सारी विधाएँ हैं और उससे भी अधिक गुरु हैं। सबसे सीखने में समय लगता है। कोई ऐसा बताता है, कोई वैसा बताता है। कोई इनबॉक्स में दौड़ा चला आता है और कहता है मैं आपको लिखना सिखाऊंगा और फिर मैं उस ओर आकर्षित हो जाती हूँ। आखिर मुझे भी तो गुरु ही बनना है, वह भी रातों रात, ताकि मेरे भी चेले बने और मैं प्रसिद्ध हो जाऊं।'

'क्या! तुम भी गुरु बनना चाहती हो? भला इतना लोभ क्यों?'

'अरे साधना! तुम्हें पता नहीं, आजकल का यही ट्रेंड है। गुरु बनो और चेले बनाओ, मुफ्त में नाम कमाओ। आभासी दुनिया में गुरु-चेला का खेल मुफ्त है, इसलिए इस खेल में सभी शामिल होना चाहते हैं। नो गुरु दक्षिणा।'

'सुचित्रा सच बताओ- क्या वे चेले सच में गुरु का सम्मान करते हैं?'

सुचित्रा- 'नहीं करते, क्योंकि वे भी गुरु बन जाते हैं।'

साधना- 'धन्य हो, लोभी गुरु, लालची चेला, पड़ें नरक में ठेली ठेला।'

-- डॉ रमा द्विवेदी

जुगाड़

न्यू जर्सी के एयरपोर्ट पर लेने आई मिशी को देखते ही वसुधा को अपनी ननद इना की चतुराई का भान हो गया था क्योंकि मिशी गर्भवती दिखाई दे रही थी, वो भी लगभग पूरे दिन की। वसुधा को आज अपनी सरलता पर गुस्सा आ रहा था। उसे तो उसी दिन खटका लगा था, जब इना ने बड़ा लाड़ दिखाते हुए कहा था, 'वसु भाभी, इस बार तुम और सोना भी मेरे साथ न्यू जर्सी चलो, सोना की गर्मी की छुट्टियाँ भी हैं और मिशी आप लोगों को बहुत मिस कर रही है। दुबई में ड्यूटी-फ्री सामान मिलता है खूब शौपिंग भी कर लेंगे, फिर तो सोना हॉस्टल चली जाएगी।'

ना जाने कैसे अपनी कुटिल ननद की बातों में आ गयी थी वसु। सोना भी अमेरिका घूमना चाहती थी, सो बदले मिजाज का कारण भी जानने की कोशिश नहीं की उसने। पर अब जब तीन लाख टिकट पर खर्चा करके आई है, तो २ महीने साथ रहना ही पड़ेगा।

शुरू के १५ दिन तो जवांई सा ने खूब घुमाया उन्हें। सोलहवें दिन मिशी ने तबियत ठीक नहीं होने की शिकायत की, तो इना सारे दिन बेटी के पास बैठी रही और वसुधा ने घर का सारा जिम्मा खुद ही अपने ऊपर ले लिया। रात सारा काम निबटा सोने जा ही रही थी कि मिशी के कमरे से हलकी खिलखिलाहट सुनकर न चाहते हुए भी कदम ठिठक गए। आवाज मिशी की थी, 'माँ, आपने मामी को लाकर बहुत अच्छा किया, यहाँ नैनी (परिचारिका) हम अफोर्ड नहीं कर सकते, और आप क्या-क्या करतीं? डॉक्टर ने दस दिन बाद की डेट दी है। शायद ऑपरेशन करना होगा।'

वसुधा की आँखों में आंसू आ गए खुद को छले जाने पर। नींद अब कोसों दूर थी आँखों से। सहसा ख्याल आया कि भारत में तो अभी सूर्योदय हुआ होगा। तुरंत फोन उठाकर पति को मेसेज करके सारा हाल बताया।

जिस दिन मिशी को सुबह हॉस्पिटल जाना था उसकी पहली शाम माँ-बेटी ले जाने वाले सामान की तैयारी कर रही थी, तभी दामाद अपने ऑफिस से कुछ घबराए हुए आये और वसुधा को २ टिकट देते हुए बोले, 'मामी जी, आप दोनों को कल शाम की फ्लाईट से वापिस इंडिया जाना होगा।'

दो जोड़ी आँखों में प्रश्न देख दामाद जी ने बात पूरी की, 'नानी की तबियत खराब हो गयी है, मामा जी अकेले मैनेज नहीं कर पा रहे।'

मिशी और इना के हारे हुए चेहरे कनखियों से देखकर वसुधा अपनी तैयारी करने कमरे में चल दी।

-- पूर्णिमा शर्मा

पृष्ठ २५ की पहेलियों के उत्तर-

(१) चींटी (२) मक्खी (३) टिड्डा (४) भँवरा (५) तितली

(पहली किस्त)

शान्ति

मनमोहन भाटिया

'पागल! पागल!! पागल!!!' की आवाज के साथ कुछ बच्चे शोर मचाते हुए भाग रहे थे, उनके पीछे एक महिला अभद्र गालियां बकती हुई भाग रही थी। उस महिला ने एक पत्थर उठाकर उन भागते हुए बच्चों की ओर फेंका। निशाना गलत साबित हुआ, वह पत्थर किसी बच्चे को नहीं लगा। महिला अधेड थी, इसलिए बच्चों की रफ्तार का मुकाबला नहीं कर सकी। हांफते हुए एक मकान के दरवाजे का सहारा लेकर खडी हो गई। टेम्पो में बैठा हुआ विमल उस महिला का चेहरा नहीं देख सका। उसने पत्नी वृन्दा से सिर्फ इतना कहा, 'कहां मकान ले लिया? यहां तो पागल भी रहते हैं और बच्चे भी शरारती हैं। जरा संभल के रहना होगा।'

'क्या कर सकते हैं। अब मकान खरीद लिया है, रहने आ गए हैं। मकान तो अपनी मर्जी का सोच समझ कर खरीद सकते हैं, लेकिन पडोसी कैसे मिलेगें, इसकी गांरटी कोई नहीं दे सकता। आज अच्छा है, कल कोई खराब पड़ोसी भी हो सकता है। मैं और आप कुछ नहीं कर सकते।' वृन्दा ने एक गहरी सांस लेकर कहा।

कुछ दिन बाद शाम के समय विमल आफिस से घर वापिस आ रहा था। गली में प्रवेश करते ही अचानक विमल को अपनी बाईक में ब्रेक लगानी पडी, क्योंकि एक अधेड़ महिला अचानक से एक मकान से भागती हुई आई, बाईक को देखकर घबराहट में जमीन पर गिर पडी। अचानक ब्रेक लगाने के कारण बाईक का बैलेंस बिगड गया। विमल भी औंधे मुंह गिर गया। उस महिला ने अंट-शंट दो चार गालियां बकीं, फिर फुर्ती से गली से बाहर भाग गई। यह घटना क्रम इतनी तेजी से हुआ कि विमल उस महिला का चेहरा नहीं देख सका।

गली के दो युवकों ने विमल को सहारा देकर उठाया। विमल ने अपने जिस्म का मुआइना किया। सडक की रगड लगने से उसकी जैकेट, स्वेटर, पेंट फट गई थी। घुटने, हाथों पर खरोंचों ने अच्छा खासा नक्शा बना डाला था। मोटे गर्म कपडों के कारण चोट थोड़ी कम लगी। एक युवक ने बाईक को स्टेंड पर लगाया। दूसरे युवक ने विमल के हुलिए को देखकर कहा, 'भाई साहब ज्यादा चोट लगती है, फौरन डाक्टर के पास जाकर टिटनेस का इंजेक्शन लगवा कर दवाई लीजिए।' 'साली पागल!' कहकर उसने भी उस महिला को दो-चार गंदी गालियां बक दीं। तभी एक बुजुर्ग उस मकान से निकले, जहां से वह महिला भागती हुई उसकी बाईक के सामने गिर पडी थी। उन बुजुर्ग ने दोनों हाथ जोड़कर विमल से माफी मांगी। 'पागल है, बेचारी, माफ कर दो। आपको चोट लगी है, मैं आपको डाक्टर के पास ले चलता हूं।'

'किस-किसको डाक्टर के पास ले जाओगे। साली पागल को पागलखाने में भेजो।' कहकर उस युवक ने फिर से मां-बहन की चार-पांच गालियां बक दीं। बुजुर्ग की आंखों में आंसू छलक आए। डाक्टर का क्लीनिक पास में था। जख्मों पर दवा लगवाते हुए विमल ने उन बुजुर्ग से पूछा- 'कौन थी वो?' 'मेरी बेटी।'

'लोग उसे पागल कह रहे थे, क्या यह सच है?'

'हां बेटे, पागलखाने भी रखा था उसे, कभी कभी पागलपन के दौरे पडते हैं। इस उम्र में देखा और सहा नहीं जाता। लोग सरे-आम गालियां बकते हैं, तो वह भी पलट के जवाब देती है।' कहकर बुजुर्ग चुप हो गए। विमल ने कुछ और अधिक जानना चाहा, लेकिन बुजुर्ग चुप रहे तो चुप्पी देखकर विमल ने अधिक पूछना उचित नहीं समझा।

दवा लेकर विमल घर पहुंचा तो लंगडाते पति को देखकर वृन्दा सन्न रह गई। 'क्या हुआ?'

'बाईक के आगे एक महिला अचानक से आ गई, ब्रेक लगाई तो बैलेंस बिगड गया, गिर पड़ा, थोडी चोट लग गई। लोग कह रहे थे, वह पागल है, हमारी गली में रहती है, मुझे तो मालूम नहीं, क्या तुम्हें कुछ मालूम है?' विमल ने वृन्दा से पूछा।

पड़ोस कैसा है, आमतौर पर मर्दों को अधिक फर्क नहीं पड़ता। पूरा दिन तो आफिस में कामकाज में बीत जाता है। गृहणियों को हमेशा आसपड़ोस से वास्ता रहता है। इसलिए उनकी ख्वाहिश एक अच्छे पड़ोस की जरूर रहती है। नए मकान में शिफ्ट हुए विमल और वृन्दा को दो महीने हो गए। आफिस आते-जाते दो चार बार गली के बाशिन्दों की बात उसके कानों मे पड़ जाती कि 'साली पागल है, पूरी पागल। अपने बच्चों को उससे दूर ही रखो। कोई भरोसा नहीं उसका। कोई पत्थर मारकर कभी सिर तोड दे। पता नहीं पागलखाने वालों ने कैसे छोड दिया उसको।' विमल इन दो महीनों में यह नहीं जान सका कि वह पागल महिला कौन है। कभी फुरसत ही नहीं मिली और आज रास्ते में वह महिला टकराई तो चोट खा बैठा।

आज उसने पत्नी वृन्दा से पूछा कि क्या वह गली में रहने वाली पागल महिला को जानती है?

'सुना तो है कि वो पागल है, पर मेरा दिल नहीं मानता उसे पागल।' वृन्दा के मुख से यह बात सुनकर विमल हैरान हो गया

'इसका मतलब है कि तुम उसको जानती हो?'

'हां, उसको जानती हूं। अक्सर वह हमारे घर आती है।'

'क्या कह रही हो तुम वृन्दा? एक पागल औरत का हमारे घर आना-जाना है, यह बात तुम हंसकर कह रही हो?' विमल की परेशानी बढ़ती जा रही थी।

'परेशान होने की कोई जरूरत नहीं, मेरा यकीन करो। जब तुम उससे मिलोगे, तब दांतों तले उंगली दबा लोगे। लोहा मान जाओगे उसकी काबलियत का।'

विमल समझ नहीं सका कि जब सब उसे पागल कहते हैं, उसका पिता भी उसको पागल कह रहा था, उसके मुंह से गंदी गालियों की बौछार खुद उसने सुनी है। उसकी पत्नी वृन्दा ने उसे अकलमंद घोषित कर दिया। पत्नी की बात सुनकर उस महिला से मिलने की तमन्ना विमल को तीव्र हो गई। वह घड़ी इस घटना के तीसरे दिन ही आ गई।

दो दिन से विमल को बुखार हो रखा है। सर्दियों के दिन सूरज देव रुष्ट होकर न जाने कहां छिपे हुए हैं, किसी को नहीं मालूम है। हर आदमी परेशान है, ढूंढने भी कहां जाएँ? सर्द हवाओं के बीच शरीर में झरझुरी सी होती रहती है। गर्म कपड़े लादकर सींकिया पहलवान भी दारासिंह से कम नहीं लगता। दस-बारह किलो वजन बढ़ जाता है, गर्म कपडों में शरीर को छुपाकर। एक तो बुखार, ऊपर से जाड़ा, सूर्य देव का प्रकोप, विमल दो दिनों से रजाई से बाहर ही नहीं निकल सका। पसीने से लथपथ विमल की नींद सुबह चार बजे खुली।

बुखार उतरने के पश्चात शरीर एकदम निचुड़ा हुआ, गला प्यास से सूखा हुआ। कमरे में नाईट लैंप का नीला मध्यम प्रकाश सर्दियों की डरावनी भयानक रात में सूकून देने में सक्षम था। जाड़े के मौसम में रजाई हटाकर घडी में समय देखा। फिर मन ही मन कहा, अभी तो चार बजे हैं। सर्दियों की रात, एकदम शून्य सी रात, चारों ओर सन्नाटा, घडी की टिकटिक सन्नाटे में कह रही थी, समय तुम्हारे साथ है। रात की शान्त शून्य सी रात में भी घड़ी की आवाज सिर्फ यही बतलाती है कि समय सच्चा साथी है, जो हर समय साथ रहता है, बाकी कोई सुध नहीं लेता।

जीवनसंगनी भी घोडे बेचकर खर्राटे भरती हुई चैन से सो रही है। उसे पति के स्वास्थ्य की चिंता है, दो दिन से तीमारदारी कर रही है। रात को अचानक नींद खुलने पर समय तो साथ है, पत्नी को दो घड़ी चैन लेने का अधिकार है। इसलिए उसको उठाना उचित नहीं है। प्यास बुझाने के लिए पानी स्वयं ही गिलास में भरकर पी लेता है। प्यास शान्त करने के पश्चात रजाई ओढ़कर करवट बदली। समय पर वार करती हुई पत्नी वृन्दा नींद से जागी और विमल से पूछा,' कुछ चाहिए।'

'प्यास लग रही थी।' विमल ने कहा।

वृन्दा ने रजाई हटाकर कहा, 'अभी पानी पिलाती हूं।'

'मैंने पानी पी लिया है।' विमल ने धीरे से कहा।

'मुझे जगाया होता, तबीयत ठीक नहीं है, दो दिन से आंख भी नहीं खोल सके। पहलवान बनने की कोई जरूरत नहीं।'

वृन्दा की बात सुन कर विमल हंस दिया। उसकी खिलखिलाहट से वृन्दा भी मुस्कुरा उठी। 'शुक्र है, होंठो पर हंसी आई। अच्छी तबियत के लक्षण हैं।'

'हां, बुखार इस समय नदारद लग रहा है।' विमल ने वृन्दा की ओर मुख करके कहा।

(अगले अंक में जारी)

चमन के फूल हम सारे, हमारा देश न्यारा है
हमारी भूमि में शामिल, परम इतिहास प्यारा है
हिमालय की बुलंदी से, यही आवाज है आती
बचा लो हिन्द के वीरो, वतन के आन की थाती
लुटाया लाल माँओं ने, दुल्हन पति को बहन भाई
बहुत कुर्बानियाँ लेकर, ये आजादी दुल्हन आई
कली कश्मीर की कहती, तिरंगा ध्वज हमारा है
हमारी भूमि में शामिल...

असम, मेघा, मिजो, त्रिपुरा, अरुण अंचल की तरुणाई
सुनो नागों की धरती से, बजे प्यारी सी शहनाई
भरा मणियों से मणिपुर, गोरखा सिक्किम की घाटी से
उगे सूरज सदा पहले, खिलाये फूल माटी से
नमन इस भूमि को करलें, जो पूर्वोत्तर पुकारा है
हमारी भूमि में शामिल...

तमिल केरल उड़ीसा आन्ध्र, कर्नाटक भी मुस्काया
महा, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा मधुर माया
लगा उत्तर हिमाचल मध्य पाटलिपुत्र गुण गाने
कबीरा दास तुलसी सूर दिनकर और रसखाने
कलम तलवार को भी मात दे बनती सहारा है
हमारी भूमि में शामिल...

पखारें भूमि भारत की, अरब औ हिन्द की लहरें
खड़ा पंजाब प्रहरी सा, पताका विश्व में फहरे
नमन बंगाल के गुरु को, अमन का राग जो गाये
नमन गाँधी के मन्त्रों को,
नमन झंडा जो फहराये
विधाता की धरा पावन,
करे गंगा की धारा है
हमारी भूमि में शामिल,
परम इतिहास प्यारा है

-- अवधेश कुमार 'अवध'

हे प्रियतम! तुम कब आओगे?
मन मरुथल में प्यास जगी है, प्रेम जलद कब बरसाओगे?
देखों कैसे रजत चाँदनी, खेल रही सरिता के तल पर।
सरिता के तन से उलझा हो, मानो विधु का वसन फिसलकर
कब आकर तुम अपने कर से, मेरी लट को सुलझाओगे?
हे प्रियतम! ....

आधी रात खिली बगिया में, महक उठी रातों की रानी
मुझे जलाती, लेकर आती सौरभ, निष्ठुर हवा दिवानी
मन विह्वल है,कब आकर -तुम मेरी रातें महकाओगे?
हे प्रियतम!......

रोज विरह का गीत सुनाता, बादल को चातक बेचारा
मैं विरहन सब समझ रही हूँ, क्या समझे बादल आवारा
गीत विरह के सह न पाऊँ, गीत प्रणय के कब गाओगे?
हे प्रियतम!.......

कारे बदरा आये, लेकिन
काजल कहाँ सजा पाई मैं?
तेरे बिना महावर, बिंदिया,
लाली कहाँ लगा पाई मैं?
तभी सजूँगी जब चूड़ी,
लाली, काजल, बिंदिया लाओगे
हे प्रियतम!......

-- डा. दिवाकर दत्त त्रिपाठी

जैसा देखा जैसा सीखा, वो ही संस्कार रहेंगे
निरे दोगले, चोर उचक्के, गद्दार सदा गद्दार रहेंगे
वो कहता पंद्रह मिनटों में हिन्दू सभी मिटा देंगे
वंदेमातरम ना गाएंगे, गर्दन भले कटा देंगे
कोई कहता राम कहा तो, संबंधों को तोड़ेंगे
कहते हैं हम मोदी की बोटी बोटी कर छोड़ेंगे
वो आतंकी बनकर कहते काम कर रहे अल्ला का
इधर असली चेहरा भी दिख गया है अब्दुल्ला का
कहता है तुम अमरनाथ के दर्शन भूल ही जाना अब
महादेव के श्रद्धालुगण, दर्शन को मत आना अब
और उधर महबूबा ने भी धमकी दे दी दंगे की
कहती कांधे नहीं मिलेंगे, जब उठेगी लाश तिरंगे की
कोई कलकत्ते का मियाँ, धमकी देता है सबको
कहता संविधान ना मानूं, मन की करता हूँ अब तो
केरल, से घाटी तक हिन्दू, सड़कों पर यूँ मरते है
झूठे हो तुम जो कहते हो,
देश में मुस्लिम डरते हैं
आज दिखा दी तुमने अपने
खून में फैली मक्कारी
चोर दलालो, गद्दारों से
बढ़कर हो तुम अंसारी

-- मनोज डागा 'मोजू'

अनमोल बड़ा है ये बंधन, पावन रिश्ता रक्षाबंधन।
उमड़ उमड़ के मन है जाता, जबजब रक्षा बंधन आता।
मन नेह दीप तब जल उठते, यादों में तेरी जब घिरते।
भाई के मस्तक का चन्दन, पावन रिश्ता रक्षाबंधन।
माना हम खूब लड़ा करते, आंखों से भी मोती झरते।
पल में यूँ रूठ दिखाना था, इक पल में गले लगाना था।
रोली मौली शुभ ये वंदन, पावन रिश्ता रक्षाबंधन।
रेशम के कच्चे धागों में,
मन प्रेम समर्पित रागों में।
दुख में सुखदा का है सानी,
रिश्ता होता ये नूरानी।
हर मन का है 'अनहद गुंजन',
पावन रिश्ता रक्षा बन्धन।

-- अनहद गुंजन गीतिका

साथी तुम तो चले गए वनवासी जीवन जीती हूँ
दुनियां के ताने सुन सुन कर घूँट घूँट विष पीती हूँ
जब तक तुम थे संग राह में, मुश्किल नहीं नजर आई
साथ छोड़ कर दूर गये तुम, घनी मुसीबत घिर आई
एक तुम्हारी याद भरोसे निशदिन स्वप्न संजोती हूँ
सीता और राम जैसी ही जोड़ी एक हमारी थी
हर स्थिति में संग रहे हम कभी न हिम्मत हारी थी
छोड़ गए तुम मुझे अकेला
अब मैं नयन भिगोती हूँ
प्रणय सूत्र में बँधें किन्तु
कैसा बन्धन जो टूट गया
चूक हुई ऐसी क्या हमसे
भाग्य हमारा रूठ गया
अब लगता है पनघट रीता घट रीता मैं रीती हूँ

-- शुभदा बाजपेयी

आजादी का जश्न मनायें, आओ मिलकर हम और आप
इसे अक्षुण्ण बनायें आज, आओ मिलकर हम और आप
आजादी का जश्न मनायें...
कहीं गोला कहीं बम चले थे, कितनों के ही दम निकले थे
तब जाके अंग्रेज यहाँ से, देखों भागे कर बाप रे बाप
आजादी का जश्न मनायें...
नियम कानून सब ध्वस्त हो गये, जो जागे थे वो भी सो गये
जनता कर रही त्राहि-त्राहि, तब मुक्ति दिलाये गांधी सुभाष
आजादी का जश्न मनायें...
कहाँ जा रहा देश सोंचे हम, लूट खसोट को करे ध्वस्त हम
औरों के लिए बोये न कांट, महकाये,गुलशन में सुवास
आजादी का जश्न मनायें...
कब तक यूं खामोश रहेंगे
दुश्मन को भी कुछ न कहेंगे
आओ लाल संग बैरी भगायें
मिलकर आज हम और आप
आजादी का जश्न मनायें...

-- लाल बिहारी लाल

वक्त की शाख पे बैठकर, इतना इठलाना ठीक नहीं
फितरत इसकी टूटना है, तेवर को बदलना ठीक नहीं
ठोकर खाओ मजबूत बनो, हम भी किसी से कम हैं क्या
मिजाज ठोकरें मारने का, लगता कुछ ये ठीक नहीं
किस्तियां उनकी भी फंसी, जिसे नाज था नाखुदाई पर
मरकर वो जिन्दा भी हुये, जिसे नाज था अपनी दुहाई पर
देखो ये बसन्ती ऋतु आई है, फिर भी छाया वीरानापन
मिट्टी में हैं दबे खजाने, ऊंचे उड़ना ठीक नहीं
मरे हकीमों की कहानी, ये कूंचे तुमको सुनाएंगे
रोग मिटाने वालों के, कई रोग ये तुमको दिखाएंगे
इल्म तुम्हारा अच्छा है, अंदाज हैं कुछ बदले बदले
नदियों के तुम माहिर हो, समन्दर में जाना ठीक नहीं
बेवफा वक्त है ये, इसपे क्या मैं नाज करूं
सूरज कभी न डूबे, तो
दुनिया पे मैं राज करूं
कहीं नगर हैं बह जाते,
कहीं धूल का राज दिखा
अति बडी भयानक है,
पत्थर को बहाना ठीक नहीं

-- राज कुमार तिवारी (राज)

जो भी दिल में हो कहा करो, कभी तुम में तुम भी दिखा करो
कभी खुद के एब दिखाई दें, जरा आइना भी तका करो
जहन को अपने रिहा करो,जरा फासले से रहा करो
जो नहीं मिला वो करीब था, जो मिला बहुत ही अजीब था
जो मिल गया तो करम समझ, जो ना मिल सका वो नसीब था
यूँही जिंदगी को रवाँ करो, जरा फासले से रहा करो
जो ना खुल सके वो किताब क्या
ये गुनाह क्यूं वो सवाब क्या
क्यूं ये खेल दुनिया में चल रहा
तेरे मेरे बीच हिसाब क्या
ये वहम है इसको फना करो,
जरा फासले से रहा करो

-- अंकित शर्मा

(पन्द्रहवीं कड़ी)

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

विराट नगर में कीचक का वध होने पर उनको विश्वास हो गया कि पांडव वहीं पर हैं। यह सोचकर दुर्योधन ने पशुधन चोरी होने का आरोप लगाकर विराट नगर पर आक्रमण कर दिया।

अब कृष्ण कौरवों के आक्रमण और उसके बाद की घटनाओं पर विचार करने लगे। ये घटनायें अधिक पुरानी भी नहीं थीं। इसलिए कृष्ण को विस्तार से सब बताया गया था।

जब राजा विराट को कौरवों के आक्रमण का समाचार मिला, तो उनके हाथ-पैर फूल गये। वे अपनी शक्ति को जानते थे, कौरवों की विशाल सेना और भीष्म, द्रोण, कर्ण जैसे महान् वीरों के सामने उनकी सेना का क्या महत्व था?लेकिन आक्रमण होने पर उन्होंने कायरता नहीं दिखायी और अपने पुत्र राजकुमार उत्तर को अपनी सेना के साथ कौरवों का सामना करने के लिए भेजने का निश्चय किया।

कंक के रूप में वहाँ उपस्थित सम्राट युधिष्ठिर को कौरवों के आक्रमण का समाचार ज्ञात हुआ, तो समझ गये कि कौरवों को उनके यहाँ पर होने की भनक लग गयी है, इसलिए उनको प्रकट कराने के लिए यह आक्रमण किया गया है। वे जानते हैं कि यदि पांडव विराट नगर में रह रहे होंगे, तो अपने शरणदाता राज्य को अरक्षित नहीं छोड़ सकते और उसके पक्ष में लड़ने के लिए अवश्य आयेंगे। इससे उनको पहचान लिया जाएगा।

तब युधिष्ठिर ने गणना की तो उनको निश्चय हो गया कि उनके अज्ञातवास का भी एक वर्ष पूरा हो चुका है और अब उनके प्रकट होने में कोई बाधा नहीं है। यह विचार करके उन्होंने राजा विराट को सलाह दी कि वृहन्नला एक गंधर्व है, लेकिन वह अच्छा सारथी भी है। उसे राजकुमार विराट का सारथी बनाकर युद्ध में भेज दीजिए। इस विचित्र सलाह पर राजा विराट को आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने वृहन्नला को सारथी बनाकर भेजना स्वीकार कर लिया, क्योंकि वे कंक की सलाह का बहुत आदर करते थे। पहले भी कई अवसरों पर कंक ने उनको बहुत हितकारी सलाह दी थी।

राजकुमार उत्तर वृहन्नला को सारथी बनाकर अपनी छोटी सी सेना के साथ कौरवों का सामना करने गये। वहां वे कौरवों की विशाल सेना और भीष्म जैसे वीरों को सामने खड़े देकर भयभीत हो गये और अपने रथ से उतरकर भागने का प्रयास करने लगे। लेकिन वृहन्नला ने उनको पकड़ लिया और फिर अपना वास्तविक परिचय देते हुए बताया कि मैं अर्जुन हूँ। यह नाम सुनकर उत्तर को बहुत आश्चर्य हुआ। अर्जुन रथ को उस पेड़ के पास ले गये, जहां उन्होंने अपने अस्त्र-शस्त्र छिपा रखे थे। पेड़ पर ऊपर चढ़कर दोनों ने उनका गट्ठर उतारा और उसमें से अर्जुन ने अपना धनुष गांडीव और शंख देवदत्त ले लिया। शेष को रथ में ही रख दिया।

फिर वे दोनों वापस युद्ध भूमि में आये। अब उत्तर रथ को हाँक रहा था और अर्जुन युद्ध करने जा रहे थे। सबसे पहले उन्होंने अपना देवदत्त नामक शंख खूब जोर से फूंका। जैसे ही उन्होंने अपना शंख बजाया, तो कौरवों ने उस शंख की आवाज पहचान ली और वे समझ गये कि यह तो अर्जुन है। कौरव सैनिकों में कानाफूसी होने लगी कि उसका अज्ञातवास पूरा हो गया है या नहीं? तब पितामह भीष्म ने गणना करके बताया कि पांडवों के वनवास और अज्ञातवास की अवधि सौर वर्ष और चन्द्र वर्ष दोनों पंचांग परम्पराओं के अनुसार पूरी हो चुकी है।

अर्जुन ने इस युद्ध में अकेले ही पूरी कौरव सेना का सामना किया। जब सूर्यास्त होने को आया, तो अर्जुन ने एक विशेष अस्त्र छोड़कर पूरी कौरव सेना को चेतनाहीन कर दिया। फिर अर्जुन और उत्तर दोनों जाकर संकेत के रूप में सभी प्रमुख कौरव वीरों के उत्तरीय अंगवस्त्र उतार लाये। जब कौरव वीरों की चेतना लौटी, तो उनको अपने आप पर बहुत ग्लानि हुई कि एक अकेला वीर अर्जुन उनको निर्वस्त्र कर गया। निराशा में भरकर वे लौट आये।

जब राजा विराट को कौरवों की पराजय का समाचार मिला, तो उनको बहुत हर्ष हुआ कि उनके पुत्र उत्तर ने सभी कौरव महावीरों को पराजित कर दिया। लेकिन कंक बने हुए युधिष्ठिर ने कहा कि यह विजय वृहन्नला के कारण मिली है। इस पर राजा विराट क्रोधित हुए। वे विजयी राजकुमार उत्तर का स्वागत करने महल से बाहर आये। वहाँ उत्तर ने उनको बताया कि यह विजय वास्तव में अर्जुन के कारण हुई है, जो वृहन्नला के रूप में हमारे यहां रह रहे थे। उन्होंने यह भी बताया कि आपके साथ कंक के रूप में जो द्यूत के साथी हैं, वे वास्तव में सम्राट युधिष्ठिर हैं, जो अज्ञातवास के दिन बिताने के लिए इस रूप में रह रहे थे। उसने द्रोपदी तथा अन्य पांडवों का भी यथार्थ परिचय दिया।

पांडवों का वास्तविक परिचय जानकर राजा विराट को बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने दुर्व्यवहार के लिए युधिष्ठिर से क्षमा मांगी। युधिष्ठिर ने कहा- 'राजन्, आपने कोई दुर्व्यवहार नहीं किया है। हम तो आपके आभारी हैं कि आपने हमें शरण देकर हमारा अज्ञातवास सफल बनाया। हम आपके ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकते।'

राजा विराट ने सभी पांडवों का बहुत सम्मान किया और आपसी सम्बंध को स्थायी करने के लिए अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन से करने की इच्छा व्यक्त की। इस पर अर्जुन ने कहा कि उत्तरा हमारी शिष्या है, इसलिए हमारी पुत्री के समान है। मैं उससे विवाह नहीं कर सकता, लेकिन मेरे पुत्र अभिमन्यु से उसका विवाह हो सकता है। इस प्रस्ताव को राजा विराट ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

तत्काल दूत को द्वारिका भेजकर भगवान कृष्ण, सुभद्रा, अभिमन्यु और अन्य परिजनों को विराट नगर बुलाया गया। पांचाल से भी महाराज द्रुपद अपने परिवार और द्रोपदी के सभी पुत्रों सहित पधारे। उन सबकी उपस्थिति में अभिमन्यु और उत्तरा का विवाह कर दिया गया। १३ वर्ष की दीर्घ अवधि में पांडवों के सभी पुत्र वयस्क हो गये थे। उनको युद्धकला की उचित शिक्षा भी दी गयी थी, जिससे वे सभी महारथी बन गये थे।

यह मांगलिक कार्य सम्पन्न हो जाने के बाद सभी इस बात पर विचार करने लगे कि अब पांडवों को उनका इन्द्रप्रस्थ का राज्य पुनः दिलवाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। इस पर विस्तार से विचार करने के लिए राज सभा के आयोजन का निश्चय किया गया और उसके लिए समय और स्थान निश्चित कर दिया गया।

राजा विराट ने विराट नगर के पास ही उपप्लव्य नगर में पांडवों को निवास का स्थान दे दिया था। वहां शिविरों में पांडवों ने अपनी अस्थायी राजधानी बना ली थी। वहीं एक बड़े कक्ष में सम्राट युधिष्ठिर की राज सभा बुलायी गयी। कृष्ण को राजसभा की कार्यवाही पूरी तरह स्मरण थी।

राजसभा के मध्य में सम्राट युधिष्ठिर बैठे थे। उनके एक ओर स्वयं भगवान कृष्ण विराजमान थे। उसी ओर उनके निकट बलराम, अर्जुन, धृष्टद्युम्न, उत्तर, अभिमन्यु तथा कुछ पांचाल राजकुमार थे। दूसरी ओर महाराज द्रुपद, राजा विराट, भीम, नकुल, सहदेव अपने-अपने आसनों पर बैठे थे। पीछे की पंक्तियों में पांडवों के सभी पुत्र तथा अन्य राजकुमार बैठे थे।

युधिष्ठिर के संकेत पर कार्यवाही प्रारम्भ हुई। सबसे पहले राजकुमार उत्तर ने उठकर कहा- 'आप सबको ज्ञात ही है कि पांडवों ने द्यूत की शर्तों के अनुसार १२ वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास सफलता से पूर्ण कर लिया है। अब न्याय के अनुसार उनको उनका इन्द्रप्रस्थ का राज्य पुनः मिल जाना चाहिए। उसको वापस लेने के लिए क्या किया जाये, इस पर विचार विमर्श के लिए यह राज सभा बुलायी गयी है। आप सभी अपना-अपना विचार रखें कि महाराज युधिष्ठिर को क्या करना उचित होगा।'

उनकी बात पूरी होते ही युधिष्ठिर से आज्ञा लेकर धृष्टद्युम्न खड़े हुए और बोले- 'दुर्योधन से न्याय की कोई आशा करना व्यर्थ है। वह सीधी तरह कभी हमारा राज्य नहीं देगा, इसलिए हमें तत्काल युद्ध की घोषणा कर देनी चाहिए और उसकी तैयारियाँ प्रारम्भ कर देनी चाहिए।' इस पर सभा में बैठे हुए भीम, अर्जुन आदि कई सभासदों ने भी अपनी सहमति में सिर हिलाये।

(अगले अंक में जारी)

निजी विद्यालय के शिक्षकों में व्याप्त निराशा

पंकज 'प्रखर'

देश के भविष्य को सजाने संवारने वाला, साथ ही देश के भविष्य को सही दिशा और दशा तक पहुँचाने वाला शिक्षक आज घोर निराशा से ग्रस्त है, क्योंकि उसे अपना वर्तमान और भविष्य दोनों ही अंधकारमय लग रहे हैं। क्यों? क्योंकि अपनी ओर से पूर्ण परिश्रम करने वाला शिक्षक आज केवल शिक्षा के व्यापारियों के हाथ की कठपुतली मात्र बनकर रह गया है। उसका आत्म सम्मान घायल है और इस घायल आत्मसम्मान के साथ वह अपना जीवन जीने के लिए मजबूर है। नई पीढ़ी को तैयार करने वाला शिक्षक सदैव अपनी आजीविका को लेकर शंकित रहता है क्योंकि इन प्राइवेट विद्यालयों में शिक्षकों का कोई सम्मान नहीं है। कई बार तो मीटिंगों में सामूहिक रूप से शिक्षा के व्यापारियों द्वारा शिक्षकों को यह तक कह दिया जाता है कि ठीक से काम करो नही तो १५ दिन का नोटिस देकर निकाल दूंगा। फिर मेरे पास हाथ-पैर जोड़ने मत आना कि अब हम कहां जाएँ।

एक शिक्षक दिन भर चोक घिस-घिसकर ब्लैक बोर्ड पर बच्चो का भविष्य सवारता है, सिर्फ इस उम्मीद से कि वह इस देश का ऐसा निर्माण करेगा, कि उसके पढ़ाये बच्चे दुनिया के सामने एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। बदले में एक शिक्षक को मिलता क्या है? वर्तमान में तो भविष्य के लिए पैसा इकट्ठा करना तो दूर ठीक से दो वक्त की रोटी का जुगाड़ भी मुश्किल लगता है, जिसके लिए भी शिक्षक को प्राइवेट विद्यालयों में जलालत भरी नौकरी करनी पड़ती है और आजीविका के नाम पर मिलता है मजदूरों से भी गया बीता पारिश्रमिक, जिससे बड़ी मुश्किल से वह अपने परिवार का पालन-पोषण कर पाता है।

बच्चों को पता होता है कि कौन सा शिक्षक उन्हे कैसा पढ़ा रहा है, पर प्राइवेट विद्यालय के व्यवसायी मैनेजर और प्रिंसिपल अंग्रेजों की तरह शिक्षक पर हुकूमत करते हैं और भला-बुरा कहने से भी नहीं चूकते। प्राइवेट विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य बच्चों से ड्रेस और कॉपी-किताब के नाम पर अधिक से अधिक पैसा वसूलना है और शिक्षक को कम से कम पैसा देना है।

सर्वसुविधा युक्त जीवन जीने वाले विद्यालय के प्रिंसिपल और मैनेजर की लाइफ स्टाइल देखकर आप सब दंग रह जाएंगे। लम्बी-चौड़ी गाड़ियों में चलने वाले उस मैनेजर को किसी भी आम शिक्षक की निजी जिंदगी से तनिक भी कोई लेना देना नहीं होता। हाँ, लेकिन वह स्वयं उस शिक्षक द्वारा पूर्ण मान-सम्मान प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है और शिक्षक को अपने गुलाम से ज्यादा कुछ नहीं समझता। हमारे देश को अगर क्रांति की जरूरत है तो सबसे पहले हर एक शिक्षक को उसका हक मिलना ही चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा काबिल शिक्षक सम्मान के साथ शिक्षा प्रदान करें और सही मेहनताना उसे प्राप्त हो सके, जिससे कि वह अपने भविष्य की सुरक्षा की चिंता छोड़कर सम्मानपूर्वक अपने शिक्षक धर्म का निर्वहन कर सके।

इस लेख के साथ आप लोगो को एक सत्य घटना सुनना चाहता हूँ और यह घटना मेरे मित्र ने मुझे सुनाई थी कि वह एक सी.बी.एस.ई. विद्यालय मे नौकरी करने गया। वहां उसने देखा कि इंटरव्यू में ज्यादातर शिक्षक अनट्रेंड पहुचे थे। लेकिन उसकी अंग्रेजी अच्छी होने की वजह से उसे नौकरी पर रख लिया गया। सात दिन का डेमो लेने के बाद दसवें दिन सैलेरी बताई गई की सात हजार मिलेगा। वह क्लास लेने पंहुचा और आठ पीरियड लगातार क्लास ली कक्षा ५, ६, ७, ८, ९ तक की साइंस और सोशल स्टडीज। बच्चों को बड़े प्यार से पढ़ाया और विद्यालय के बाद भी मेहनत करके उनकी कॉपी चेक की। एक महीने बाद वह सैलरी मांगने पंहुचा तो यह कहा गया कि आपकी एक महीने की सैलरी विद्यालय के पास रहेगी, क्योंकि यह विद्यालय का नियम है। फिर अगले महीने से गर्मियों की छुट्टी हो गई।

विडम्बना यह है की इक्का दुक्का विद्यालयों को छोड़कर अन्य विद्यालय गर्मियों की छुट्टी का पैसा भी नहीं देते इन दो महीनों में शिक्षक पूर्ण रूप से बेरोजगार होता है और विद्यालय खुलने की राह देखता रहता है। उसके लिए छुट्टियां मनोरंजक नहीं बल्कि मानसिक अवसाद लेकर आती हैं। बहरहाल फिर उसे कहा गया कि सैलरी आपको तीसरे महीने काम करने के बाद मिलेगी। काफी विनती करने के बाद मेनेजर ने यहाँ तक कह दिया कि गेट आउट जबकि वह अपने द्वारा की गयी मेहनत का पैसा मांग रहा था। उसके बाद भी उसे १५ दिन की सैलरी दी गई ३५०० और यह कहा गया कि आपको नौकरी छोडने से पहले एक महीने का नोटिस देना पड़ेगा। जिससे कि वह हमारी एक महीने की सैलरी और मार सके।

विद्यालय में ज्यादातर शिक्षक अनट्रेंड हैं और विद्यालय जानता है कि ये कैसे भी, किसी भी हालत मे पढ़ाते रहेंगे। कुछ शिक्षक तो ९-१० हजार में कई साल से पढ़ा रहे हैं। यह हाल तो सी.बी.एस.ई का है। हिंदी मीडियम की दशा तो और भी दयनीय है, जिसमें विशेषकर हिंदी विषय का शिक्षक जो देश की मातृभाषा पढ़ा रहा है जिसके लिए हिंदी दिवस जैसे बड़े-बड़े राज्यस्तरीय व राष्ट्रस्तरीय कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, बड़े-बड़े मंत्रियों से लेकर प्रधानमंत्री तक बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन परिणाम शून्य! न भाषा का कोई भला हो रहा है और न ही उस भाषा को पढ़ाने वाले शिक्षक का। कैसी विडम्बना है! स्थिति सचमुच दयनीय और शर्मनाक है। ■

एक कदम स्वच्छता की ओर

रमेश कुमार सिंह 'रुद्र'

'जन जन का साथ हो तो हर कार्य आसान हो' कहा जाता है, लेकिन सहयोगात्मक भाव से जब कोई कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता है तो एक अलग ही खुशनुमा पल का अहसास होता है। यह अहसास लोगों के ऊपर अमिट छाप छोड़ जाता है। यही अहसास हर दिल को लम्बे समय तक के लिए सुखमय बनाता है। इसी वक्त हृदय में सुनहरा ख्वाब अच्छे भाव जाग्रत हो उठते हैं और इसका सीधा प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। एक स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। स्वस्थ समाज ही स्वच्छता का प्रतीक होता है।

इसी को दृष्टि में रखते हुए केन्द्र सरकार की ओर से 'एक कदम स्वच्छता की ओर' स्वच्छता अभियान चलाया गया। यह अभियान हमारे जिले रोहतास के जिला पदाधिकारी की ओर से जोर-शोर से चलाया गया, जिसमें विद्यालय के बच्चों एवं राज्यकर्मी सभी ने इस अभियान में हाथ बँटाया, चाहे वो प्रचार-प्रसार का माध्यम हो या शौचालय निर्माण करवाने की सरकार की नीति हो।

जिलाधिकारी रोहतास सभी प्रखण्डों व पंचायतों को इस अभियान को सफल बनाने के लिए हर पल प्रोत्साहित करते रहे। आज चेनारी प्रखण्ड में पंचायत मल्हीपुर इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मैंने ३ अगस्त के दिन संकुल संयोजक श्री हिरामन साह के प्रतिनिधित्व में शिक्षकों और बच्चों के साथ रैली में भाग लेकर स्वच्छता की ओर एक कदम बढाने की बात ग्रामीण जनता को बतलाते हुए निरीक्षण करते हुए गाँव मल्हीपुर, लोहरा, ममरेजपुर, रामगढ़ भ्रमण करते हुए सत्याग्रह स्थल पर पहुँचा। इस पंचायत में अगस्त २०१३ से अब तक मैने जो अपनी आँखों से देखा-परखा तो मुझे स्वच्छता अभियान से पहले की अपेक्षा आज पूरी पंचायत स्वच्छ दिखाई दी। जिन रास्तों पर खुले में शौच के कारण पैदल चलना दुश्वार था, आज उस रास्ते पर स्वच्छ वातावरण का माहौल मिला। दोनों किनारे बिलकुल साफ-सुथरे नजर आये। यह सफाई नजर आना स्वच्छता अभियान को सफल होने की ओर इंगित करता है और सभी पदाधिकारी कर्मचारी विद्यार्थी की कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। इसे सफल बनाने में जिसने सबसे अहम भूमिका निभाई वह इस पंचायत की ग्रामीण जनता की जागरुकता और सहभागिता बखूबी झलक रही है।

इस पंचायत में वास्तव में सफाई अभियान एक चुनौती भरा कार्य था, जिसे सभी लोगों ने मिलकर स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए स्वच्छता की ओर एक कदम नहीं, बल्कि हजारों कदम आगे बढ़ाकर सफलता

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

जब आंखों के वीराने में घना अंधेरा छा जाता है
तब धुंधली परछाईं में भी ख्वाब सामने आ जाता है
जब रात गगन के आंचल में चांद सितारे भरती है
तब गगन का टूटा तारा मेरे मन को भा जाता है
मिश्री घुलती है कानों में जब झींगे झीं-झीं करते हैं
तनहाई के उस आलम में अजब नशा छा जाता है
ढूंढ़ा करता है ये मन कुछ चाहत की जागीरों में
यादों की गठरी से ही दिल कुछ ना कुछ पा जाता है
कुछ बोल सुनाई देते हैं, कोई आह सुनाई देती है
सुर दिल को छू जाते हैं
कोई जाने क्या गा जाता है
अब और उजाले क्या करना
'जानिब' इतने काफी हैं
मेरी राहों के सजदे में वो
चांद जमीं पे आ जाता है

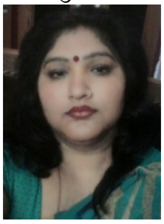

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

हवाओं की तरह तेरा मुझे छू जाना
जिस्म को मेरे जैसे महका जाना
बारिश की बूंदों सा वो अहसास
दिल को जैसे गहरे तक भिगो जाना
बेबसी का आलम न हमसे छिपाया गया
याद है होश में ही मदहोशी आ जाना
रूह तक अल्फाज ढूंढने लगे हैं मुझे
मुमकिन ख्वाब में ही तुझको पा जाना
बेनाम सी मोहब्बत दगा दे जाती है
मुश्किल है दिल मायूसी से बचा पाना

-- वर्षा वार्ष्णेय, अलीगढ़

नादान इस तरह से सारा जहान देखें
जैसे नसीब अपना जलता मकान देखें
तकलीफ आपको है हम भी समझ रहे हैं
पंछी को चाहिए वह अपनी उड़ान देखें
थे कहां से चले हम और खड़े हैं कहां पर
है यह बहुत जरूरी मिटते निशान देखें
मां-बाप कैसे होते औलाद कैसे समझे
है हो गया जरूरी फिर बागबान देखें
किस्से हो या कहानी कविता कोई पुरानी
सब में छिपा हुआ है अपना गुमान देखें

-- मनोज श्रीवास्तव

हमें ललकार सुनकर चाहिए हुशियार हो जाना
नहीं सोने का मौका साथियो बेदार हो जाना
ये हिन्दुस्तान की मिट्टी भले चन्दन सी शीतल है
बहुत मुमकिन है इसका वक्त पर अंगार हो जाना
उठे जब सरहदों से दोस्तो, इक शोर खतरे का
तो लाजिम है यहाँ हरएक गुल का खार होजाना
खनकती चूड़ियों को रख किनारे थाम लो खंजर
कसम है दुश्मनों के
सामने दीवार हो जाना
दिखाता आँख दुश्मन
सरहदों के पार से अक्सर
तो हरइक नौजवां का
फर्ज है तलवार हो जाना

-- आशा शैली

चले आओ कि तेरे बिन कहीं अच्छा नहीं लगता
कि सपने देखती तो हूँ मगर सच्चा नहीं लगता
बहुत कोशिश किया मैनें कि रह लूँ मैं तुम्हारे बिन
मगर तुम बिन मुझे जीना यहाँ पक्का नहीं लगता
चलो माना कि ये बंधन के धागे हैं अभी कच्चे
मगर दिल से जुड़ा धागा मुझे कच्चा नहीं लगता
कि रह रह कर धड़कता दिल तुम्हारे ही लिये मेरा
निगाहों को भी मेरे कोई
भी तुम सा नहीं लगता
कि यूँ तो चाँदनी भी
चंद्रमा की है प्रिया साजन
मगर सूरज किरण सा
कोई भी नाता नहीं लगता

-- किरण सिंह

वो झिलमिल सितारों वाली रात अच्छी थी
अनायास हो गई उनसे मुलाकात अच्छी थी
सोचते रहते थे नैन शामो-सहर जिसको
पहली बार मिले जब वो बरसात अच्छी थी
तुम्हारी तस्वीर से भी गुफ्तगू होती है कभी
गुजरे जो लम्हे तुम संग वो सौगात अच्छी थी
मिले खुशी या गम हमें अब कोई फिक्र नहीं है
दो कदम चले साथ
वो शुरुआत अच्छी थी
दिलों के दरम्यां न फासले
हों ये देखना तुम भी
तुम्हें देखकर जो शुरू
हुई वो प्रभात अच्छी थी

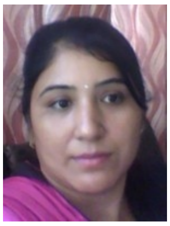

-- कामनी गुप्ता

जब खलिश बेपनाह होती है, लब पे इक सर्द आह होती है
जिंदगी जिसको दरबदर कर दे, मौत उसकी पनाह होती है
जुल्म होता है जब भी धरती पर, आसमाँ की निगाह होती है
इश्क का हश्र और क्या होगा, जिंदगानी तबाह होती है
पीठ पीछे बुराई की आदत, बद से बदतर गुनाह होती है
वो सराबों की जद में रहते हैं
जिनकी प्यासी निगाह होती है
निकले सूरत कोई उजाले की
रात लम्बी सियाह होती है
मिट गईं सारी चाहतें 'देवी'
एक बस तेरी चाह होती है

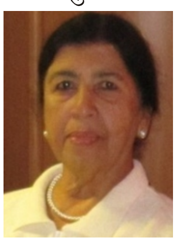

-- देवी नागरानी

नसीब में यूँ कभी न होता, नश्तर दिल में चुभा न होता
हमें दुश्मनी नहीं न आती, हाय! कि वह बेवफा न होता
किसी ने बुरा किया न होता, दिल भी इतना दुखा न होता
घातक घटना घटी क्योंकर, दिलवर मेरा चला न होता
दिल है मेरा कितना नाजुक
नासूर अभी हरा न होता
नफरत है अब रोशनी से
शब ने मुझको छला न होता
जिंदगी होती 'रश्मि' सुहानी
अगर वो मुझसे जुदा न होता

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

जिसको चाहा था तुम वही हो क्या?
मेरी हमराह जिंदगी हो क्या?
कल तो हिरनी बनी उछलती रही
क्या हुआ आज थक गई हो क्या?
ऐ बहारों की बोलती बुलबुल
क्यों हुई मौन बंदिनी हो क्या?
ढूँढ़ती हूँ तुम्हें ही उजालों में
तुम अँधेरों से जा मिली हो क्या?
महफिलें अब नहीं सुहातीं तुम्हें?
कोई गुजरी हुई सदी हो क्या?
क्यों मेरे हौसले घटाती हो
मेरी सरकार दिलजली हो क्या?
थी नदी चंचला उफनती हुई
सागरों से भला डरी हो क्या?
सुन रही हो कि जो मैंने कहा?
कोई फरियाद अनसुनी हो क्या?
'कल्पना' मैं कसूरवार नहीं
रूठकर जा रही सखी हो क्या?

-- कल्पना रामानी

खिदमत में अपनी माँ की गुजारा करेंगे हम
ऐसे बुलंद अपना सितारा करेंगे हम
आँसू बहाके अब न खसारा करेंगे हम
मिश्री सी जिंदगी को न खारा करेंगे हम
बनकर शजर मिलोगे हमें जब कभी भी तुम
ख्वाहिश के परिंदों को उतारा करेंगे हम
अब तो सुलह का रास्ता निकले कोई यहाँ
कब तक वफाओं से यूँ किनारा करेंगे हम
जब जब तुम्हारे दिल को सतायेगा गम कोई
तब तब तुम्हारे दिल
को सहारा करेंगे हम
सच बोलना गुनाह
समझते हैं सब अगर
ऐसा गुनाह फिर तो
दुबारा करेंगे हम

-- महेश कुमार कुलदीप

कहीं नजरों के वो इशारे कहाँ हैं
मिले गम में हमको सहारे कहाँ हैं
छुपाते हो दिल में कई राज अपने
अदाओं में तेरे अब शरारे कहाँ हैं
चला कोई जादू नजर का दिलों पे
तो हम भी दिलों को सँवारे कहाँ हैं
कहा चल दिये ऐसे पागल बनाके
हुस्न के तेरे सारे ही मारे कहाँ हैं
करें शोर सारी ये जालिम फजां अब
बचे उससे कोई नजारे कहाँ हैं
लगाते हो इल्जाम हमपे सदा ही
रहे फिर हम तुम्हारे प्यारे कहाँ हैं
गिराती बिजलियां दिलों पे ऐसी
तभी से ही खुद को सँवारे कहाँ हैं

-- राज सिंह रघुवंशी

ठहरा हुआ स्वप्न

चार पहिया वाहन की आवाज सुन बाहर जाकर देखा रक्षा ने। उसके अम्मा-बाऊजी ही थे। नौकर को गाड़ी से सामान उतारने को कहकर रक्षा भीगे नयनों से भीतर आ गई। सुबह माँ का फोन आने के बाद से ही वह पिछली बातों को याद करके कई बार रो चुकी थी। 'ओफ्फो माँ! एक ही तो बेटा है तुम्हारा, वह भी कुँआरा। फिर क्यों इतना सामान ठूँस रखा है रसोई में?' हाथों से तैयार किये अनाज, मसालों, पापड़, तरह-तरह के अचार, जेम-जैली आदि अनगिनत डिब्बों के ढेर को सुंदर करीने से सजा देखकर वह अक्सर माँ के रसोई प्रेम पर खीज उठती।

'कितनी बार कहा है तुझसे, भरी रसोई बरकत की निशानी होती है, रहा सवाल बहू का, तो दो चार साल में वह भी आ जायेगी।'

'बस माँ...' रक्षा हाथ जोड़कर हँस देती।

समय बीतते देर कहाँ लगती है। बेटा भी ब्याह योग्य हो गया 'बहुत खट लिया रसोई में, बहू आ जाये तो सब उसे सौंप सिर्फ राम-राम भजूँगी।' ऐसा कहते हुए अक्सर माँ के हाथ अपने घुटनों पर पहुँच जाते और वह उन्हें दबाने लगतीं।

'तुम भी न माँ, ना जाने कौन से युग में जी रही हो? आज की लड़की और चौका-चूल्हा? हूँ...।'

'खबरदार! जो मेरी बहू के लिए कुछ कहा तो...' प्यार भरी झिड़की दे माँ रक्षा को चुप करा देतीं।

आज उसी बेटे को इस दुनिया से गए पूरा एक माह हो गया। एक सड़क दुर्घटना और माँ के सारे स्वप्न खत्म। सुबह ही माँ ने सूचना दे दी थी, अपने आने की। ये कहते हुए, 'अब कोई वजह शेष नहीं है बेटी मेरे पास, इस गृहस्थी को सजाने-सहजने की। घर का अतिरिक्त सामान जो तुम्हारे काम आएगा, लेकर आ रही हूँ।' और रक्षा के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही फोन काट दिया था।

'बेटी, ये कुछ डिब्बे और क्रॉकरी वगैरह हैं किधर रखवा दूँ?' माँ की आवाज सुनकर रक्षा की तंद्रा टूटी। देखा, नौकर चादरों से बँधी पोटली लेकर पिताजी के साथ भीतर चला आ रहा था। न चाहते हुए भी वह आँसूओं के सैलाब को रोक नहीं पाई, फूट-फूटकर रोने लगी। उसे लगा एक बार फिर भाई का शव घर के भीतर लाया जा रहा है।

-- शशि बंसल, भोपाल

सरकारी माल

कांस्टेबल शैतान सिंह व दयाराम दो मोटे-तगड़ें वनमानुषों को घसीटते हुए लाये और दोनों को हवालात में बंद कर दिया।

सबइंस्पेक्टर अपनी कुम्भकरणी नींद से जागे और दोनों होनहार कांस्टेबलों को पास बुलाया- 'कहाँ से पकड़ लाये इन दो मुछतंडों को रे?'

शैतान सिंह सलाम ठोकते हुए बोला- 'सर एक ग्राम प्रधान है, दूसरा ग्राम कोटेदार। दोनों हरामखोर मिलकर सारा का सारा सरकारी माल चट कर रहे थे और अपन मतलब आपका-हमारा हिस्सा भी नहीं निकाल रहे थे, इसीलिए ससुरों को उठा लाये।'

'लाओ बाहर दोनों को अभी इनकी क्लास लेता हूँ।' इंस्पेक्टर साहब लाल-पीले होकर चिल्लाये।

'माई-बाप गलती हो गई अब आगे से औरों की तरह आपका भी हिस्सा आप तक पहुंचता रहेगा।' ग्राम प्रधान सिकुड़ते हुए चमचे वाले लहजे में गिड़गिड़ाया।

'चल ठीक है, अभी कितने देगा?'

'पूरे पचास हजार! इतने ही बच पाए हैं सबको दे के!' कोटेदार इंस्पेक्टर के पैर दबाते हुए गिड़गिड़ाया।

दस मिनट के बाद सरकारी टेबल के नीचे से सरकारी माल सरकारी जेबों में चला गया।

-- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

रक्षाबंधन

'छोटी नहीं आयी क्या राखी बांधने?' उसे मालूम था कि उसकी गरीबी के कारण छोटी बहन पिछले कई वर्षों से रक्षाबंधन पर उसे राखी बांधने नहीं आती। वह छोटे के यहाँ जाती है। शुभ महूर्त पर राखी बांधती है। छोटा भी उसको हर राखी पर खूबसूरत, कीमती उपहार और रुपया देकर उसका मान बढ़ाता है।

हर वर्ष की भाँति वह इस वर्ष भी शाम को छोटी के घर गया। राखी बंधवा कर शगुन के रूप में छोटी को पचास, बच्चों को दस-दस और उसकी सास को बीस रुपए देकर लगभग आधी रात को घर वापिस पहुँचा।

एक दिन अचानक खबर आयी, छोटी बहुत बीमार है। पत्नी के साथ वह छोटी से मिलने अस्पताल पहुँचा तो मालूम पड़ा कि छोटी की किडनियां काम नहीं कर रहीं। उसकी जान खतरे में है। छोटी को उम्मीद थी कि छोटा भाई कहीं से किडनी का इंतजाम कर देगा। वह बहुत रुपए पैसे वाला है। परंतु छोटे ने साफ किया कि वह किडनी का इंतजाम करने में सक्षम नहीं है। छोटी जीने की उम्मीद छोड़ चुकी थी।

उसने पत्नी के विरोध को सहते हुए भी अपनी एक किडनी छोटी को देकर छोटी के जीवन की रक्षा की।

छोटी सोच रही थी छोटे भाई ने तो हर राखी पर साथ ही राखी की कीमत चुका दी थी, शायद इसलिए वह उसका इलाज करवाने में अक्षम था।उसने कभी गरीब बड़े भाई का सम्मान नहीं किया। फिर भी उसने किडनी देकर राखी के बंधन का सही अर्थ समझा दिया।

-- विजय 'विभोर'

सुरक्षा का ध्यान

सुशील मुम्बई के नजदीक उपनगर विरार में रहता था। उसके ताऊ गांव से मुम्बई घूमने के इरादे से उसके यहां आए हुए थे। सुशील के साथ मुम्बई के दर्शनीय स्थलों की सैर करते हुए उसके ताऊ गगनचुम्बी इमारतें और लोगों की भीड़भाड़ के साथ ही सड़कों पर चमचमाती गाड़ियों की कतारें देखकर विस्मित थे।

शाम के समय दादर में प्रभादेवी स्थित सिद्धि-विनायक गणेश जी के दर्शन कर घर वापसी के लिए दोनों दादर रेलवे स्टेशन पहुंचे। प्लेटफार्म पर लोगों की भारी भीड़ और ट्रेन में घुसने के लिए लोगों की धक्का-मुक्की देखकर ताऊ की हिम्मत जवाब दे गई। ट्रेन में घुसने के चक्कर में वे कई ट्रेन छोड़ चुके थे।

निराश ताऊ को समझाने की नीयत से सुशील ने कहा- 'ताऊ जी! यहां तो ऐसे ही जबरदस्ती घुसना पड़ता है। कोशिश नहीं करेंगे तो आधी रात तक यहीं खडा रहना पड़ेगा।'

'ठीक कह रहे हो बेटा! लेकिन मेरा मानना है, कोशिश करके ट्रेन से लटक कर यात्रा करते हुए कहीं और पहुंचने से बेहतर है कि चुपचाप यहीं खड़ा रहा जाये।' ताऊ ने दृढ़ता से जवाब दिया।

-- राजकुमार कांदु

बेटियां : एक ताना

'क्यों बाप की छाती पर बैठी है?' दादी १२ वर्षीय पोती प्रिया को दहलीज पर बैठे हुए देखकर बोली, 'कितनी बार कहा है दहलीज पर मत बैठा कर!'

'मेरा बाप है कहीं भी बैठूं, आप कोसना बन्द कीजिए, मैं लडकी हूं तो?'

'हे भगवान्! मेरे बेटे की तो किस्मत ही फूट गई, जो बहू मिली तो बेटियां पैदा करने की मशीन और बेटियां भी मुंहफट, मैंने तो पहले ही कहा था गिरा दे, पर मेरी सुनता कौन है?'

प्रिया गुस्से में छत की तरफ बढ़ गई.

'कहां चली?'

'मरने!'

कुछ सोच वापस आ गई।

'क्या हुआ? इरादा बदल गया?' व्यंग्य चालू था।

'पहले आपकी पुलिस में रिपोर्ट कर दूं, वरना मेरे मरने के बाद आपकी रिपोर्ट कौन करेगा?'

'इत्ती सी छोरी इतनी बड़ी बात कर रही!'

'और आप इतनी बड़ी होकर मेरी पेट में ही हत्या की प्लानिंग कर रही थी वो...?' आगे मां के डांटने पर चाहते हुए भी कुछ न बोल पाई।

-- रजनी विलगैयाँ

विश्व स्तन पान दिवस

कल्पना भट्ट

विश्व स्तन पान दिवस १ अगस्त को विश्व भर में मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है माताओं को स्तन पान के लिए जागरूक करना। जी हाँ! एक शिशु के लिए स्तन पान कितना जरूरी है यह हम और आप सभी जानते हैं। फिर क्या कारण है इस दिन को मनाने का? सोचा जाए तो कुदरत का कैसा करिश्मा है यह कि शिशु को जन्म देते ही माँ के स्तन से दूध निकलने लगता है। सोचो तो मातृत्व का अनुभव कितना अद्भुत सुखद अनुभव होता है।

शिशु के जन्म के साथ ही जो प्रथम दूध माँ पिलाये तो वह बच्चे के लिए लाभकारी होता है। आप सब कहेंगे- लो, ये भी शुरू हो गई वैज्ञानिक दृष्टिकोण समझाने। जी नहीं मेरा ऐसा कोई आशय नहीं है। मैं यह कहना चाह रही हूँ कि माँ और शिशु का रिश्ता तो गर्भधारण से ही शुरू हो जाता है। हम कहते हैं न छाती से लगाने से क्या होता है? छाती से लगाने से प्रेम का बीज रोपित होता है, शिशु अपने माँ के दिल के धड़कन को समझता है। स्तन पान से उसकी भूख भी मिटती है और साथ ही माँ के आगोश में खुद को सुरक्षित भी महसूस करता है। और एक माँ के लिए भी तो यह एक सुखद अनुभव होता है, उसके कलेजे के टुकड़े को कलेजे से लगाना और उसको अपना दूध पिलाना। पर सवाल यह उठता है, आज तो हम सभी पढ़े-लिखे लोग है, क्या हम नहीं समझते यह सब?

देखा जाए तो आज की तेज रफ्तार वाली जिन्दगी में हम महिलायें भी क्या क्या करें ? कई महिलाओं से सुनते हैं कि स्तन पान से अपने शरीर का आकार बदल जायेगा, कोई कहता है आज कल बच्चों को पैदा करना तो आसान है पर उनकी परवरिश करना बड़ा मुश्किल। घर देखना है, नौकरी करनी है, सोशल लाइफ भी होती है, और फिर शरीर में ताकत कहाँ बचती है जो बच्चे को दूध भी पिलायें।

दलील यह भी होती है कि पहले की महिलाओं को नौकरी नहीं करनी पड़ती थी, उनको दिन भर घर में ही तो रहना होता था, तो उनके पास समय ही समय था। पर क्या वास्तव में ऐसा था? जरा पीछे मुड़कर देखें। कुँए से पानी भरना, हाथों से गेहूं पीसना, चूल्हे पर रसोई बनाने से लेकर बर्तन मांजना, कपडे धोना सभी तो खुद करती थी। उस दौरान आज के जैसे आधुनिक उपकरण तो थे ही नहीं, न ही कोई झूला घर हुआ करता था। तो क्या वे कभी बीमार नहीं होतीं थी, क्या उनकी कोई सोशल लाइफ नहीं होती थी, क्या उनकी पर्सनल लाइफ नहीं थी? फिर आज क्या हो गया है? क्या वे माताएँ ऐलियंस थी, क्या उनका मन अलग था? क्या वे फिगर कौन्सियस नहीं थी, क्या आपको आपकी माँ ने दूध नहीं पिलाया था?

यह आखिर हम क्या सोच रहे हैं? पढ़े-लिखे हैं, सब समझ रहें हैं, फिर भी गलतियां करने से बाज नहीं आ रहे हैं। स्तन पान कराकर तो देखें, यह तो ईश्वर की वह देन है, जो सिर्फ और सिर्फ एक औरत को ही बख्शी गयी है।

एक बीज को अंकुरित होने के लिए, पानी और पौष्टिक खाद की जरूरत होती है, साथ ही शुद्ध और उपजाऊ मिट्टी की। आप अपने में झाँककर देखें, अपने अंदर की मातृत्व को जगाएं। स्तन पान का सुख लें और अपने शिशु को अपना ही दूध पिलायें जब तक कि वह खुद से खाने पीने नहीं लगता। इससे आप बहुत सारी बीमारियों से खुद को और अपने शिशु को बचा सकती हैं। और अपने कलेजे के टुकड़े की अंतर आत्मा से खुद को जोड़ सकती हैं।

बच्चा पैदा करने से ही आप माँ नहीं बनती, माँ बनना तभी सार्थक होता है, जब आप स्तन पान कराती हैं। आप पूर्ण रूप से तभी माँ कहलाएंगी। जब कुदरत ने हमें और सिर्फ हमें यह वरदान दिया है तो हम अपना यह अधिकार खुद क्यों खोना चाहती हैं? हम और आप ने भी अपनी माँ का स्तन पान किया है। यह दिवस एक दिन का नहीं हर दिन का है। आओ मिलकर स्तन पान के सुख का अनुभव करें और खुद को धन्य करें। ■

मोदी मत बनो!

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

७० साल बीत गए ठकुरसुहाती करते करते लेकिन कुत्ते की दुम सीधी नहीं हुई और जो जिन्ना कहने से बचते रहे अब आजाद भारत में कन्हैया और उसके साथी कह रहे हैं, राहुल कह रहे हैं, केजरीवाल कह रहे हैं, ममता और फारुख कह रहे हैं, सारे कांग्रेसी अप्रत्यक्ष रूप से कह रहे हैं। सहिष्णुता, असहिष्णुता अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर राष्ट्रद्रोह की एक फिजा तैयार की जा रही है।

जितना कभी लोग मुगलों और अंग्रेजों के खिलाफ नहीं बोल रहे थे अब राष्ट्रवाद के खिलाफ बोल रहे हैं। राजनीतिज्ञों, प्रबुद्धों, अल्पअक्षरज्ञानियो में राष्ट्र के खिलाफ बोलने की एक होड़ लगी हुई है। विधायक सांसद बनने का यह एक शार्टकट रास्ता बन गया है।

पाकिस्तान जो आजादी से पहले दुनिया के नक्शे में था ही नहीं, उसने आजादी के बाद पाकिस्तान बनते ही रातों-रात अपने यहाँ के सारे नदी नालों राजभवनों राजमार्गों का नाम बदल दिया और यह संप्रभुता संपन्न भारत आजतक औरंगजेब रोड का नाम बदलकर अब्दुल कलाम मार्ग नहीं कर पाया। राम मंदिर, काशी मथुरा, धारा ३७०, यह तो बहुत दूर की कौड़ी है। क्योकि मोदी विरोधियों को देश गवाना मंजूर है, लेकिन सेक्युलरिज्म गवाना मंजूर नहीं!

आज सेक्युलरिज्म और आरक्षण देश की एकता अखंडता के लिए भस्मासुर बन चुके हैं। अल्पसंख्यक जो अपने को यहाँ असुरक्षित महसूस करता है, उसे यहाँ बहुत डर लगता है। एक विधायक शरिया का हवाला देकर कहता है कि वन्दे मातरम् नहीं बोलूंगा, सर कटा दूंगा। जबकि चीन में नमाज पढ़ने तक पर पाबंदी है, पश्चिमी देशो में हिजाब पहनने की मनाही है, लेकिन न तो वहा कोई सर कटाता है न शरिया का हवाला देता है। सारा शरिया कानून हिन्दुस्तान में ही लागू होता है।

बिहार में एक मुस्लिम मंत्री जब 'जय श्री राम' का नारा लगाता है तो उसके ऊपर तुरंत फतवा जारी हो जाता है, उसे माफी मांगनी पड़ती है। कन्हैया के साथ हजारों लोग जुट जाते हैं, कसाब के जनाजे में दसों हजार इकट्ठा हो जाते हैं, लेकिन खुर्शीद के साथ कोई नहीं है। मैंने अपने एक बहुत प्रबुद्ध मित्र से पूछा कि मुसलमान यहाँ बहुत डरा हुआ महसूस करता है फिर क्यों गाहे बगाहे कोई न कोई मुसलमान बहुत कठोर भाषा बोल जाता है? उसे डर क्यों नहीं लगता?

मित्र बोला कि तुम्हें गलत फहमी है, कोई मुसलमान डरा हुआ नहीं है, वह तो जो कुछ बोलता है हिन्दुओं को आजमाने के लिए बोलता है। उसके साथ सारे कट्टरवादी मुसलमान हैं, कांग्रेस है, ममता, मायावती हैं, सारे सहिष्णु बुद्धिजीवी और अभिव्यक्ति की आजादीवादी हैं। हिन्दुओं के साथ कौन है?

मोदी बनने की कोशिश मत करो! मोदी निश्चित तौर पर देश के लिए राष्ट्रीय स्तर और वैश्विक स्तर पर बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, लेकिन यह २०१९ तय करेगा कि मोदी ने अच्छा काम किया या बुरा? जब सारे अल्पसंख्यक, सारे मुफ्तखोर, सहिष्णु-असहिष्णु वादी मिलकर लालू, राहुल, केजरीवाल, मायावती, ममता के नेतृत्व में मोदी पर हमला बोलेंगे। मोदी के कर्म और देश की दशा-दुर्दशा का फैसला २०१९ में होगा।

मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि सब कुछ गँवाने के बाद और भ्रष्टाचार में बुरी तरह फंसे रहने के बावजूद अगर लालू, मायावती, ममता, केजरीवाल, राहुल दहाड़ रहे हैं, तो इसलिए कि निश्चित तौर पर उन्हें अपने जातीय तथा साम्प्रदायिक वोट बैंकों और कन्हैयाओं पर पूरा विश्वास है।

इसलिए मैं कहता हूँ कि मोदी मत बनो! मोदी बनने के लिए माँ, पत्नी, घर परिवार सब छोड़ना पड़ता है, जबकि लालू, मुलायम, राहुल बनकर भी सत्ता सुख भोग जा सकता है। ■

कविताएं

जो कही बात को/बिना कहे कहते हैं
उत्तरा हवा की तरह मडराते हुए
बन्दूक की गोली की तरह छूटते जाते हैं
फिर भी कोई राज नहीं खोलते/अपनी बेबसी का
कानाफूसी करने वाले/वे शहर के नये अजनबी
गांव के पढाकू से रोज चिढ़ते हैं
वे इसी में रोज-रोज थकते हैं
बड़ी जाति के होने का दम्भ
कोठी वाले होने का अहंकार
जमाने की हर को ठेंगा दिखाते
थकते हैं कोल्हू के बैल की तरह
विवशताओं में भी पतझड़/उगते सूरत की तरह
लालिमा लिए नई फसल/और फल का दलित साहित्य
जब भी वे पढ़ते हैं/रोज-रोज थकते हैं!

-- अखिलेश आर्येन्दु

मेरी रूह/तेरे रूह की पैरहन में लिपटे
खामोश फिजा में/कुछ इस तरह सिमटे
दिल की खिलाफत/एक-एक लम्हें की अदायगी
तेरे यादों की सिलवटें/मुझमें मुझी को करें जुदा
धड़कनों की आहटें/साँसों की ये बंदिशें
इश्क और यही दीवानगी/तेरे वादों पे मिटते
राहत को तरसे/आँखों की सुर्ख मिलावटे
अश्कों का सैलाब/जमाने की नजर में आवारगी
तेरे दर्द के बिखरें छींटे/खुशी के पलों पे ठहरें
तन्हाई कांटे न कटे
हर्फो से जाने क्यों उलझे
तेरे अहसास को पलटे
खामोश ख्वाहिशों को
शाम के पहर लिखते रहे
रूह के पैरहन में लिपटे
नंदिता में सिमटे तेरे रूह की सादगी...

-- नंदिता तनुजा

पहले तन मन की आजादी थी
सुबह निकल घरों से घूमा करते थे
मस्त वादियों में दाना चुगकर आ जाया करते थे
घरों को खुला छोड़कर,
हम सब पक्षीजन जो मण्डल में चहका करते थे!
प्यार से बुलाकर मानव पहले स्पर्श किया करते थे
अपने खाने से पहले हमें खिलाया करते
जब कहीं जाते थे वे बाहर
हृदय मन में पीड़ा उठती
फिर भी हजार सामान लाते!
चारों तरफ एक प्रेम स्वतंत्रता थी
धरती वृक्ष बगीचे में घूमकर
कली-कली चहका करती थीं
हर कोई देख मुस्कुराता
हमारे न रहने पर बच्चों को दूध पिलाता !
अब लोग मानव से दानव हो गए
सारे के सारे अरमाँ खाक हो गए

-- संतोष पाठक

ग़ज़लें

क्यों नहीं करूँ मैं मोदी की जय जयकार
मुस्लिम बहनों के साथ खड़ी रही सरकार
सुप्रीम कोर्ट में बहनों की आवाज बुलंद की
इमाम मौलवियों पर किया तथ्यों का प्रहार
देखो तीन तलाक का जमकर विरोध किया
हो रहा था मुस्लिम बहनों का जीना दुश्वार
जब तक चाहा भोगा फिर दे दिया तलाक
एक झटके में बना दी जाती थीं वे लाचार
वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठकर
बंद करवाया तीन तलाक का अत्याचार
आजादी मिली बहनों को तीन तलाक से
अब छाएगी जीवन में खुशियों की बहार
सुप्रीम के तीनों जजों का भी अभिनंदन है
जिन्होंने दिया इसको असंवैधानिक करार
नतमस्तक है आज सुलक्षणा भी चरणों में
कर रही है मोदी जी का शुक्रिया बारम्बार

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

इतना न हमें याद आया करो, हर जगह न यूं सताया करो
रोज होती है लड़ाई हमसे, प्यार फिर न जताया करो
घड़ी दो घड़ी जहन से मेरे, दूर कहीं चले जाया करो
मचल उठती है हसरतें मेरी, गली से न गुजर जाया करो
हो जाती हैं धड़कनें जवां, तरस इनपे जरा खाया करो
इश्क जानम बुरी चीज है, सर इसको न चढ़ाया करो
कटती नहीं याद में रातें, पहलू में नजर आया करो
चांद भी रूठ जाता है हमसे
नजरें न हमसे मिलाया करो
है नकाब चेहरे पे हमारे
हमसे न टकरा जाया करो
देंगे ताना ये जमाने वाले
जरा नजरें तो झुकाया करो

-- प्रीती श्रीवास्तव

यहाँ जिंदगी का सफर देखते हैं
जहाँ को तुम्हारा ही घर देखते हैं
नजर भी तुम्हीं हो नजारा तुम्हीं हो
तिरे नूर का ही असर देखते हैं
यहाँ आसमाँ से दुआ आ रही है
नजर को उठाकर जिधर देखते हैं
सुमन जिंदगी का महकता रहेगा
नशा तेरा हम आँख भर देखते हैं
करूँ रात दिन अब तुम्हारी इबादत
सदा रूह को हम अमर देखते हैं

-- जयंती सिंह 'मोहिनी'

मुक्तक

आँकड़ों के इस गणित के कुछ अलग निहितार्थ हैं
शून्य-सी संवेदना आकाश जैसे स्वार्थ हैं
हंस तक को तीर लगने पर तड़पता था हृदय
एक वो सिद्धार्थ थे तो एक ये सिद्धार्थ हैं

-- प्रवीण श्रीवास्तव 'प्रसून'

कुंडली

अपने पुरखों ने कही, बड़ी तथ्य की बात
व्यर्थ खर्च करना नही, व्यर्थ स्वयं से घात
व्यर्थ स्वयं से घात, कष्टमय जीवन होता
पाता वह ही धान, खेत में जो है बोता
सुनो! सुमन उत्कर्ष, अधूरे मन के सपने
छोड़े जग सब साथ, त्याग देते सब अपने

-- नवीन श्रोत्रिय 'उत्कर्ष'

दोहे

हिन्दी हितकर है सदा, हिन्दी इक अभियान।
हिन्दी में तो आन है, हिन्दी में है शान।।
हिन्दी का उत्थान हो, हिन्दी का सम्मान।
हिन्दी पर अभिमान हो, हिन्दी का गुणगान।।
हिन्दी तो समृद्ध है, हिन्दी है सम्पन्न।
हिन्दी माने हीन जो, वह नर सदा विपन्न।।
हिन्दी में सामर्थ्य है, हिन्दी में है तेज।
हिन्दी तो सचमुच सरल, क्षमता से लबरेज।।
हिन्दी है भाषा बड़ी, संस्कार की धूप।
हिन्दी है हितकर सदा, दास होय या भूप।।
कला और साहित्य है, पूर्ण करे अरमान।
हिन्दी में है उच्चता, 'शरद' सभी लें मान।।

-- प्रो. शरद नारायण खरे

गीत

गुमसुम-गुमसुम रहते हो क्यों? दिल की बात न कहते हो क्यों?
अपनों सँग संकोची बनकर, ऐसे नहीं जिया जाता है
ऐसा नहीं किया जाता है
अपने पर यों घात करो मत, अभी दिवस है रात करो मत
अमृत अगर नहीं मिल पाये, तो क्या जहर पिया जाता है?
ऐसा नहीं किया जाता है
तन्हाई को काटो-छाँटो,
अपना गम अपनों सँग बाँटो
सदा निभाते सँग जो, उनको
क्या सँग नहीं लिया जाता है?
ऐसा नहीं किया जाता है

-- डॉ कमलेश द्विवेदी

गुदगुदा प्यार में कभी जाता, गुनगुना कान में कभी जाता
आके चुपके से कभी कुछ कहता, साँवरा हरकतें अजब करता
गजब की बाँशुरी सुना जाता, कभी वह नजर भी कहाँ आता
अदद अंदाज से कभी मिलता, कभी बंदा नवाज बन जाता
नब्ज हर वक्त देखता रहता, धड़कनें हृदय की सदा सुनता
छिपा उससे कहाँ है कुछ रहता, सोचा जो उर में वो भी सुन लेता
सोचने भी कभी कहाँ देता, किए प्रस्तुत यथेष्ट वह रहता
यथोचित देता कभी हर लेता,
हार पर मानने कहाँ देता
रुला कर गोद तुरत ले लेता,
अहं को आँकते क्रिया करता
शुद्ध 'मधु' मानसी चक्र करता,
सुदर्शन चक्र भी कभी लखता

-- गोपाल बघेल 'मधु'

धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं होती

मनमोहन कुमार आर्य

आजकल संसार के अधिकांश मनुष्य धन की ओर भाग रहे हैं। अपने ही देश भारत की बात करें तो यह बात ९९.९ प्रतिशत सत्य है। इसी कारण अतीत में देश में घोटाले पर घोटाले होते रहे। आज भी कई राजनीतिक नेताओं के घोटालों की चर्चा होती रहती है। अनेक सरकारी विभागों में रिश्वत चलती है। नई सरकार के आने के बाद भी उस पर कहीं असर पड़ा दिखाई नहीं देता। ऐसा लगता है कि यह लाइलाज रोग है। दूसरी ओर कठोपनिषद के ऋषि कहते हैं कि 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्वा।' अर्थात् मनुष्य धन व ऐश्वर्यों आदि की प्राप्ति व उनके भोग से तृप्त नहीं हो सकता। ये शब्द कठोपनिषद में बालक नचिकेता ने यम द्वारा उन्हें प्रलोभन देने के उत्तर में कहे हैं। वैदिक सिद्धान्त भी इस बात को सत्य स्वीकार करता है कि केवल धन की प्राप्ति हो जाने से ही मनुष्य तृप्त व सन्तुष्ट नहीं हो सकता।

आज देश में अनेकानेक करोड़पति, अरबपति, खरबपति महानुभाव विद्यमान हैं। इनके पास अकूत धन हैं। क्या ये सन्तुष्ट व तृप्त हैं? नहीं। इन सभी को पहली चिन्ता तो अपने व्यापार में वृद्धि व सफलता की है। अपने स्वास्थ्य व बढ़ती उम्र से भी सभी चिन्तित रहते हैं। कालान्तर में अपनी व परिवारजनों की मृत्यु का भी इनको भय है। महर्षि दयानन्द को भी इस बात की फिक्र रहती होगी कि उन्हें वेदभाष्य के काम को पूरा करना है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, परतन्त्रता, सामाजिक सद्भाव, फलित ज्योतिष, दलितोद्धार, बाल विवाह उन्मूलन जैसी अनेक समस्यायें उन्हें विचलित करती थी। वे इन्हें समाप्त करना चाहते थे, परन्तु लोग अपने स्वार्थों के कारण उनके साथ आने को तैयार नहीं थे। यह तो एक विद्वान, ऋषि व योगी होने पर उनकी स्थिति थी।

लेकिन धन के बारे में तो सत्य है कि यह हमें रोटी, कपड़ा व मकान तो दे सकता है परन्तु इससे मन का सुख व शान्ति प्राप्त नहीं की जा सकती। पैसा खर्च करके अपराधियों व अन्य विडम्बनाओं से बचा नहीं जा सकता। अतः वित्त से मनुष्य की तृप्ति नहीं हो सकती, यह सिद्धान्त सत्य है। यह भी विचारणीय है कि भले ही पैसे से मनुष्य की तृप्ति न हो, परन्तु एक सीमा तक तो मनुष्य के पास धन होना ही चाहिए, जिससे वह भोजन, आश्रय, शिक्षा, चिकित्सा व सुरक्षा प्राप्त कर सके। इससे अधिक धन किस काम का है? मनुष्य अपना सारा जीवन धनोपार्जन में लगा देता है परन्तु इस चक्कर में वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सहित परोपकार, ईश्वर प्राप्ति व यज्ञ आदि कार्यों से दूर होने के कारण बहुत कुछ खो देता है, जिसकी आपूर्ति अनेक जन्म लेकर भी सम्भव नहीं है। यह भी आश्चर्य है कि जिस धन को मनुष्य ने रात-दिन परिश्रम करके कमाया होता है, वह मृत्यु के समय साथ नहीं जाता, यहीं रह जाता है और वह परिवार में कलह का कारण भी बनता है।

सन्तुलित जीवन में मनुष्य के पास आवश्यकता के अनुसार धन होना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को प्रयत्न भी करना है। परन्तु सारा प्रयत्न धन के लिए ही न होकर स्वाध्याय, तप, ईश्वर का ध्यान व चिन्तन, आसन व प्राणायाम सहित देव यज्ञ व पंचमहायज्ञों के लिए भी समय देना आवश्यक है जिससे इनसे होने वाले लाभों से मनुष्य वंचित न हो। जो लोग जीवन में अध्यात्म को प्रथम स्थान पर रखकर धर्मानुसार धनोपार्जन करते हैं वे मनुष्य वस्तुतः धन्य हैं। ऐसे महान् लोगों में राम, कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द, श्रद्धानन्द जी आदि अनेक नाम इतिहास में मिलते हैं। इन लोगों का जीवन आदर्श था। इन्होंने अपने जीवन में जो कार्य किये उससे शिक्षा लेकर आज की परिस्थितियों के अनुसार मनुष्यों को अपने कर्तव्यों का निर्धारण करना चाहिए।

इस कार्य में सहायता के लिए मनुष्यों को एक बार सत्यार्थप्रकाश सहित ऋषि दयानन्द के साहित्य का अध्ययन कर लेना चाहिए जिससे अपने कार्य, लक्ष्य व व्यवसाय आदि के निर्धारण में सहायता हो सकती है। ऐसा कार्य व व्यवसाय कदापि नहीं करना चाहिए जिससे मनुष्य को जीवन में अशुभ कर्म करने पड़ें। मांस, शराब, अण्डे, मछली, सट्टा, चोर बजारी, झूठ का कारोबार, धोखाधड़ी, मिलावट, घूस जैसे कार्य कदापि नहीं करने चाहिए। मनुष्य शिक्षा प्राप्त कर योग्य शिक्षक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, इंजीनियर, कृषक, व्यापारी आदि के कार्य कर सकता है जिससे वह सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सके। इनके साथ वैदिक धर्म का पालन भी कर सकते हैं जिससे अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति होती है। कर्मों का निर्धारण करते हुए उनके शुभ-अशुभ होने पर विचार कर लेना चाहिए। वैदिक साहित्य भी मनुष्यों के दैनिक स्वाध्याय में सम्मिलित होने चाहिए। वेद विरुद्ध ग्रन्थों का त्याग ही जीवन को ऊपर उठाता है।

वित्त, अर्थ, धन, ऐश्वर्य एवं सांसारिक भोगों से मनुष्यों की तृप्ति कभी नहीं होती अपितु इन कार्यों से तो मनुष्य की आयु का क्षय होना ही सम्भव है। यौगिक जीवन ही श्रेयस्कर है जिसमें धर्म मार्ग पर चलकर देश व समाज हित के कार्यों को मनुष्य करता है। अतः मनुष्य को वित्त से जीवन को होने वाले लाभ व हानि पर धर्माधर्म को को केन्द्र में रखकर विचार करना चाहिए। यदि देश की बात करें तो देश के अधिकांश लोग आर्थिक अभावों में ही जीवन व्यतीत करते हैं। इसका एक कारण देश के धनवान लोग हैं। देश का अधिकांश धन कुछ ही लोगों के यहां एकत्रित हो जाने से यह स्थिति उत्पन्न हुई है। इसका उपाय वैदिक धर्म में 'दान' को बताया गया है। मनुष्य को चाहिए कि उसके पास यदि आवश्यकता से अधिक धन हो या न हो, जितना वह अर्जित करता है, उसका शतांश वैदिक धर्म की उन्नति के लिए सत्पुरुषों व सुपात्रों को अवश्य दान देना चाहिए।

सुपात्रों को दान देने से व्यक्ति का धन कम नहीं होता अपितु बढ़ता है। दान की प्रवृत्ति का लाभ इस जन्म के साथ परजन्म में भी मिलता है। आर्यविद्वान् श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, आगरा अपने उपदेश में तर्क व प्रमाणों के साथ कहते हैं कि सुख-सुविधाओं से युक्त किसी धनवान सेठ के परिवार में एक सन्तान पैदा होती है तो वह जन्म के साथ ही सेठ बन जाती है। अपने पिता व दादा की करोड़ों की सम्पत्ति में उत्तराधिकार उसे पहले दिन से ही प्राप्त हो जाता है। नौकर चाकर व परिवार के लोग उसकी छोटी से छोटी सुविधा का ध्यान रखते हैं। डाक्टर समय समय पर उसकी परीक्षा करते रहते हैं और उसे किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होने देते। दूसरी ओर ऐसे बच्चे भी जन्म लेते हैं जिनके पास मां का दूध व न्यूनतम सुविधायें भी नहीं होती। यह अन्तर पूर्व जन्म में दान के रूप में किया गया निवेश ही होता है। इसके अतिरिक्त इसका कोई कारण नहीं है।

जीवन कैसे जिया जाये, इसके लिए महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने चाहिए। कोई व्यक्ति जिसको अपना आदर्श मानता है, वह पूर्ण नहीं तो कुछ-कुछ वैसा ही बन जाता है। हमें महर्षि दयानन्द और उनके प्रमुख शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती आदि के जीवन चरित्र पढ़ने चाहिए और उनके जीवन की शिक्षाओं व आदर्शों को अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए। ऐसा करके हम अशुभ कर्म से बचते हुए शुभ कर्मों की पूंजी एकत्र कर सकते हैं। धन की शोभा दान से ही होती है। यदि किसी के पास धन है और उसके आस-पास के लोग अशिक्षित और अज्ञानी है, तो उस व्यक्ति का धन किस काम का? वह तो मिट्टी का ढेला ही सिद्ध होता है। ऐसा समाज ही पतन को प्राप्त होता है।

वेद ने कहा है कि मनुष्य त्यागपूर्वक भोगों का भोग करे। आवश्यकता से अधिक भोग न करें और धन व भौतिक साधनों के संग्रहकर्ता अर्थात् पूंजीपति न बने। यह धन मनुष्य का नहीं परमात्मा का है और उसने इसे अपनी समस्त प्रजा, मनुष्य व इतर प्राणियों के लिए उत्पन्न किया है। धनवान व्यक्तियों को इस तथ्य को भूलना नहीं चाहिए। माता-पिता के तप व पुरुषार्थ से एक योग्य सन्तान का जन्म व पालन होता है और एक आचार्य के तप, पुरुषार्थ व विद्यादान से एक योग्य शिष्य व विद्वान् तैयार होता है जो देश व समाज का उपकार करता है। महर्षि दयानन्द और उनके शिष्यों ने यही कार्य किये हैं। तप व दान एक दूसरे के पूरक हैं और सुपात्रों को दान देने से समाज में उन्नति होती है। धन की तीन गति होती हैं- प्रथम भोग, दूसरा दान और तीसरा नाश। अर्जित धन का भोग कर लो, जो बचे उसे दान कर दो अन्यथा यह धन ही मनुष्य के नाश का कारण बनता है। धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं होती, यह सन्देश समाज में प्रसारित किया जाना चाहिए। ■

पिंजड़े में मुर्गियाँ

ओमप्रकाश पांडे सोहम

बाकी मुर्गियां पिंजड़े में बंद कटने का इंतजार कर रहीं थीं। एक मुर्गी कट चुकी थी, पर पूरी तरह नहीं, अभी केवल गला कटा था। जीवन की अंतिम सांसें ले रही थी। थोड़ी देर फड़फड़ाने के बाद वो शांत पड़ गयी, बड़ी बेदर्दी से उसके पंख उजाड़ दिए गए, थोड़ी देर पहले हंस-खेल रही जिंदगी तराजू में पहुँच गयी। खरीदने वाला करीब पाँच मिनट के इंतजार के बाद मुस्कुरा उठा, शायद तलने के बाद खाने में आने वाले मजे के बारे में सोचकर।

पिंजड़े में एकदम सन्नाटा छा गया, शायद अपने एक साथी के दुनिया छोड़ने के गम में। पर कितनी देर तक? कुछ ही पल में इनमें से किसी की भी बारी आ सकती थी। सारी मुर्गियां लगभग हमउम्र थीं, अंतर बस वजन का था। किसकी बारी आएगी अब, ये भी वजन पर ही निर्भर था, अगर किसी को ज्यादा चिकन की जरूरत तो वजनी मुर्गी और कम की तो हल्की मुर्गी को कटना था।

'हमारी कौम कबतक यूँ ही कटती रहेगी? हमारी जिंदगी का तो कोई वजूद ही नहीं रहा अब!' दिखने में एक तंदुरुस्त मुर्गी ने कहा। बाकी सारी मुर्गियां शांत थीं, मानो कुछ सुन ही न रही हों। 'आखिर हम भी जीव हैं, हमारी भी जिन्दगी है। ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई भी आए और हमें कटवा के खा जाए? इस हत्यारे को देखो! पैसे के लिए कैसे हमें मिनटों में टुकड़ों में काट दे रहा है। मानो हम कोई चींटी-माटा हों।' तंदुरुस्त मुर्गी ने अपनी बात जारी रखी, पर बाकी मुर्गियां अब भी उसकी बातों पर ध्यान नहीं दे रही थीं।

वो बोलती रही- 'एक समय था जब हमसे ही सुबह होती थी, हम सोते रहें तो आधे से ज्यादा लोगों को होश ही न रहे कि उठना भी है। हमारा भी परिवार होता था, कई बच्चे, पोते-पोती, नाती-नातिन...।'

बात पूरी भी नहीं हुई थी कि दिखने में सबसे स्मार्ट पर दुबली-पतली मुर्गी ने बीच में टोका। 'लगता है बॉलीवुड की पुरानी फिल्में खूब पसन्द हैं तुम्हें। मैंने भी ऐसे डायलॉग सुने हैं। अपने फॉर्म की टीवी में दिनभर ऐसी ही मूवीज तो चलती रहती थी। बचपने से जवानी तक यही देख सुनकर तो बड़ी हुई हूँ मैं। नाशपीटा केयरटेकर, जो अभी पिछले हफ्ते आया, नया-नया। किसी सन्नी नाम की अश्लील औरत का फैन था। अजीबोगरीब फिल्में देखने का शौकीन था। ना कोई कहानी ना ही रोमांस शुरू से अंत तक बस शरीर के एक-एक अंग का आकार-प्रकार ही दिखता रहता टीवी पे। मैंने तो टीवी स्क्रीन की ओर देखना ही बंद कर दिया। गानों की तो पूछो ही मत! जिस रंग की फिल्म उसी रंग का गाना- कोई 'ब्लू है पानी-पानी' करके। 'मानो या न मानो वो सन्नी हॉट तो है ही।'

एक मुर्गा बीच में बोल पड़ा- 'तुम सारे मुर्गे एक जैसे होते हो, अब उसी सन्नी हॉटी को देखना।' पतली स्मार्ट मुर्गी कमर और मुंह मटकाते हुए बोली। देशी तंदुरुस्त मुर्गी की बात अभी खत्म नहीं हुई थी, वह फिर बोलने लगी- 'हमारी संस्कृति नष्ट होती जा रही है। हमारी पूरी कौम पर संकट आ गया है। हम कबतक यूँही शांत रहेंगे? हमने कभी अपनी अगली पीढ़ी के बारे में सोचा है? हमारी जिंदगी तो किसी तरह कट गयी और कटी भी ऐसी कि हम कटने के कगार पर हैं। पर मैं ऐसे नहीं कटूंगी। अब जंग होगी, कटने के खिलाफ जंग, अपनी संस्कृति को बचाने के लिए जंग...।'

वह आगे कुछ बोलती कि बीच में ही पतली स्मार्ट मुर्गी ने मुँह ऐंठकर कहा- 'लगता है तुम रेशम बाग, नागपुर के पास वाली नर्सरी में पैदा हुई हो। देखने से ही लगता है कि एकदम देशी हो, तो सोच कहाँ से मॉडर्न होगी। क्या संस्कृति-संस्कृति की रट लगा रखी है इतनी देर से। हमारी संस्कृति लेबोरेटरी में दफन है। हमें काटकर खाने के लिए ही इन इंसानों ने बनाया है। हम पोल्ट्री फॉर्म की मुर्गियां हैं। देशी वाली रोडछाप मुर्गी नहीं। कुन्तलों दाना पानी तुम्हारी संस्कृति के संरक्षण के लिए लाता था मालिक। यू आर जस्ट स्टुपिड। हम सब बाजारीकरण के परिणाम हैं। सरकार भी हर चीज को मार्केट के हिसाब से देखती है। कारपोरेट गवर्नमेंट है और तुम पुरातन राग अलाप रही हो। सब पैसे का खेल है जो भी पैसा देगा हमें कटवायेगा, बनाके चाव से खायेगा।'

वार्तालाप अभी चल ही रहा था कि एक नये ग्राहक ने अपनी जरूरत दुकानदार को बता दी। बीवी की सहमति भी ग्राहक ले चुका था। शायद परिवार में तीन ही लोग थे- एक बच्चा और पति-पत्नी। तीनों लोग स्कूटी के पास खड़े रात के खाने के जायके के बारे में सोच रहे थे। पतली स्मार्ट मुर्गी का गला कट चुका था, पंख उखाड़े जा रहे थे। वो फड़फड़ा रही थी, बाकी मुर्गियां ये मंजर एकदम करीब से देख रहीं थीं। ■

चोटी की प्रधानता

अंशु प्रधान

हमारे देश में आजकल धड़ाधड़ चोटियां काटी जा रही हैं। अभी बिहार में लालू यादव की चोटी कट गई। देश में कांग्रेस की चोटी प्रधानमंत्री से लेकर राष्ट्रपति यहां तक कि उपराष्ट्रपति पद तक कट गई। जी एस टी के तहत बड़े बड़े टैक्स चोरों की चोटियां कट गयीं। नोटबंदी में भ्रष्टाचारियों की और कालाधन रखने वालों की चोटियां कट गईं। इन बातों से ये साबित होता है कि हमारा देश चोटी प्रधान देश है। जो भी चोटी पर पहुँचता है चाहे किसी भी तरह पहुंचे, उसकी चोटी काटना एक जायज काम होता है चोटी से नीचे वालों के लिए। ऊँचे लोगों की चोटी काटना हमारे देश में एक नैतिक कर्तव्य है। अगर किसी ऊँचे आदमी की चोटी नहीं कट रही है, तो समझ लेना चाहिए कि वह बहुरूपिया है। हमारे देश में भी इसीलिए सदियों से ऊँचे लोगों में चोटी रखने और उसे सुरक्षित रखने का रिवाज पड़ा। तभी चोटी के लोग कभी धरातल पर उतरकर नहीं देखते। असल में चोटी कटने का डर उन्हें धरातल पर नहीं आने देता, क्योंकि चोटियां धरातल पर या रसातल पर ही काटी जाती भी हैं।

चोटी कटने की घटनाएं किसी मेट्रो उन्नत शहर में नहीं होती। हमेशा ही पिछड़े अविकसित क्षेत्रों में ही चोटी कटने लगती हैं। कभी गणेश जी दूध पीने लगते हैं, कभी मुँह नुचने लगते हैं। मैं आश्चर्य में हूँ कि गणेश जी विदेश में दूध क्यों नहीं पीते? अमरीका लन्दन में कोई कभी किसी की चोटी क्यों नहीं कटती? हमारे ही देश में ये सब इतना समय क्यों दे रहे हैं? ये अपना बिजनेस बाहरी देशों तक क्यों नहीं फैलाते कभी?

मैं हैरान हूं आखिर उन्नतिशील वर्ग में भी जो लोग चोटी में गांठ बांधकर रखते हैं उनकी चोटी क्यों नहीं कटती! अंबानी, अडानी आदि आदि की चोटी न छोटी होती है, न ही कभी कटती है। जबकि मामूली ठेले वाले तक की चोटी कट जाती है।

इसीतरह अपने ही देश में अपनी ही धरती कश्मीर में हम आतंकियों की चोटी नहीं काट पाते। जो पत्रकार पिछड़े इलाकों में यमुना-गंगा की बाढ़ में बहकर भी घर-घर घुसकर चोटी कटने की खबरें लाकर अपनी तरह से प्रचारित कर देता है, वह यहां तक कि मुफ्त में कश्मीर की महबूबा बनी मोहतरमा की चोटी देख तक नहीं पाता कि अभी है या पाकिस्तान में गिरवी पड़ी है। कश्मीरियों के घरों में चोटी कौन काट रहा है, अभी तक कितनी चोटियां काटी जा चुकी हैं, ये कोई खबर नहीं ला पाता। इस बात से यह भी साबित होता है कि चोटियां हमेशा अविकसित, अनपढ़ों, पिछड़ों और जरूरतमंदों की ही कटती हैं।

मजे की बात ये है कि और तो और गूगल भी औरतों की ही चोटी काटने में लगा है। मतलब गूगल ये कहना चाहता है कि सारे ही पुरुष घोड़े होते हैं, कोई गधा नहीं होता। पुरुष होना ही बौद्धिक होने की निशानी है। क्षमता की बात औरतों के लिए है पुरुषों के लिए नहीं। गूगल के हिसाब से अब सभी जगह गधों को गधा नहीं कहा जायेगा क्योंकि वे पुरुष हैं। अगर ये ही सच है तो फिर लोमड़ी को मूर्खता का पर्याय क्यों नही माना

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

मोदी की बढ़ती लोकप्रियता और भारतीय लोकतंत्र

मुकेश सिंह

नरेन्द्र मोदी ऐसे नेता हैं जो २०१४ में प्रधानमंत्री उम्मीदवार बनाये जाने से पहले कभी राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय नहीं रहे। वे गुजरात की राजनीति के धुरंधर खिलाड़ी थे। परन्तु राष्ट्रीय राजनीति में आते ही उन्होंने धमाल मचाना आरंभ कर दिया था। यह वह समय था जब लंबे अरसे से सत्ता से बाहर बैठी भारतीय जनता पार्टी एनडीए गठबंधन के प्रधानमंत्री पद के लिए एक सक्षम व्यक्ति की तलाश में कर रही थी। ऐसे वक्त में ही समर्थकों व कार्यकर्ताओं की मांग पर उन्हें प्रधानमंत्री उम्मीदवार घोषित कर दिया गया। पर पार्टी के भीतर तब भी संशय था, क्योंकि उनकी प्रखर हिन्दुत्ववादी छवि के कारण अपना वोट बैंक बचाने की आशा में कुछ पुराने सहयोगियों ने चुनाव से पहले ही भाजपा से किनारा करना शुरू कर दिया था।

विरोधियों ने भी उनके कार्यकाल में हुए २००२ के गुजरात दंगों को मुद्दा बनाकर भारतीय जनता पार्टी के विजय रथ को रोकने की पूरी कोशिश की। पर इन सबके बावजूद अपने नये सेनापति के नेतृत्व में भाजपा पूरे जोश के साथ चुनावी दंगल में उतरी। फिर आरंभ हुआ चुनावी प्रचार का दौर जहां जनता ने सारे आरोपों की उपेक्षा करते हुए नरेन्द्र मोदी के विचारों को सुनने को प्राथमिकता दी। फिर तो एक के बाद एक कई धुआंधार रैलियों में वे बोलते गए और जनता उनके मोहपाश में बंधती गई। अपने शानदार भाषणों और वादों के कारण वे भारत के प्रधानमंत्री चुन लिये गये।

पर यहीं से शुरू हुई उनकी असली अग्निपरीक्षा। लोगों ने उन पर लगे सभी आरोपों को भूलकर उन पर विश्वास जताया था और उन्हें अब इस विश्वास पर खरा उतरना था, ताकि व्यवस्था से नाराज देश की जनता के विश्वास को फिर से बनाया जा सके और राजनीति के प्रति उनकी पुरानी सोच को बदला जा सके। अपना कार्यालय संभालते ही उन्होंने अपने मंत्रियों व पदाधिकारियों के साथ मिलकर देश की व्यवस्था के प्रति विश्वास बहाली का बीड़ा उठाया। उन्होंने दूर दिल्ली में बैठी सरकार को सोशल नेटवर्किंग के जरिये जनता की मुट्ठी में लाने का काम किया। बिना किसी भ्रष्टाचार के पिछले तीन सालों से जनता की भलाई व देश के विकास के लिए निरंतर कार्य करते हुए उन्होंने जनता के प्रति किये कमिटमेंट को पूरा करना आरंभ कर दिया है।

आजादी के बाद से ही लगातार जनता का विश्वास खो रही सरकार को उन्होंने एक बार फिर से जनता की उम्मीदों की सरकार बनाने का संकल्प निभाया है। और इसका सबूत है ओईसीडी नामक स्वयं सेवी संस्था की एक रिपोर्ट, जिसमें कहा गया है कि दुनिया की अन्य किसी भी राष्ट्र के मुकाबले भारत की सरकार उसके जनता की सबसे भरोसे की सरकार है। ओईसीडी की रिपोर्ट के अनुसार जिन देशों में जनता को अपनी सरकार पर भरोसा है, भारत उनमें शीर्ष पर है। भारत के ७३ प्रतिशत लोग अपनी मौजूदा सरकार पर भरोसा करते हैं। ओईसीडी अर्थात ऑर्गनाइजेशन ऑफ इकोनॉमिक कोऑपरेशन डेवलपमेंट दुनिया के देशों में आर्थिक सहयोग और विकास के लिए काम करने वाली एक संस्था है। इसी संस्था की बनाई रिपोर्ट के अनुसार भारत उन देशों की कतार में शीर्ष पर है जहां के लोग अपनी सरकार पर भरोसा करते हैं। पिछली सरकार से नाराज और परेशान कुछ लोगों के लिए ये रिपोर्ट आश्चर्य का कारण हो सकती है, पर सच्चाई यही है। मशहूर फोर्ब्स पत्रिका में ओईसीडी के हवाले से छपी १५ देशों की सूची में आर्थिक संकट झेल रहा ग्रीस सबसे नीचे आखरी पायदान पर है। यहां सिर्फ १३ प्रतिशत लोग ही सरकार पर यकीन करते हैं।

इस सूची में भारत के बाद नंबर है कनाडा का। वहां जस्टिन ट्रूडो के नेतृत्व वाली सरकार है, जिसे ६२ प्रतिशत लोगों का समर्थन हासिल है। सूची के पांच शीर्ष देशों में जर्मनी भी है लेकिन पांचवें नंबर पर उससे पहले है रूस जहां पुतिन की सरकार भी लोकप्रियता के रिकॉर्ड बना रही है। जबकि इसी साल राष्ट्रपति बने डॉनल्ड ट्रंप पर अमेरिका के महज ३० प्रतिशत लोग भरोसा करते हैं और वहीं ब्रिटेन की प्रधानमंत्री टेरीजा मे को देश के ४१ प्रतिशत लोगों का विश्वास प्राप्त है।

किसी देश के लोग अपनी सरकार पर कितना भरोसा करते हैं इसको मापने का उनका अपना तरीका है। पर इसके बावजूद गौरक्षा और हिंदुत्व के मुद्दों को लेकर विरोध झेल रही सरकार के प्रति जीएसटी, नोटबंदी और सर्जिकल स्ट्राइक जैसे कदमों के कारण लोगों का विश्वास बढ़ा है। अगर इन रिपोर्टों के दावों को छोड़ भी दिया जाये, तो हाल ही में देश में चल रहे दल बदल और टूटते-बनते नई गठबंधनों की सरकारें भी इन दावों पर मुहर लगाती हुई नजर आ रहीं हैं। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की मानें तो मोदी सरकार अभी कम से कम २०२४ तक केन्द्र में सत्तासीन रहेगी। विपक्ष के सबसे भरोसेमंद और सशक्त नेता व बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने हाल ही में विपक्ष से दामन छुड़ाकर मोदी की अधीनता स्वीकार ली है। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो बिना किसी ऊहापोह के यह स्वीकार लिया कि नरेन्द्र मोदी ही इस देश के सबसे लोकप्रिय नेता हैं और उनसे मुकाबले की क्षमता अभी इस देश के किसी भी नेता में नहीं है। इन बातों से नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार की लोकप्रियता का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

परन्तु इस लोकप्रियता के बीच भाजपा द्वारा एक-एक करके सभी विपक्षी पार्टियों के नेताओं तथा सांसद व विधान सभा सदस्यों को अपने पाले में करने की कोशिश देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए काफी घातक सिद्ध हो सकती है। किसी भी देश में लोकतंत्र को बचाये रखने के लिए एक स्थिर सरकार के साथ-साथ एक सशक्त विपक्ष की भी जरूरत होती है। ऐसे में विपक्षी पार्टियों के बिकाऊ व घोटालेबाज नेताओं को अपने पक्ष में करने की भाजपा की चाल देश की जनता के लिए मुसीबत का कारण बन सकती है, क्योंकि निरंकुश क्षमता किसी को भी मतांध बनाने के लिए काफी है। ऐसी स्थिति में चंद नेता-कार्यकर्ताओं के अनैतिक क्रियाकलाप पूरे समाज के लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं। देश-दुनिया में इसके कई ज्वलंत उदारण भी मौजूद हैं जब निरंकुश जनसमर्थन के नशे में चूर सरकारी पक्ष ने जनसाधारण को भूलकर बस अपनी गद्दी और व्यक्तिगत महत्वाकंक्षाओं के लिए कार्य करने की अनैतिक चेष्टा की है। इसका नमूना भारत इमरजेंसी के दौरान एक बार देख चुका है।

देश की जनता के अपार समर्थन और विश्वास के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का यह दायित्व बनता है कि वे अन्य क्षेत्रों की तरह ही राजनीति से भी अस्वच्छता को दूर करने की चेष्टा करें। एक भ्रष्टाचार विरोधी नेता के तौर पर किसी भी कारणवश की जा रही सांसद-विधायकों की खरीद-परोख्त का मौन समर्थन उन्हें शोभा नहीं देता है। किसी भी चुनाव में प्रत्यक्षरूप से विरोधियों को हराकर उन पर विजय पाना हर नेता के लिए गौरव का कारण बनता है। पर किसी प्रकार के लोभ या भय को साधन बनाकर अन्य दलों के सांसद और विधायकों को खरीदना और अनैतिक तरीके से लोकतंत्र के आधार स्तंभ विपक्ष को नष्ट करने की चेष्टा करना अत्यंत निंदनीय है, जो किसी भी उच्च विचारधारा वाली पार्टी या नेता को शोभा नहीं देती है।

प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता दिनों-दिन देश से लेकर विदेशों तक में बढ़ रही है। अपने आकर्षक व्यक्तित्व व सफल नेतृत्व के बल पर वे विश्व नेता के रूप में उभर रहे हैं, जो हम सबके लिए भी गौरव की बात है। पर उनकी लोकप्रियता देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए हानिकारक न बन जाये, इस बात का भी हम सबको ध्यान रखने की जरूरत है। याद रखिये कि हिटलर या मुसोलिनी जैसे लोग जन्म से ही तानाशाह बनकर पैदा नहीं हुए थे बल्कि अपार जनसमर्थन और निरंकुश क्षमता के अभिमान ने ही उन्हें अलोकतांत्रिक शासक के रूप में स्थापित किया था। ऐसी ही स्थिति अब मोदी और भारतीय जनता पार्टी की बढ़ती लोकप्रियता से उत्पन्न हो रही है जो उनके नेताओं और कार्यकर्ताओं को निरंकुश बनाने का काम कर रही है। इससे आने वाले समय में देश के आंतरिक लोकतंत्र को खतरा हो सकता है। अतः यह मोदी जी का दायित्व है कि वे यह सुनिश्चित करें कि उनकी लोकप्रियता और उनके चाणक्य की निरंकुश क्षमता की भूख समाज के किसी भी वर्ग के लिए भय और संशय का कारण नहीं बनेगी। ■

हामिद अंसारी का बयान

मृत्युंजय दीक्षित

देश के पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी अपने विदाई समारोह में जिस प्रकार से मुस्लिमों में असुरक्षा की भावना की बात कहकर गये हैं, उससे उनके खिलाफ जनज्वार का उठना स्वाभाविक ही है। हामिद अंसारी वर्तमान समय में एक बहुत ही योग्य व पढ़े-लिखे मुस्लिम नेता माने जाते रहे हैं, लेकिन उन्होंने एक नहीं कई बार अपने बयानों से विवादों को ही जन्म दिया है। इस बार तो उन्होंने हद ही कर दी है। जिस समय पूरा देश सबका साथ विकास और न्यू इंडिया के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, उस समय अंसारी ने देश का वातावरण बिगाड़ने व भविष्य की राजनीति का अपना व विपक्ष का राजनैतिक एजेंडा तय करने का ही काम किया है।

मुस्लिमों में असुरक्षा की बात संभवतः अंसारी पर ही खरी उतरती है क्योंकि राष्ट्रपति पद के लिए प्रत्याशी की खोज के समय उनकी अपनी ही पार्टी के लोगों ने उनके नाम पर चर्चा नहीं की थी। संभवतः इसीलिए वे स्वयं को आहत महसूस कर रहे होंगे। यही कारण है कि उन्होंने मुस्लिमों में असुरक्षा व डर का बयान दे डाला है। उनके इस बयान के पीछे कई अन्य सियासी तीर भी हो सकते हैं। अंसारी के बयान की जितनी भी निंदा की जाये, कम है। अब संभवतः उनके बयान को आधार मानकर विपक्ष आगामी विधानसभा चुनावों में अपना एजेंडा भी सेट करेगा।

वास्तविकता यह है कि आज पूरे विश्व भर में यदि कहीं पर अल्पसंख्यक मजे कर रहे हैं तो वह केवल हिंदुस्थान ही है। इस देश में कहीं भी ऐसे डर का कोई माहौल नहीं है। केवल उन्हीं लोगों व दलों के मन में डर का माहौल व्याप्त है, जिनके पास बेनामी संपत्ति है या जो कालेधन के समर्थक हैं। अंसारी ने अपनी बात कहकर देश की सियासत को एक नई हवा देने का असफल प्रयास किया है। अंसारी ने अपने पद व गरिमा के खिलाफ जाकर यह बयान दिया है। यह बड़े दुःख की बात है कि क्या इस देश में केवल मुस्लिम समाज ही अल्पसंख्यक है। इस देश में जैन, सिख, ईसाई व पारसी समाज भी अल्पसंख्यक हैं, लेकिन उनके अधिकारों की बात कोई नहीं करता।

कांग्रेस पार्टी अपने वह दिन भूल गयी जब हिंसक भीड़ ने इंदिरा गांधी की हत्या के बाद देशभर में सिखों का कत्लेआम किया था। उस भीड़ का नेतृत्व करने वाले कांग्रेसी ही थे। देशभर में ऐसे दंगों का इतिहास भरा पड़ा है जहां कांग्रेसी कार्यकर्ता दंगाइयों का नेतृत्व कर रहे थे। क्या कांग्रेस बिहार का भागलपुर दंगा भूल गयी है? अंसारी ने अपने बयान में डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जिन बातों का उल्लेख किया है क्या वे कश्मीरी हिंदुओं के लिए लागू नहीं होती? आज कश्मीर का विस्थापित हिंदू देश के कई स्थानों पर दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर है। क्या अंसारी साहब उनके दर्द को भी बयां करेंगे? जब बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान सहित विश्व के किसी अन्य देश में हिंदू के साथ कोई घटना घटती है तब ये लोग क्यों चुप रहते हैं? केरल के कन्नूर में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने भीड़ के समूह में सरेआम गाय को काटकर उसका भक्षण किया। क्या यह हिंदुओं की भावना के साथ अन्याय नहीं किया गया था? इतना ही नहीं जिस प्रकार से केरल के कन्नूर से लेकर चेन्नई व मेघालय, मिजोरम तक जिस प्रकार से गोमाँस का भक्षण किया गया वह क्या था?

केरल में संघ के कार्यकर्ताओं की हत्यायें हो रही हैं तथा पश्चिम बंगाल में हिंदुओं को भीड़ द्वारा ही अपमानित किया जा रहा है, उनके घर जलाये जा रहे हैं तथा हिंदुओं की बहिन-बेटियों के साथ सरेआम दुराचार किये जा रहे हैं। इन सबके लिए आखिर कौन दोषी है? अंसारी ने कभी भी हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों पर बात क्यों नहीं की, यदि वे धर्मनिरपेक्षता के बहुत बड़े झंडाबरदार हैं? उन्होंने अपने बयानों से देश में सनसनी मचाने व भाजपा विरोधियों को एक एजेंडा पेश करके दे दिया है। उनके बयान से पूरे देश की छवि विदेशों में भी खराब हो गयी है। यह भारत ही एक ऐसा देश है जहां उच्च पद पर बैठा हुआ व्यक्ति इस प्रकार की ओछी मानसिकता वाली अभिव्यक्ति कर सकता है। आज पूरा हिंदू समाज अपने आप को आहत महसूस कर रहा है।

अंसारी को यह बात बोलने के पहले यह सोच लेना चाहिए था कि आजादी के बाद देश में कितने ही मुस्लिम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल व राजनैतिक दलों के प्रवक्ता बने। कितने ही मुस्लिमों ने सांसद व विधायक बनकर अनुकरणीय कार्य किये हैं। यह सब हिंदुओं की सहिष्णुता का ही परिचायक है। आज फिल्मी दुनिया में सलमान खान, शाहरुख खान, आमिर खान व नवाजुददीन सिद्दीकी जैसे मुस्लिम कलाकार हिंदुओं के धन के बल पर ही राज कर रहे हैं। यदि किसी दिन हिंदुओं ने चाह लिया तो यह लोग आकाश से जमीन पर आ जायेंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि तीनों खान अभिनेता कभी शहीद जवानों के प्रति संवेदना नहीं व्यक्त करते, बल्कि याकूब मेनन जैसे आतंकवादी की फांसी की सजा के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान चलाते हैं व देश में सहिष्णुता बनाम असहिष्णुता का नाटक खेलते हैं।

अंसारी साहब को यह सोचना चाहिए था कि भारतीय क्रिकेट टीम सहित हर खेल में कई मुस्लिम खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। क्रिकेट में नवाब पटौदी से लेकर जहीर खान और मोहम्मद शमी तक लंबी फेहरिस्त है। यही कहानी हॉकी से लेकर अन्य टीम स्पर्धाओं में भी है। हामिद अंसारी ने मुस्लिमों में असुरक्षा की भावना की बात कहकर पाकिस्तानी एजेंडे को भी काफी हद तक धार दी है। अगर देश का मुसलमान अपने-आप को असुरक्षित महसूस कर रहा है तो उनको यह साबित करने के लिए ठोस प्रमाणों के साथ अपनी बात कहनी चाहिए थी।

अगर मुसलमानों को गौरक्षकों की हिंसा से बचना है तो उन्हें भी हिंदुओं की भावना का ध्यान रखना होगा। केवल बहुसंख्यक हिंदू समाज ने ही मुसलमानों का ठेका नहीं ले रखा है। मुसिलम समाज गाय, गंगा, वंदेमातरम् का विरोध करता रहे, उसके धार्मिक हितों की पूर्ति के लिये हिंदू समाज अपने मंदिरों से लाउडस्पीकर उतारता रहे, यह कब तक संभव है। अंसारी ने अल्पसंख्यकवाद की राजनीति को हवा देने का काम किया है। वास्तविकता यह है कि मोदी सरकार में सबसे अधिक

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

राजनीति के बदलते रूप

मृदुल शरण

आज देश की राजनीति का रूप फैशन की तरह बदलता जा रहा है। राजनीति का मतलब होता है ऐसी नीति जो राज हुआ करता था। अब न नीति ही रही और न राज। आज जनता के सामने नेताओं की नीति नंगी हो चुकी है। सही मायनों में देखा जाए तो वोट प्राप्त करने की होड़ ही इसका मूल कारण है। जात-पात, धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता और आरक्षण के आंगन में ही नेताओं के वोटों का फूल खिलते हैं और जनता भी इन्हीं आधारों पर बँटकर नेताओं के हाथों की कठपुतली बनकर रह गयी है। क्या इससे देश का विकास हो पाएगा? नहीं।

हमें देश के विकास के लिए सबसे पहले अपनी मानसिकता को विकसित करना पड़ेगा, तभी अपने स्वस्थ विचारों के आधार पर चलकर देश को हम विकसित कर पाऐंगे। आजादी की जंग मे जो शहीद हुए और देश के प्रहरी जो हमारी रक्षा के लिए सीमा पर दिन रात खड़े रहकर अपने बाल बच्चों और परिवार को छोड़कर अपनी जान की बाजी लगा रहे है, उनकी खातिर और अपने देश की एकता एवं अखंडता के लिए हमें बदलते राजनीतिक स्वरूप को सही पटरी पर लाने की जरूरत है। अगर हम अपनी सोच में से अपने स्वार्थ को त्याग दें और देश के लिए और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए सोचें, तो बेहतर होगा, क्योंकि हमारी पिछली पीढ़ी ने हमारे लिए सोचा था, तभी हम आजाद देश में सांस ले रहे हैं। आइए! हमसब मिलकर देश के राजनीतिक माहौल को ठीक करें, तभी नेताओं की मानसिकता भी बदलेगी और तभी देश का विकास हो पाएगा और हम अपनी आजादी की रक्षा भी कर पाऐंगे। जय हिन्द! जय भारत!!

(पहली किस्त)

संन्यास

नीतू सिंह

वह पगडंडियों के सहारे चला जा रहा था। गुस्से से काँपता उसका शरीर कभी इधर कदम रखता था तो कभी उधर। उसे खुद होश नहीं था कि आखिर वो जा कहाँ रहा है। इतना तो पता था कि कहीं दूर जा रहा है, अपनी घर-गृहस्थी से कहीं दूर, संन्यास लेने।

सूरज आकाश में तेज चमक रहा था। उसने सुबह की प्रथम बेला में ही लड़-झगड़कर घर त्यागा था। उसे चलते हुए लगभग तीन घंटे हो चुके थे। इस बीच उसने न एक घूंट पानी पिया था, न एक लंबी साँस ही ली थी। साँस लेना तो वो जैसे भूल ही गया, ले लेता तो शायद गुस्सा ठंडा हो जाता।

उसने देखा खेतों से हटकर एक रास्ता जंगल की ओर जाता है। उसने फटाफट वह रास्ता पकड़ लिया। उसे लगा अब वह एकदम सही रास्ते पर चल पड़ा है। उसने गृहस्थी से नाता तोड़ लिया है और इस रास्ते को पकड़कर उसने संन्यास का रास्ता पा लिया था।

वह काफी देर से कड़ी धूप में चल रहा था। उसे न लू की समझ आई और न धूप से तपते बदन की। मगर अब जंगल की छाँव थी और दोपहर बीतने लगी थी, इसलिए धूप भी उतनी कड़क नहीं थी। उसने एक जगह रुककर लंबी साँस ली और अपने चारों ओर के जंगल को गौर से देखा। उसे अब अपने सूखते गले और तेजी से उठती प्यास की खबर हो आई थी। एक टहनी उठाकर उसने उसके पत्ते तोड़ लिए और उसे एक डंडे का आकार दे दिया। उसी से वह जंगल में अपना रास्ता बनाकर पानी का स्रोत ढूँढने लगा।

इतनी सूचना तो उसे थी कि इस जंगल में कुछ संन्यासी देखे गए हैं। कुछ कहानियां ऐसी भी प्रचलित थीं कि जंगल के बीचोंबीच एक बृहद मठ विद्यमान है जहाँ अलग-अलग स्थानों से संन्यासी जप-तप करने आते हैं। अपनी कपोल-कल्पना में उसने उस मठ का विशाल स्वरूप गढ़ लिया था और यही नहीं अपने को वहाँ एक तेजस्वी संन्यासी के रूप में स्थापित भी कर लिया था। ऐसी सुंदर कल्पनाओं से वह थोड़ी देर तो अपनी प्यास को भुलावा दे सकता था मगर ज्यादा देर नहीं। अब मठ को भूलकर उसका ध्यान वापस जल का स्रोत ढूँढने में लग गया।

उसने सोचा यहाँ-वहाँ भटकने से अच्छा है कि वो जंगल के भीतर ही भीतर जगह बनाता जाए। इससे वह जंगल के बीच जल्दी पहुँचेगा और रास्ते में कोई न कोई जल का स्रोत भी जरूर होगा, तभी तो संन्यासी इधर आते होंगे। साथ ही वह जितना देर करेगा उतनी रात घिर आएगी और एक बार सूरज डूब गया तो दिशा खोजना कठिन हो जाएगा। यहाँ सूरज की हल्की-फुल्की किरण तो दिख रही है और पूरब-पश्चिम का कुछ ज्ञान हो रहा है। मगर पत्तों के बीच तारे देख पाना तो बहुत मुश्किल होगा। फिर जंगली जानवरों का भी डर।

धीरे-धीरे सूरज ठंडा पड़ गया। उसे याद आया कि ठीक इसी समय तो वह काम से लौटता था और घर में कदम रखते ही सुनैना पानी हाजिर कर देती थी। उसने अपने होंठ चाट लिए।

मगर असली लड़ाई तो उसके बाद शुरू होती थी, जिसकी वजह से वह घर छोड़ आया। घर में घुसते ही 'ये लाए क्या', 'वो लाए क्या'। जब देखो तब नमक, चीनी, मसाला, आटा, चावल, दाल कम ही पड़ा रहता था। अकेले रहने का सुख ही अलग होता है। किसी बच्चे की शर्ट फट गई है, किसी के स्कूल का फीता खरीदना है। हद होती है सर नोंच खाने की।

अब उसका खून फिर उबलने लगा। आज सुबह ही तो बढ़िया सी बहस हुई थी और उसने दिखा दिया की वो क्या चीज है। अब मांगे नमक, चीनी और रूपया-पैसा। देखें किससे माँगती है।

खून उबलने के साथ-साथ वह अपनी भूख-प्यास भूलकर जंगल में भीतर और भीतर चलता चला गया। जब अंधेरा होने लगा तो भूख-प्यास के साथ-साथ डर उस पर हावी होने लगा और उसका सर चकराने लगा। घर पर होता तो अब तक कई बार खाना खा चुका होता। उसने सोचा जानवरों का खाना बनने से अच्छा है कि एकदम अंधेरा होने से पहले पेड़ पर चढ़ जाए।

बचपन में वह कई बार, कई तरह के पेडों पर चढ़ा था। तब शरीर रूई के फाहों की तरह आसानी से कूदता हुआ ऊपर की ओर उड़ सा जाता था। मगर अब तो लग रहा है कि यहाँ से फिसले तो यह हड्डी टूटेगी और वहाँ से हाथ छूटा तो वह हड्डी टूटेगी।

किसी तरह डरते-फिसलते वो एक मोटी डाल पर जा बैठा। पर जैसे ही नीचे देखा, उसके होश उड़ गए। भूख-प्यास तो थी ही, साथ में डर के मारे उसे चक्कर आ गया। बहुत संभलने के बाद भी चक्कर तेज हुआ और सारा जंगल, पेड़ की शाखाएं, सब उसके आँखों के आगे घूम गई और वह धड़ाम से नीचे आ गिरा।

उसे याद नहीं वह कब तक उस मूर्छित अवस्था में पड़ा रहा। जब आँख खुली तो पैरों में भयंकर पीड़ा थी। उसने उठने की कोशिश की तो उसका दम उखड़ गया मगर वह उठ न पाया। वह दर्द से कराहता वहीं लेटा रहा और ऊपर की डाल देखता रहा जो उसे ऊँची और ऊँची दिख रही थी।

मद्धिम कराह, मद्धिम सांसों, मद्धिम रोशनी और मद्धिम खुली पलकों के बीच उसने महसूस किया कि कुछ लोगों की पदचाप उसके पास आकर रुक गई है। उसने अपनी अधखुली पलकों के बीच से देखा कि कुछ साध्वी स्त्रियां भगवे वस्त्रों में उसे देख रही थीं और आपस में चर्चा कर रही थीं। उसने राहत की साँस ली कि साधु-साध्वी तो होते ही हैं परमार्थ के लिए। मेरी जान बच जाएगी और मैं मठ तक भी पहुँचा दिया जाऊँगा।

उसे स्पष्ट दिखाई तो नहीं मगर सुनाई अवश्य दे रहा था। 'गुरूमाता! देखें कोई मानव धरती पर पड़ा कराह रहा है।; एक विचलित युवती साध्वी ने उस समूह की सबसे वरिष्ठ महिला को सूचित करते हुए कहा।

बारी-बारी से दो-चार साध्वियों ने उसे करीब जाकर देखा और फिर दूर आकर अपने झुंड में खड़ी हो गईं। उस वरिष्ठा साध्वी ने भी उसे कुछ ज्यादा ही करीब जाकर देखा और फिर उतनी ही दूर जाकर खड़ी हो गईं जितनी करीब से उसे देखा, जैसे वह घायल शेर-चीता हो जो कभी भी मुड़कर उन पर झपट पड़ेगा और उन्हें खा जाएगा।

वह समझ न सका कि एक घायल व्यक्ति से वे इतना बच-बचकर क्यों खड़ी हैं? आखिर वह उनका क्या बिगाड़ लेगा?

कुछ देर की खुसर-फुसर के बाद उस वरिष्ठा ने लगभग घोषणा के लहजे में कहा- 'देखो! हम सबके लिए यह धर्म संकट की घड़ी है। हमने जो ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है उसके चलते किसी भी पुरुष को हम छू नहीं सकते। छूते ही हमारा सारा धर्म, हमारी सारी तपस्या, ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाएगा। कहा भी गया है कि प्राण जाए पर वचन न जाए। अर्थात् धर्म सर्वोपरि है। अतः मेरा निर्णय है कि हम इसे यहीं छोड़कर जाने के लिए विवश हैं। हमारी धर्म नीति यही है।'

यह सुनकर अर्धमूर्छित अवस्था में भी उसे भद्दी-भद्दी गालियां सूझने लगी। उसने मन ही मन कहा कि 'मूर्खो, प्राण जाए पर वचन न जाए अपने प्राणों पर लागू होता है दूसरे के नहीं।' उसे अब अपने निर्णय पर पछतावा हो रहा था। इन सबसे ज्यादा अकलमंद तो मेरी पत्नी थी। कभी खुद भूखे पेट सो भी जाती थी, पर कभी परिवार के सदस्यों या अतिथियों को भूखे पेट सोने नहीं देती थी। परम सेवा में तो वह लगी थी। भले कभी अगरबत्ती जलाने की फुरसत न रही हो उसके पास।

वरिष्ठा ने अपने समूह को आगे भी संबोधित करते हुए कहा- 'वैसे भी हमारे पीछे धर्मगुरु तथा उनके अनुयायी आ ही रहे हैं। वे ऐसे किसी बंधन से बाध्य नहीं होंगे और यह प्राणी अवश्य ही उनकी कृपा का पात्र होगा।' एक तिरछी नजर उस पर डालकर उसने फिर कहा- 'चलो अब तेजी से आगे बढ़ो। संध्या पूजन का समय निकला जा रहा है।'

साध्वियों का समूह वहाँ से चल दिया। मगर उनको जाता देखकर उसकी टाँगों की टीस और बढ़ने लगी। वह कराह उठा। उसकी कराह सुनकर शायद किसी साध्वी ने मुड़कर देखना चाहा, क्योंकि तभी कड़क आवाज में उस वरिष्ठ साध्वी के स्वर उसके कानों में पड़े- 'मालविका! किसी पुरुष के प्रति सहानुभूति भी प्रेम के अंकुरित होने का परिचायक होता है। इससे तुम्हारा मानसिक ब्रह्मचर्य भंग होता है। अपने पर संयम रखना सीखो और आगे देखकर चलो।'

(शेष अगले अंक में)

बाल कविताएं

सोये बच्चों, झट उठ जाओ
बिस्तर छोड़ो, बाहर आओ
नभ से परी उतर के आयी
देखो संग वह क्या-क्या लायी
सोने जैसे पंख निराले
हाथों जादू छड़ी सम्हाले
रंग-बिरंगा पहने चोला, गोरा तन, मुखड़ा है भोला
गले जादुई लॉकेट जगमग, खुशियाँ बिखराती है पग-पग
चलो माँग लो उससे जी भर, चूक न जाना मौका सुंदर

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

भारत सपूत हम सच्चे हैं, देश सेवा से न पीछे हटेंगे
मेहनत करेंगे डटकर हम, गौरव-स्वाभिमान हित डटेंगे
कण-कण यहां का सोना उगले, ऐसा देश बनाना है
एक-एक बुराई मिटाकर, सबसे आगे इसे ले जाना है
साहित्य-समाज विज्ञान सभी में, ध्वज इसका फहराना है
धरा पे आये स्वर्ग कहीं तो, भारतवर्ष में ही लाना है
हम इसके वीर बालक हैं, कभी नहीं भय खायेंगे
प्रगतिपथ की बात छोड़िये, अन्तरिक्ष के आगे जायेंगे
विश्व रचे इतिहास मुझ पर, ऐसा भारत हमें बनाना है
सारी दुनिया मुझ पर झूमे
कार्य ऐसा कर जाना है
सीमा पर शान्ति छा जाये
व्यवस्था ऐसी बनाना है
दुखिया-सुखिया पेटभर खायें
ऐसा आगे इसे ले जाना है।

-- शशांक मिश्र भारती

सीधा-सादा भोला-भाला, बचपन होता बहुत निराला
बच्चे सच्चे और सलोने, बच्चे होते स्वयं खिलौने
पल में रूठें, पल में मानें, बच्चे बैर कभी ना ठानें
किलकारी से घर गुंजाते, धमा-चौकड़ी खूब मचाते
टी.वी. से मन को बहलाते
कार्टून इनके मन भाते
पापा जब थककर घर आते
बच्चे खुशियों को दे जाते
तुतली भाषा में बतियाते
बच्चे बचपन याद दिलाते

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

अभी पूर्व से मुर्गा बोला, सूरज ने दे दी है बांग।
लालूजी कवितायें लिखते, ऐसी ही कुछ ऊँटपटांग।
कौआ भोंक रहा है भों-भों, शेर बोलता म्याऊँ-म्याऊँ।
चूहा हाथी से बोला है, भूख लगी मैं तुझको खाऊँ।
बकरी चढ़ी पेड़ पर उल्टी, तोड़ लाई है मीठे आम।
चींटी ने झाड़ू पोंछा कर, कर डाले घर के सब काम।
ऐसी कविताएं लिखने का, लालू का उद्देश्य विशेष।
उन्हें देखना है बच्चों में,
कितना ज्ञान बचा है शेष।
बच्चे शोर मचाकर बोले,
यह कविता बिल्कुल बकवास।
लालूजी की उल्टी बातें,
हमें जरा न आतीं रास।

-- प्रभुदयाल श्रीवास्तव

बहिन चाहे दूर भी हो तो भी कोई गम नहीं होता
उसका प्यार किसी दुआ से कम नहीं होता
अक्सर रिश्ते दूरियों से फीके पड़ जाते हैं
पर बहिन-भाई का प्यार कभी कम नहीं होता
बधाई-हो-बधाई, रक्षाबंधन की पावन बेला है आई
सबसे प्यारी मेरा बहिना, सबसे सुंदर राखी लेकर आई
रक्षाबंधन का पर्व सुहाना, आना मेरी बहिना आना
सुंदर-प्यारी राखी लेकर
मेरी कलाई पर तू सजाना
सुखी रहे मेरा भाई प्यारा
करती हूं दुआ हर छिन हर पल
राखी वाले दिन भाई से मिलकर
बांधूगी राखी में प्यार मैं निश्छल

-- लीला तिवानी

काली बिल्ली जब घर आई, मम्मी ने रसमलाई छुपाई।
जैसे ही देखा चूहों ने,
झट से सरपट दौड़ लगाई।
चमकीली आँखे थी उसकी,
वो मेरे मन को भाई।
काली काली धारी वाली,
बिल्ली मेरे घर आई।

-- विकास कुमार शर्मा

लघुकथा

मोह का दीया

शाम ढलने लगी थी लेकिन पिछले दो पहर से बंगले के बाहर एक पत्थर पर बैठे बिपती के मन में, चौकीदार के बार-बार मना करने के बावजूद अभी भी आस का दीया जल रहा था कि एक बार मालिक बाहर आ जाए तो अवश्य उसकी बात सुनेंगे।

वह और रुके या लौट जाए की उधेड़बुन में उसकी नजरें बार-बार गेट की ओर जा रही थी कि अचानक उसे गेट पर मालिक नजर आ गए, जिनके पास उसने कई वर्ष माली का काम किया था। वह दौड़ता हुआ उनके सम्मुख जा पहुंचा।

'राम राम... मालिक! मैं बिपती, एक बार मुझे मेरे बबुआ से मिलवा दो। बस एक बार।'

'तुम यहां इस समय।' उसे देखकर वे नाराज हो गए। 'और मैंने तुम्हे मना किया था न शहर लौटकर आने के लिए?'

'हां मालिक, आप मना किये थे लेकिन हम रह नहीं पाये। बस एक बार आप बबुआ से मिलवा दें, तो बहुत दया होगी हम पर।' कहते हुए बिपती रोने लगा।

'बिपती, गया समय लौटकर नही आता। तुमने माली होकर भी उस पौधे को अपने बगीचे से उखाड़ फेंका, जिसे तुम्हारी देखभाल की सबसे अधिक जरूरत थी। अब उसके मोह के जलते दीये को बुझा दो और उसे अपना जीवन जीने दो।'

'मैं जानता हूँ मालिक, हमने बहुत गलत किया। लेकिन आप तो इतने कठोर न बनो।' भीगे स्वर में बिपती ने एक आखिरी उम्मीद से फिर कहा।

'हाँ, सही कहते हो तुम। मुझे इतना कठोर नहीं बनना चाहिए।' सहसा वह गंभीर हो गए। 'जिस दिन तुमने अपने अपाहिज नवजात को मुझे चंद रुपयों के बदले सौंप दिया था, उसी दिन मुझे समझ लेना चाहिए था कि तुम्हारा ये 'मोह' बार-बार तुम्हें मेरे दरवाजे पर लेकर आएगा। ये लो तुम्हारे मोह की कीमत।' कहते हुए उन्होंने अपनी जेब से कुछ नोट निकालकर उसके सामने कर दिए।

'नहीं मालिक नहीं, मुझे इनकी जरूरत नहीं अब। बरसों की तड़प के बाद समझा हूँ कि औलाद तो पैसे का सुख दे सकती है पर पैसा कभी औलाद नहीं बन सकता। सुखी रहें आप।' कहता हुआ बिपती पलट चुका था, कभी न लौटने के लिए।

-- विरेन्दर 'वीर' मेहता

लघुकथा

पेपर

छोटा मनु बहुत परेशान है। उसे पढ़ने का शौक जरा भी नहीं है। पढाई कोई शौक के लिए थोड़ी की जाती है, वह तो जरूरी होती है। यह उसे समझ नहीं आती। वह खीझ उठता है, जब घर का हर सदस्य उसे कहता, 'मनु पढ़ ले!' हद तो ये भी है कि घर का पालतू तोता भी पुकार उठता है, 'मनु पढ़ ले!' मनु परेशान हुआ सोच रहा है। ये पढाई बहुत ही खराब चीज है। पैंसिल मुँह में पकड़ कर गोल-गोल घुमा रहा है।

'परीक्षा सर पर है, अब तो पढ़ ले मनु!' उसकी माँ का दुखी स्वर गूंजा तो मनु ने पैंसिल हाथ में पकड़ी।

'बहू, तुम सारा दिन इसके पीछे ना पड़ी रहा करो! दूसरी कक्षा में ही तो है अभी। इसे तो मैं पढ़ाऊंगी, देखना कितने अच्छे नम्बर आएंगे। है ना मनु बेटा?' दादी ने प्यार से सर दुलरा दिया।

तभी गली से गुजरते हुए कबाड़ इकट्ठा करने वाले ने आवाज लगाई, 'पेपर-पेपर।' मनु फिर परेशान हो गया कि उसे परीक्षा का किसने बता दिया।

'मनु पता है ये कबाड़ी पेपर-पेपर क्यों चिल्ला रहा है! यह भी बचपन में पढता नहीं था। नहीं पढ़ा तो कोई ढंग का काम नहीं कर पाया, इसलिए गली-गली घूमकर बच्चों को डराता है कि नहीं पढोगे तो यही काम करना पड़ेगा!' मनु के बड़े भाई ने कहा तो मनु ने सहमकर पैन्सिल उठा ली। उसके कानों में 'पेपर-पेपर' की आवाज आ रही थी।

-- उपासना सियाग

(दूसरी किस्त)

अपनी-अपनी छुट्टियाँ

डॉ विकास दवे

बस्ती की गंदगी ने कॉलोनी के बच्चों की हालत खराब कर दी थी। पास बहते नाले की दुर्गंध ने सांस लेना भी दूभर कर दिया था। तेजस तो बोल ही पड़ा- 'यही जगह मिली थी दादाजी को घुमाने के लिए।'

'अब लो मजे इस सुगंधित वातावरण के।' ऋषभ ने जलभुन कर कहा। कहते-कहते उसका पाँव छपाक से कीचड़ में जा पड़ा। दादाजी सब सुन-समझकर भी चुपचाप मुस्करा रहे थे। एक जगह प्लास्टिक की पुरानी चीजों का अंबार-सा लगा था। कई बोरों में पोलीथीन की थैलियाँ भरी पड़ी थीं। आस-पास बनी दो झोपड़ियों की ओर मुँह करके शर्माजी ने आवाज लगाई- 'विमला! दीनू! अरे कहाँ हो भई? आज तो तुमने कमाल का समाचार दिया है।' दोनों उस छोटे से दरवाजे से दौड़ते हुए निकले और 'दादाजी-दादाजी' कहते हुए शर्मा जी से लिपट गए।

विमला बोली- 'देखिए दादाजी हमने आपसे किया वादा पूरा किया ना?'

अब कॉलोनी के सारे बच्चों के आश्चर्य की बारी थी। उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि उनके दादाजी उनकी कक्षा के इन दोनों बच्चों को कैसे जानते हैं और ये दोनों भी तो कैसे लिपट रहे हैं हमारे दादाजी से।

शर्माजी ने मिठाई के डिब्बे निकालकर अपने हाथों से विमला और दीनू का मुँह मीठा कराया। फिर तो बस्ती के बच्चों और कॉलोनी के बच्चों ने भी मुँह मीठा किया। दादाजी ने बच्चों का संशय दूर करते हुए कहा- 'बच्चो, मैं यहाँ के संस्कार केन्द्र में जब भी आता हूँ इन सारे बच्चों से मिलता हूँ। ये दोनों बच्चे प्रतिभा-शाली हैं, इसलिए इनके माता-पिता से विशेष आग्रह कर, मैंने इनसे खूब पढ़कर प्रथम आने का वादा लिया था। दोनों बच्चों ने उस वादे को पूरा किया है।'

तब तक सभी चौपालनुमा एक बड़े ओटले पर बैठ गए थे। दादाजी ने मुख्य विषय छेड़ते हुए कहा- 'हाँ तो बच्चो, अब सब एक-एक करके बताएंगे कि हमें गर्मी की छुट्टियों में क्या करना है?

सबसे पहले ऋषि ने कहा- 'दादाजी मैंने तो पिताजी से जिद्द करके पहले ही स्वीमिंग पूल की फीस भरवा दी है और कल से ही तैरने जाना शुरू करूँगा।'

तेजस बोला- 'दादाजी मैं तो हार्दिक भैया के साथ कॉलोनी की ही स्वरांजलि संस्था में जाऊँगा। परन्तु मैं हार्दिक भैया की तरह तबला नहीं सीखूँगा, मैं तो सिन्थेसाइजर बजाना सीखूंगा। मेरे पापा मेरे लिए एक नया सिन्थेसाइजर खरीद कर ले आए हैं।'

ऋषभ ने कहा-'दादाजी मैं और वैदिक भैया तो कम्प्यूटर सीखने जाने वाले हैं। एक बार कम्प्यूटर आ गया तो फिर उस पर ढेर सारे गेम खेलेंगे।'

मिनी जो अब तक चुपचाप सबकी बातें सुन रही थी तपाक से बोली-'दादाजी मैं तो ब्रेक डाँस सीखने जा रही हूँ। फिर देखिए मैं अगले साल सारी कॉम्पिटीशन जीत कर बताऊँगी।'

'और हमारी बुलबुल बिटिया की क्या प्लानिंग है?' दादाजी ने चुपचाप एक तरफ खड़ी बुलबुल से पूछा। बुलबुल बोली-'दादाजी मैं तो मेहंदी क्लास जाकर मेहंदी बनाना सीखूंगी।'

'बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। अरे भई वाह आप सबने तो जोरदार योजना बनाई है। अरे! विमला और दीनू तुम दोनों ने तो बताया ही नहीं तुमने इन छुट्टियों के लिए क्या योजना बनाई है?

पहले तो दोनों के कुछ बोल ही नहीं फूट रहे थे, थोड़ा हिम्मत बंधाने पर विमला बोली- 'दादाजी हमारे लिए तो सब दिन एक जैसे होते हैं क्या छुट्टी और क्या स्कूल। जानते हो प्रमोद भैया, मेरी माँ मुझे रोज पोलीथीन बीनने ले जाना चाहती थी। वह तो दादाजी ने हम दोनों की फीस की कहीं से व्यवस्था करवा दी और माँ से यह वादा ले लिया था कि वे परीक्षा तक मुझे इस काम के लिए नहीं ले जाएँगी, तब जाकर माँ मानी थी। लेकिन अब तो छुट्टियाँ हो गई हैं, अब पढ़ाई भी नहीं है और न ही स्कूल रहेगा। पूरे दिन यानी सुबह छः बजे से उठकर निकलूँगी तो शाम अंधेरा घिरने तक कचरे-कूड़े के ढेर से गंदे नालों से ये पोलीथीन की थैलियाँ ही बीनना है। यही मेरी छुट्टियों की योजना है।'

दीनू की आँखें लगभग भीग गई थीं विमला की बात पूरी होते-होते। वह भी हिम्मत जुटाकर बोला- 'ऋषि भैया! मेरे पिताजी एक होटल में वेटर के रूप में काम करते हैं। मैं भी उसी होटल में चाय पिलाने और झूठे गिलास, बर्तन आदि धोने का काम करता था। विमला के साथ-साथ दादाजी ने मेरे पिताजी से भी वादा लिया था कि वे परीक्षा तक मुझे काम पर नहीं ले जाएँगे। अब छुट्टियाँ होते ही मुझे उसी दुनिया में लौटना है जहाँ आप सबकी तरह प्यार से मुझे दिनेश या दादाजी द्वारा दिए गए प्यार के नाम दीनू से नहीं पुकारा जाएगा। मैं वहां बारीक, चवन्नी, पावले और जाने किन-किन नामों से पुकारा जाऊँगा। यही मेरी छुट्टियों की योजना है।'

बात पूरी होते-होते तक लगभग सबकी आँखों की कोरें भीग गई थी। वहाँ एक अजीब सा सन्नाटा पसर गया था इतनी भीड़ होने के बावजूद भी। तब धीरे से दादाजी गला-खँखार कर बोले- 'बच्चो! आप सब रास्ते भर मुझे कोस रहे थे ना कि मैं कहाँ घुमाने ले आया आप सबको? सच पूछें तो यह मैंने सोच-समझकर ही किया था। मैं यह चाहता था कि तुम सब भी विमला और दीनू की इस परिस्थिति में की गई मेहनत को स्वीकारो। जानते हो इन दोनों के घरों में बिजली तक नहीं है। और लगभग ऐसी ही स्थितियों में जीते हैं तुम्हारे आसपास खड़े ये सारे बच्चे। भले ही देश में बाल श्रमिकों से काम लेना अपराध घोषित किया गया हो, लेकिन सच तो अब भी वही है जो इन दोनों ने बयान किया है। तुम लोग पर्याप्त सुविधाओं को भोगने के बाद भी हमेशा अपने पापा-मम्मी से कुछ न कुछ कमी की शिकायत करते रहते हो। क्या मैं गलत कह रहा हूँ?'

ऋषभ बीच में ही बोल पड़ा- 'दादाजी विवेक तो आज ही दूध में मिलाने वाले चॉकलेटी पावडर के लिए मम्मी से नाराज हो रहा था।'

दादाजी ने डपटा- 'चुगली नहीं, चुगली नहीं। तुम सब अपने मन में विचार करो। अपनी गलती ध्यान में आएगी। कभी इन बच्चों के साथ मिलने आते रहा करो, तुम्हें पता लगेगा अभाव क्या होता है? दूध तो छोड़ो कई बार ये भूखे पेट केवल डाँट खाकर सो जाते हैं।'

'अब तुम लोग ही निर्णय करो मैं तुम्हारे परीक्षा परिणाम से ज्यादा प्रसन्न विमला और दीनू के परिणाम से हुआ तो क्या गलत हुआ?'

'बिलकुल नहीं!' सबने एक साथ कहा। 'तो बजाइए दोनों के नाम की ताली सब लोग' कहते हुए दादाजी ने उन दोनों को गले से लगा लिया।

फिर वे बोले- 'बच्चों इन दोनों के लिए मैंने अपनी बैंक के सामुदायिक सेवा विभाग से छात्रवृत्ति मंजूर करवा ली है। अब ये दोनों न तो छुट्टियों में काम करेंगे न स्कूल के समय। हाँ, यदि आप सब चाहो तो पूरी छुट्टियों में हम सब एक साथ यहाँ एक समय कैम्प में रोज इकठ्ठे हो सकते हैं, जिसमें हम गीत गाएँगे, कहानी सुनेंगे, चित्रकला, कढ़ाई, बुनाई मेहंदी सहित अन्य कई गतिविधियों में भाग लेंगे। कहिए क्या राय है आप सबकी?'

'हुर्रे..' का एक जोरदार शोर उठा जिसने दादाजी की बात का समर्थन किया था। बस्ती का ही एक भैया बोला- 'दादाजी इस बार की छुट्टियाँ अपनी-अपनी नहीं रहेंगी, हम सब इसे बनाएंगे हमारी छुट्टियाँ।'

दादाजी का बाल सुलभ ठहाका बच्चों की किलकारियों में खो गया था। (समाप्त)

बाल पहेलियाँ

१. चीनी के बोरे को लूटे, धैर्य न थोड़ा इसका टूटे
काली छोटी ये काटे यदि, आह-आह मुँह से तब फूटे

२. उड़ती किंतु नहीं ये चिड़िया, आफत की छोटी सी पुड़िया
गंद जानती बस फैलाना, भन्न-भन्न का गाये तराना

३. गिरगिट बोले अपना खाना, बच्चे जानें पकड़ उड़ाना
हरा-भरा ये कौन बताओ, काम कोई फिर करने जाना

४. काला, मोटा उड़नखटोला, मस्ती करनेवाला गोला
रंग-बिरंगे रस ले जाता, नहीं समझना इसको भोला

५. लगे देखने में परी जैसी
रंगोंवाले पंख निराले
छुआ अगर तो रंग लुटाती
फूल इसे पाकर मतवाले

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ १० पर देखिए।)

'जय श्रीराम' पर फतवे ने स्पष्ट किया इस्लाम

देवेन्द्र राज सुथार

विधानसभा के अंदर जदयू के एक मुस्लिम विधायक के द्वारा 'जय श्रीराम' कहने के बाद उन पर इमाराते शरिया के मुफ्ती द्वारा फतवा लगा दिया गया। इस्लाम दूसरे धर्मों का सम्मान करने को कहता है! इस्लाम मोहब्बत और अमन का संदेश देता है। लेकिन हम जानना चाहते आलमेदीन से कि क्या इस्लाम के नाम पर जो लोग कत्ले आम करते हैं, मां से बेटा, बहन से भाई, पिता से बेटा, पति से पत्नी को अलग करते हैं उन लोगों पर फतवा नहीं लगना चाहिए?

हम हमले होने के बाद कहते हैं कि यह आतंकवादी हमला इस्लाम के खिलाफ है और बिल्कुल मै भी कहता हूँ कि लोगों का खून बहाना इस्लाम को पसंद नहीं। आजतक हमारे समाज से आने वाले ऐसे लोग जो खून-खराबा करते हैं, इस्लाम को बदनाम करते हैं, उन लोगों के खिलाफ फतवा क्यों नही लगता? आज इसी बहाने हम अपने आलमेदीन से उम्मीद करते हैं कि उन लोगों को भी इस्लाम से फतवा लगाकर बेदखल किया जाएगा जो इस्लाम के नाम पर एक दूसरे का खून बहाते हैं।

एक तरफ जहाँ हिंदुस्तान में कुछ कट्टरपंथी लोग 'जय श्रीराम' का विरोध करते है, वही इस्लामिक देश अबू धाबी में राम-नाम गूँज रहा है ! अबु धाबी के शेख प्रिंस ने 'जय श्रीराम' कहकर मुरारी बापू का स्वागत किया। उनकी बेगम ने रामचरित मानस को सिर पर उठाया। क्या अब उसके खिलाफ फतवा जारी करेगा कोई मौलाना?

कहाँ तो हम भारत में रामराज्य लाना चाहते हैं और कहाँ हालत यह हो गई है कि एक मुसलमान के राम नाम लेते ही उसे इस्लाम धर्म से बाहर कर दिया जाता है। आपकी प्रार्थना सभाओं में तो हिन्दू-मुसलमान साथ-साथ गाते थे 'रघुपति राघव राजा राम!' अब क्या हो गया? लोग गीता का श्लोक और कुरान की आयतें साथ-साथ दुहराते थे। अब क्या हो गया? जायसी, रसखान और कबीर की परम्परा पर प्रहार करने वाले क्या ये नहीं जानते कि वे भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति पर कुठाराघात कर रहे हैं?

सोचिये! जब राम और रहीम एक साथ रह ही नहीं सकते, जैसा कि फतवा जारी करने वाले कह रहे हैं, तो भारत अखण्ड कैसे रह सकता है? क्या यह संविधान और धर्मनिरपेक्षता पर खतरा नहीं है? जो लोग वोट की राजनीति के नाम पर जय संविधान का नारा देते हैं उनसे हर गली में पूछा जाना चाहिए कि जब संविधान सभा में विचार विमर्श कर वन्देमातरम् को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया गया तो इसमें मजहब कहाँ से आ गया? और अगर मजहब आ गया तो धर्मनिरपेक्षता का क्या होगा?

आज मुझे यह व्यक्तिगत रूप से बहुत बुरा लग रहा है कि एक जदयू के मुस्लिम नेता ने 'जय श्रीराम' का नारा लगाया और उसे माफी मांगनी पड़ी है। जो व्यक्ति भी हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात करते हैं, उनके मुंह पर यह घटना एक जोरदार तमाचा है।

मैं हमेशा से विरोध करता हूं कि राजनीति में धर्म का प्रयोग हो। व्यक्ति जब 'जय श्रीराम' के नाम का प्रयोग किसी विशेष समुदाय या दल को प्रसन्न करने के लिए करे, तो यह सबसे घटिया किस्म की राजनीति है। परंतु यदि किसी व्यक्ति ने 'जय श्रीराम' के नाम का नारा लगा भी दिया तो यह कोई बहुत बड़ा जुर्म नहीं है? यह कोई अपशब्द नहीं है? गाली नहीं है? बल्कि करोड़ों के हिन्दू समुदाय के प्रमुख आराध्य देवता का नाम है। ■

बच्चों के प्रति सामाजिक उपादेयता शून्य क्यों?

महेश तिवारी

बीते दिनों दिवंगत हुए वैज्ञानिक प्रोफेसर यशपाल ने वर्ष १९९२ में बच्चों के बस्तों के बोझ को कम करने को कहा था, लेकिन लगभग २५ वर्ष बीत गए और यशपाल जी भी नहीं रह। फिर भी इन दिनों में कुछ नहीं बदला, तो वह है बच्चों की पीठ पर लदा कुलियों जैसा भारी-भरकम बोझ। २०१५ में हुए महाराष्ट्र में एक वैज्ञानिक सर्वे में यह पुष्टि हुई थी कि स्कूल जाने वाले ५८ प्रतिशत बच्चों में पीठ दर्द और रीढ़ में विकृति का कारण बच्चों को ज्ञान उपलब्ध कराने वाली किताबों का बोझ है। इसके अलावा इस सर्वे में एक अन्य गंभीर समस्या सामने यह आई थी कि बच्चों की शारीरिक लम्बाई न बढ़ने का कारण भी बच्चों से पढ़ाई के नाम पर कराया जा रहा कुलियों जैसा व्यवहार है।

सामाजिकता से जुड़े इस गंभीर मसले पर विद्यालयों के व्यवस्थापकों से लेकर सरकारों तक की उदासीनता यह सिद्ध करती है कि सरकारें अपने नौनिहालों के प्रति सजग नहीं है। इसके अलावा सबसे बड़ी चिंतनीय बात तो यह है कि माता-पिता भी विरोध प्रकट नहीं करते। वैज्ञानिकों का कहना है कि बच्चों के भार से बस्तों का भार १० प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। फिर जब हमारे नौनिहाल ज्ञान के नाम पर १० से १२ किलो के बस्ते ढोते हैं, तो उस पर सामाजिक उपदेयता शून्य क्यों हो जाती है?

मीड़िया रिपोर्टों से पता चलता है कि मध्यप्रदेश राज्य में बच्चों के बैग का वजन लगभग सत्तरह किलो होता है। इसके साथ राज्य के ६८ प्रतिशत बच्चे अगर बैग के बोझ के कारण किसी न किसी बीमारी से पीड़ित है, तो सरकार को इस तरफ से सचेत होना चाहिए। भोपाल शहर के चार स्कूलों के बच्चों पर हुए कुछ महीने पहले के सर्वे, जिसमें कक्षा चार से आठ तक के बच्चों को शामिल किया गया था, तो यह सामने आया कि बैग का औसत भार बच्चों के भार का लगभग १८ प्रतिशत था। ऐसे में तेलंगाना सरकार द्वारा स्कूली बच्चों के बस्तों का बोझ कम करने और प्राथमिक स्तर के बच्चों के होमवर्क पर रोक लगाने का निर्णय प्रशंसनीय और अनुकरणीय पहल है, जिस पर मध्यप्रदेश सरकार को भी विचार करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त हमारे न्यायालय ने भी अपने आदेश में यह कहा है कि बच्चों के बस्ते का वजन बच्चों के वजन के अनुपात में दस प्रतिशत से अधिक न हो, तो बच्चों के साथ पढ़ाई के नाम पर खिलवाड़ क्यों हो रहा है? इसके पीछे पूरा उद्देश्य साफ दृष्टिगोचर होता है कि निजी स्कूलों द्वारा अपने लाभ के लिए किताबों के बोझ में बचपन दबा दिया जाता है। यह आखिर कितना उचित है? जिस उम्र में बच्चों को मौखिक ज्ञान और खेल-खेल में सिखाने की जरूरत होती है, अगर उस कच्ची उम्र में ही बच्चों को कुली बन दिया जाएगा, तो उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता होगा, इस पर हमारे हुक्मरानों, सामाजिक बुद्धिजीवियों और संरक्षकों को विचार करना चाहिए।

जब आज के दौर में तकनीक सिर चढ़कर बोल रही है, तो ऐसे में अगर बच्चों को कुछ नया सीखना भी है, तो तकनीक का सहारा भी लिया जा सकता है। जिससे किताबों की लादने की नकारात्मक प्रवृत्ति भी कम होगी। अमेरिका में बच्चों को बस्तों के बोझ के झंझट में नहीं पिसा जा रहा है, तो वे कहीं किसी स्तर पर अन्य देश के बच्चों से पीछे नहीं हैं? और हमारे देश में बस्तों के तले लादने के बाद भी शिक्षा की वही स्थिति है, ढाक के तीन पात। ऐसी शिक्षा किस काम की, जिससे बच्चों का बचपन भी गुम हो जाए और वे बीमारियों का घर बनकर देश पर बोझ बनकर रह जाएँ? इस पर हमारे नीति-नियंताओं को गहराई से विचार करना होगा। ■

गीत

बना गीत अपना तुम मुझे गुनगुनाओ
बिन किये कोई वादा, प्रीत के गीत गाओ
सुनो क्या है बोले मेरे दिल की धड़कन
छुपा लो मुझे खुद में या मुझमें छुप जाओ
दुनियादारी की रस्में भी हैं शायद जरूरी
मेरी माँग में नाम, तुम अपना भर जाओ
जिंदगी के हसीन पल बीतें बाहों में तेरी
जिंदगी के सफर में हमसफर तुम बन जाओ
मदहोश हो जाओ प्रीत में इस कदर तुम
खुशबू से अपनी, तुम मुझको महका जाओ

-- अंजु गुप्ता

बच्चे का मोल-तोल

डॉ निशा नंदिनी गुप्ता

मेरे घर से लगभग चार-पांच किलोमीटर की दूरी पर एक अनाथ-आश्रम है, जिसमें दो साल से लेकर पंद्रह साल तक के बच्चे हैं। सभी बच्चों को बड़े प्यार से रखा जाता है। उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबंध किया गया है। वहां के कुछ बच्चे तो इस साल दसवीं की परीक्षा देने के लिए तैयार हो चुके हैं। मैं अक्सर वहां जाती हूँ। उन बच्चों के साथ बात करके मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं उन्हें छोटी-छोटी नैतिक मूल्यों वाली कहानियाँ सुनाती हूँ। विवेकानंद केंद्र की पदावली पुस्तक से उनको देशभक्ति के गीत तथा गीता पाठ कराती हूँ। मैं अपना तथा अपने बच्चों जन्मदिन भी उन्हीं के साथ मनाती हूँ। १५ अगस्त, २६ जनवरी व दिवाली आदि पर्वों पर भी मैं अवश्य जाती हूँ। मेरा उन बच्चों के साथ अपनत्व का रिश्ता जुड़ चुका है। आश्रम 'ज्ञान अमृत' में अक्सर लोग बच्चों को लेने के लिए आते रहते हैं। वहां के बहुत से बच्चे अच्छे-अच्छे घरों में हैं और पढ़ लिखकर ऊँचे पदों पर आसीन हैं।

एक शाम जब मैं वहां गई तो किसी भी बच्चे का मन कहानी सुनने में नहीं लग रहा था। सभी बच्चे बहुत उदास बैठे थे। पूछने पर पता चला कि सात साल का चिंटू चला जाएगा। कोई गोखले नाम के दंपत्ति उसको लेने आ रहे हैं। कपड़े के बहुत बड़े व्यापारी है। भगवान ने उन्हें कोई संतान नहीं दी, इसलिए वे एक बच्चे को गोद लेना चाहते हैं। यही कारण था कि सभी बच्चे उदास थे। चिंटू बहुत ही समझदार बच्चा था। पढ़ने में भी बहुत अच्छा था। सभी बच्चे चिंटू को बहुत प्यार करते थे। वह बहुत ही अनुशासन में रहता था। सब का सम्मान करता था। जब भी कोई किसी बच्चे को लेने आता था तो सभी बच्चे उदास हो जाते थे और उस रात खाना नहीं खाते थे। आज फिर वही स्थिति थी।

वीनू वहां पर सबसे बड़ा था। वह सभी बच्चों को बहुत प्यार करता था। वह एक कोने में उदास बैठा था। अचानक वह बोल उठा- दीदी क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि हम सब यहीं रहें, कोई हमें न ले जाए। मैंने उन्हें प्यार से समझाया- क्या तुम लोग नहीं चाहते कि हम भी अपने माता-पिता के साथ रहें, जैसे और बच्चे रहते हैं? ये लोग तुम्हारे माता-पिता बनकर आते हैं। तुम्हें जीवन की हर खुशी व सुख देते हैं। मेरी बात उनकी समझ में आ गई। और सभी बच्चे थोड़ा सामान्य हो गए।

हम लोग बात ही कर रहे थे कि वे गोखले दंपति आ गए। वहां के आचार्य जी बहुत ही नेकदिल इंसान हैं। वे सभी बच्चों को अपने बच्चों जैसा स्नेह देते हैं। किसी बच्चे के बीमार होने पर रात भर सोते नहीं हैं। उन्होंने गोखले दंपत्ति को अपने कक्ष में बैठाया। पहले आचार्य जी ने उनसे काफी देर बात की, फिर चिंटू को बुलाने का आदेश दिया गया। चिंटू डरा व सहमा हुआ था। वह जाना नहीं चाह रहा था। मैं सात साल के चिंटू को गोद में लेकर कक्ष में गई। मेरे पीछे-पीछे सभी बच्चे भी वहां आकर दरवाजे की ओट में खड़े हो गए।

अब चिंटू उन दंपत्ति के समक्ष खड़ा था। जिस तरह सब्जी खरीदते वक्त देखी परखी जाती है। उसी तरह वे गोखले दंपत्ति चिंटू को देख रहे थे। वे आचार्य जी से बोले- आपने तो कहा था बच्चा बहुत सुंदर है, यह तो काला है। नैन नक्श भी अच्छे नहीं हैं। मैं भी पीछे खड़ी सब बातें सुन रही थी। आचार्य जी ने कहा- आप कन्या ले लीजिए। जीवन भर सुखी रहेंगे। स्त्री बोल पड़ी- 'अरे लड़की तो हम हरगिज नहीं लेगें। हमें अपने कुल का वारिस चाहिए। लड़की लेकर हम क्या करेगें? उसके विवाह में कितना खर्चा होगा। लड़का तो हमारे बुढ़ापे की लाठी होगा और उसके विवाह में दहेज भी मिलेगा।' अभी आचार्य जी कुछ बोलते की इससे पहले वह स्त्री फिर बोल पड़ी- 'चेहरे से तो कोई छोटी जाति का लगता है।' अब वीनू से रहा न गया। वह तेजी से कमरे के अंदर जाकर बोला- 'आप हमारी जाति जानना चाहते हैं, तो सुनिए हम सब अनाथ जाति के हैं और हमको इस तरह मोल-तोल करने वाले माता-पिता नहीं चाहिए। हम सब यहां बहुत खुश हैं। हमारा भाई चिंटू इनके साथ नहीं जाएगा।'

वीनू के इस तरह बोलने पर हम सब बहुत खुश थे। आचार्य जी ने उनसे कहा आपको बच्चा नहीं बेजानदार खिलौना चाहिए। तभी तो भगवान ने आपको निःसंतान रखा। आपकी इतनी सारी शर्तों को भगवान कैसे पूरा करता। अगर लड़की होती तो आप उसे मार देते क्योंकि आपको लड़का चाहिए और वह गोरा और सुंदर होना चाहिए। आप बाजार चले जाइये और वहां से प्लास्टिक का एक गुड्डा खरीद लीजिए। वह सुंदर भी होगा और उसकी जाति भी ऊँची होगी। हम गुड्डे नहीं पालते हैं। हम अपने हृदय के टुकड़े पालते हैं। हमारे लिए ये सब बच्चे भगवान का रूप हैं। हमने कभी इनको हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई नहीं समझा और न कभी इनको ऐसी शिक्षा दी। आचार्य जी की बातें सुनकर सब बच्चे जोर-जोर से तालियां बजाने लगे। गोखले दंपत्ति सिर झुकाए खड़े थे। चिंटू दौड़कर मेरे पास आ गया था और मुझसे चिपक गया था।

आज हमारे समाज की यही स्थिति है। शर्म आती है ऐसे समाज पर जो बच्चे को गोद लेते समय भी विभिन्न प्रकार से भेद-भाव करते हैं। ■

तुम्हें टॉप करना है!

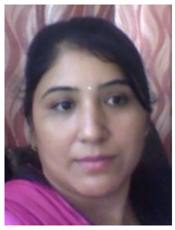

कामनी गुप्ता

ख्वाहिश तो हर मम्मी पापा की यही होती है कि उनका बेटा या बेटी ही टॉप करे, हर लिहाज से दूसरों के बच्चों से बेहतर निकले। परन्तु बार-बार बच्चों पर इस बात का दबाब डालना महंगा भी पड़ सकता है। अपने बच्चों की रिश्तेदार के बच्चों से तुलना करना सही नहीं है, क्योंकि हर बच्चे में अलग-अलग सोच और दिमाग होता है किसी काम को पूरा करने का। हम अपनी क्षमता के मुताबिक उस काम को करते हैं।

पर सूरज की ममी को यह बात समझ नहीं आ रही थी। उसकी यह जिद्द थी कि सूरज को टॉप ही करना है, बाकी बच्चों से आगे निकलकर दिखाना है। सूरज के दिमाग पर दबाब सा बन गया था, एक डर बैठ गया था कि अगर सच मैं कुछ कर न पाया तो मम्मी डांटेंगी, मुझे ताने मारेंगी सभी रिश्तेदारों के सामने कि यह तो है ही नालायक, इससे कुछ नहीं होता।

सूरज बहुत कोमल हृदय का लड़का था। वह समझता था कि सभी उससे उम्मीद रखते हैं, उसे उन पर खरा उतरना होगा। सूरज जानता था कि टॉप करने के लिए बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी, जो वह नहीं कर पाता था। उसका दिमाग थोड़ा कमजोर था, वह चाह कर भी वैसी तैयारी नहीं कर पा रहा था जैसी उसकी ममी चाहती थी। उसकी दिलचस्पी पढ़ाई में कम ड्राइंग में ज्यादा थी। पर वह जानता था कि उसकी पसंद को कोई नहीं समझेगा। आखिरकार इम्तिहान सर पर आ गए। दसवीं की परीक्षा थी तो दबाब भी बहुत ज्यादा था।

ममी के ताने और कड़वी बातें, वह तंग आ गया था सुन-सुनकर कि किसी के बच्चे के नियानवे प्रतिशत अंक आए, किसी के नब्बे प्रतिशत। वह इतनी मेहनत नहीं कर पा रहा था। इम्तिहान का उस पर हौआ-सा बन गया था और वह डर गया था। इसी डर व तनाव से वह डिप्रेशन में चला गया और पहले ही इम्तिहान में चक्कर खाकर गिर गया।

जैसे-तैसे उसे होश आया, तो इम्तिहान का काफी समय निकल गया था। उसके पास कम समय बचा था काम ज्यादा था, वह जितना कर सकता था किया और घर आ गया। आते ही ममी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा कि इम्तिहान कैसा रहा? वह जोर जोर से रोने लगा और सिर पकड़कर बैठ गया और बोला ममी मुझे बहुत डर लगता है, मैं तो पास भी नहीं हो पाऊंगा। डर के मारे जो आता था, वह भी भूल गया और चक्कर आ गया। मैं बिल्कुल अच्छा नहीं कर पाया। स्कूल में तो अस्सी प्रतिशत तक आते हैं, पर लगता है मैं पास भी नहीं हो पाऊंगा। मुझे सिर दर्द हो रहा है जोर से। मैं बाकी के इम्तिहान नहीं दे सकता।

उसकी मम्मी जान चुकी थी कि यह उसकी ही बातों की वजह से हुआ है। सूरज बहुत सहम गया था। मम्मी ने उसके सिर पर हाथ फेरा और डॉक्टर के पास

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(भाग ४)

दिव्यांगों के आदर्श - श्री बच्चू सिंह

जब माउंटबेटन भारत पहुंचा तब तक बच्चूसिंह सभी राजनीतिक विषयों पर अपना पक्ष आप रखने वाली मानसिकता में थे। आरम्भ में भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता के वे अन्यों के साथ सहयोग बनाते थे, लेकिन परिस्थितियाँ इतनी बदलीं कि वे किसी भी राजनीतिक दल के हस्तक्षेप को पसंद नहीं करते थे।

१९३२ में ‘कम्यूनल अवार्ड’ और ‘पूना समझौते’ के विरुद्ध ‘क्षत्रिय आंदोलन’ के समय सर छोटूराम ने ‘अजगर’ क्षत्रिय आंदोलन चलाया, जो केवल विकलांगों, अनाथों, जरूरतमंदों को संरक्षण देता था। छोटूराम यूनियनिस्ट नेता थे, बच्चूसिंह भी इनकी राजनीति के उत्साही समर्थक बन गए थे।

पूना समझौते की १०-वर्षीय अवधि १९४२ में समाप्त हुई, किन्तु भारत छोड़ो आंदोलन के विरुद्ध श्रम-मंत्री भीमराव अंबेडकर के समर्थन में सरकार ने इसे बनाए रखा, जिससे आंतरिक विरोध बढ़ने लगा। १९४५ में छोटूराम की मृत्यु के बाद उनके आंदोलन का नेतृत्व बच्चूसिंह के पास आ गया। तब उनके नेतृत्व में जन क्रांति से डरकर सरकार ने महाराजा बृजेन्द्र को ‘क्षत्रिय कर्तव्य’ के नाम से बच्चूसिंह को बंगाल के युद्ध क्षेत्र में भेजने के लिए मना लिया, साथ ही उन्हे संतुष्ट करने के लिए पदोन्नत भी किया।

बंगाल में अजगर समुदाय और आर्य समाज नहीं थे। जापान से डरकर ब्रिटिश सरकार पीछे हट गई थी। इस समय जनता को राहत देने की जगह ‘कृषक प्रजा पार्टी’ के भ्रष्टाचार के कारण अकाल फैला हुआ था। सेना भी मुश्किल से राशन प्रबन्ध कर रही थी। बच्चूसिंह राजनीति के इस रूप से बेहद आहत हुए,

किन्तु वे सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई शरतचंद्र बोस व आईएनए के सहयोगियों से जुड़ गए, जिससे उनका राजनीति उत्साह बना रहा। युद्ध के बाद यद्यपि बच्चूसिंह को युद्ध के समय बंगाल में शांति व्यवस्था रखने और जापान आक्रमण को हराने के लिए मेडल दिये गए, तथापि उन्होंने आईएनए के समर्थन से जनवरी १९४६ में स्वतन्त्रता क्रांति करवा दी।

राजनीतिक दलों द्वारा अपने स्वार्थों हेतु क्रांति का विरोध करके षडयंत्र से ‘तलवार’ पोत पर उसे फरवरी १९४६ में समाप्त करवाने के कारण बच्चुसिंह राजनीतिक दलों से उखड़ गए। यूनियनिस्ट के मुस्लिम नेताओं द्वारा १६ अगस्त १९४६ को मुस्लिम लीग के आयोजित ‘सीधी कार्यवाही दिवस’ में समर्थन से बच्चूसिंह ने राजनीतिक दलों से अपने आपको पूर्णतः अलग कर लिया।

द्वितीय विश्वयुद्ध में भारी हानि के कारण ब्रिटेन अपने उपनिवेशों पर नियंत्रण रखने की स्थिति में नहीं था और १९४६ विद्रोह के बाद अव्यवस्था और पाकिस्तान के दंगों के कारण भारतीय ब्रिटिश प्रशासक डरे हुए थे ही। अतः बच्चूसिंह ने इसी समय का लाभ उठाकर खुद भरतपुर में वाइसराय लॉर्ड वेवेल सहित ब्रिटिश अधिकारियों को डराया धमकाया। घबराए वेवल ने अपनी परिषद ही खत्म करके भारत छोड़ने का प्लान तैयार कर लिया।

ब्रिटेन इस स्वतन्त्रता के विरुद्ध था। परंपरानुसार एक वायसराय के जाने के बाद ही दूसरा वायसराय आता था, लेकिन वेवेल भागने की तैयारी कर चुका था, इसलिए स्थिति बदलने के लिए राजा जॉर्ज पंचम ने अपने कूटनीतिज्ञ सहोदर लुईस माउंटबेटन को वेवेल के ही दौरान वाइसराय बनाकर भारत भेजा। इसका काम था भारत को पूर्ण विभाजित करके शक्तिहीन करना और कॉमनवेल्थ में डालकर ब्रिटिश प्रभाव बनाए रखना।

माउण्टबेटन ने रियासतों के लिए रेजीडेंटों को पटाया और शेष भारत के लिए जिन्ना और नेहरू को चुना जो अपनी-अपनी सत्ता के लिए ब्रिटिश कॉमनवेल्थ से जुडने और देश विभाजन भी करने के लिए तैयार थे। तब ब्रिटिश संसद ने भारत को विभाजित स्वतन्त्रता दी।

जिन्ना ने लगभग सभी मुसलमानों को अपने साथ मिला लिया, १९४६ की क्रांति को तोड़ने वाला तलवार पोत का मोहम्मद शरीफ भी पाकिस्तानी नौसेना में लेफ्टिनेंट रैंक पर भर्ती कर लिया गया। लेकिन क्रांतिकारियों को नेहरू ने भारतीय सेना में शामिल नहीं होने दिया। इस नीति से बच्चूसिंह पूरी तरह से राजनीतिक दलों के खिलाफ हो गए।

(अगले अंक में जारी)

हास्य-व्यंग्य

कैसी-कैसी आजादी!

तारकेश कुमार ओझा

फिर ‘आजादी आजादी’ का वह डरावना शोर सचमुच हैरान करने वाला था। समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह कैसी आजादी की मांग है। अभी कुछ महीने पहले ही तो देश की राजधानी में स्थित शिक्षण संस्थान में भी ऐसा ही डरावना शोर उठा था। जिस पर खासा राजनैतिक हंगामा हुआ था। कहां तो आजादी की सालगिरह से पहले मन ‘मेरे देश की धरती सोना उगले...’ जैसे गीत सुनने को आतुर था और कहां यह तरह-तरह की आजादी का कर्णभेदी शोर।

एक और नेता ऐसे ही नारे लगाकर बुरे फंसे थे। जनाब ने जोश में आकर विधर्मी नारा लगा दिया था, क्योंकि उन्हें अपने से बड़े कद वाले राजनेता से आजादी चाहिए थी। खैर उन्होंने माफी मांग ली। अब राजनेता बन चुकी एक पूर्व अभिनेत्री ने आजादी पर बड़ी मजेदार टिप्पणी की। उनकी राय थी स्वतंत्रता से जीवन जीने की जो आजादी मेरी मां ने मुझे दी, वह मैं अपनी बेटियों को नहीं दे सकी। आजाद ख्यालों के लिए जानी जाने वाली एक और अभिनेत्री ने अपने नवजात बच्चे के साथ अपना फोटो सोशल साइट पर शेयर किया, जो इन दिनों बूढ़े हो चुके अभिनेता की पांचवीं पत्नी बनकर विदेशों में छुट्टियां मना रही है।

खैर राजनैतिक घात-प्रतिघात व देश के विभिन्न भागों के बाढ़ की चपेट में रहने के दौरान ही बिल्कुल विपरीत खेमे में जा चुके नेताजी का पुराना बयान सुनाया जा रहा था, जिसमें वे कह रहे थे कौन कहता है कुछ नहीं बदला जिनके लिए बदलना था, बदल गया। लेकिन बदली परिस्थितियों में शायद यही बात खुद उन पर लागू होती नजर आ रही थी। कहने का मतलब यह कि चीजें बदलती रहती है, बस देखने का नजरिया होना चाहिए। मेरे क्षेत्र के एक जनप्रतिनिधि जब चुनाव में खड़े हुए थे तो उनके मोबाइल का कॉलर ट्यून था मेरा देश बदल रहा है। वे चुनाव जीत गए, लेकिन उनका कॉलर ट्यून नहीं बदला। बदला तो बस इतना कि माननीय बनने से पहले वे फोन रिसीव करते थे। लेकिन जीतने के बाद तो उनका फोन बस देशभक्ति गाने ही सुनाता रहता है, कभी फोन रिसीव भी होता है तो दूसरी तरफ उनके कारिंदे मिलते हैं जो बड़ी बेरुखी से बताते हैं कि माननीय बैठक में व्यस्त हैं, बाद में फोन कीजिए।

लोग विकास का रोना रहते हैं, लेकिन कितना कुछ विकास तो हो रहा है, उसकी तरफ किसी की नजर नहीं जाती। अब देखिए क्रिकेट में हमारी महिला टीम भी उसी तरह कमाल दिखाने लगी है जैसा पहले पुरुष टीम किया करती थी। महिला खिलाड़ियों पर भी धन की खूब बारिश हो रही है। सचिन और धौनी का महिला वर्जन तैयार करने को आतुर बाजार हिलोरें मार रहा है। उन पर एक से एक महंगे उपहार न्यौछावर किए जा रहे हैं। महिला खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने देश से न जाने कितने सेलीब्रेटीज सात समंदर पार खेल मैदान पहुंच गए। एक से बढ़कर एक उम्दा तस्वीरें स्वनामधन्य हस्तियों ने सोशल साइट्स पर शेयर किए। देशभक्ति का इससे बड़ा दृष्टांत और क्या हो सकता है।

यह सब देख मुझे उन महापुरुष की याद ताजा हो

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(पहली किस्त)

छोटी अम्मा की बेटी

सुधीर मौर्य

मेरे पिता जमींदार नहीं थे पर उनका रुतबा किसी जमींदार से कम नहीं था। उनका रुतबा कम होता भी कैसे? वे एक जमींदार के बेटे और जमींदार के भाई थे। मेरे पिता तीन भाई थे और तीनों में वे छोटे। मेरे पिता के दोनों बड़े भाई स्कूल से आगे नहीं गए। सच तो ये प्राइमरी स्कूल से ज्यादा पढ़ने की उन्होंने नहीं सोची और न ही इसकी जरूरत समझी। पर मेरे पिता पढ़ना चाहते थे। हालाँकि मेरे बाबा नहीं चाहते थे कि मेरे पिता उनसे दूर रहें, फिर भी मेरे पिता की इच्छा जानके उन्होंने उनको पढ़ने के लिए शहर भेज दिया। मुझे इस बात का बेहद फख्र है कि मेरे पिता ने उस जमाने में प्रथम श्रेणी में विज्ञान से स्नातक पूरा किया था।

मेरे बाबा ने जब नश्वर देह त्याग दी, तो परम्परा के अनुसार उनके सबसे बड़े बेटे यानि मेरे बड़े ताऊ ने जमींदारी संभाली। हमारी यह खानदानी जमींदारी आठ गाँवों में फैली हुई थी। देश को आजादी मिलने के बाद कहने को तो जमींदारी खत्म हो चुकी थी, पर हमारा घराना खुद को जमींदार ही समझता रहा था। भले ही उनके पास जमींदारी के कोई कानूनी अधिकार न बचे हो पर आठ गाँवों के इलाके में फैले उनके सेकड़ों बीघा खेत और बाग उन्हें जमींदारी के दम्भ से आजाद नहीं होने देते थे। अगर इस दम्भ से थोड़ा बहुत कोई आजाद था तो वे थे मेरे पिता। मेरे बाबा की मृत्यु के बाद मेरे बड़े ताऊ जमींदार बने थे। परन्तु छोटे ताऊ का खून ठेठ जमींदारी वाला खून था। आठगांव ही नहीं उसके बाहर के इलाकों में भी उनकी दहशत की तूती बोलती थी।

हमारे गाँव के पास से एक नहर बहती है। खेतों की सिंचाई के लिए। सिंचाई को सुविधाजनक बनाने के लिए इस नहर पर सरकार ने एक बांध बनवाया था। सिंचाई विभाग के कर्मचारियों के रहने के लिए इस बांध के पास एक ईमारत बनायी गई थी। इसमें कर्मचारियों के रहने के लिए कुछ क्वार्टर के अतिरिक्त एक छोटा सा खूबसूरत बंगला भी था। जब भी कोई बड़ा अधिकारी आता तो वह इस बंगले में रिहायश करता।

कहने को तो यह ईमारत सरकारी लोगों के लिए आरामगाह थी, पर वास्तव में इसे छोटे ताऊ अपनी दबंगई के चलते अपनी ऐशगाह के रूप में इस्तेमाल करते थे। किसी की क्या मजाल जो छोटे ताऊ के खिलाफ चूं भी कर जाये। सिंचाई विभाग के कर्मचारी भी छोटे ताऊ के डर से तकरीबन उनके नौकर की तरह रहते। इसी बंगले में महफिल सजती। दारू और चिकेन मटन का भोग लगता। ये महफिलें सिर्फ यहाँ तक ही सीमित नहीं रहीं, बल्कि छोटे ताऊ इस बंगले में अय्याशी के लिए पास के गांव में रहने वाली तवायफों को भी बुलाते। जब बाजारू औरतों से ताऊ का जी नहीं भरता, तो वह अपनी हवस आठ गांवों में रहने वाली पसंद आई औरत या लड़की को जबरन रौंदकर पूरी करते। बेचारे गरीब गांव वाले मन मसोसकर रह जाते।

उस समय में वह हमारे अठगवां की सबसे सुन्दर लड़की थी। उनकी सुंदरता का किस्सा छोटे ताऊ के कानों तक पहुंचा, तो ताऊ उन्हें अपने ऐशगाह में लाने की जुगत भिड़ाने लगे। और फिर एक दोपहर जब वह खेत पर अपने बप्पा को रोटी-पानी दे जा रही थी, तो छोटे ताऊ उन्हें अपने कारिंदों की मदद से उठाकर अपनी ऐशगाह में ले आये। मेरे ताऊ ने उन्हें जितना कमजोर समझा था वह उतनी कमजोर थी नहीं। वह शाक्य जाति के एक मेहनती किसान की मेहनती बेटी थी। जहाँ सुंदरता ने उसके शरीर को सुकोमल बनाया हुआ था वही मेहनत ने उसके शरीर को सशक्त भी बना दिया था। अपनी हिफाजत के लिए बंद कमरे में उसने किसी शेरनी की तरह छोटे ताऊ का मुकाबला किया।

पता नहीं मेरे छोटू ताऊ जानते थे या नहीं, पर वह सुकोमल और सशक्त लड़की अपनी ही जाति के किसी लड़के के प्रेम में थी। उस दोपहर जब ताऊ उसे उठाकर लाये, तो वह अपने प्रेमी से मिलकर खेत की ओर जा रही थी। शायद उसके प्रेमी की नजर इस कांड पर पड़ी होगी। जब तक उसका प्रेमी उस ऐशगाह में पहुंचा, तब तक उसने बड़ी बहादुरी से खुद को बचाये रखा। जब उस वीरांगना ने अपने प्रेमी को सामने देखा तो वह भागकर अपने प्रेमी के पीछे छिप गई।

पर छोटे ताऊ अपनी जमींदारी के दम्भ में आकंठ में डूबे हुए थे, इसलिए उन्हें यह समझ नहीं आया। जब उस शख्श ने मेरे ताऊ को समझाने की कोशिश की कि यूँ किसी लड़की की अस्मत से खेलना अच्छी बात नहीं और उन्होंने यह भी बताया कि वे आपस में प्रेम करते हैं इसलिए अब वह दुबारा कभी इस लड़की पे अपनी गन्दी नजर न डालें। खैर, मेरे ताऊ ने आगे बढ़कर लड़की को उसके प्रेमी से खींचने की कोशिश की, तो उनकी उम्मीद के विपरीत उस युवक ने छोटे ताऊ के जबड़े पर एक जोरदार घूँसा जड़ दिया। शायद अपनी अब तक की पूरी जिंदगी में किसी ने मेरे ताऊ ने अपने चेहरे पे किसी का घूँसा खाया था। उनके जमींदारी खून ने भी उबाल खाया और उन्होंने भी पलट के एक घूँसा उस युवक के मार दिया। फिर दोनों आपस में गुँथ गए। वह युवक भी एक मेहनती और बलिष्ठ किसान था। उसके एक वार से छोटे ताऊ लड़खड़ा के दीवार से टकराये। उनका सर दीवार से टकराने से फट गया। उनके मुँह से पहले खून निकला और फिर हिचकी और इसी हिचकी के साथ उनके प्राण भी शरीर से निकल गये।

अन्दर चल रही इस हाथापाई की आवाज सुनकर ताऊ के कारिंदे वहां आ गए और बिना कुछ विचारे उस युवक पर पिल पड़े। उस लड़की ने रोते चिल्लाते और अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपने प्रेमी को बचाने की पूरी कोशिश की पर वह उन मुस्टंडों के आगे हार गयी। कुछ ही देर में उस सरकारी बंगले में दो लाशें गिर गयी थीं।

हमारे और उस युवक के घर दोनों जगह मातम पसर गया। पर दुख तो हमारे घर में ज्यादा था, क्योंकि बाकी लोगों का मरना तो किसी जानवर के मरने के बराबर हे, जबकि हमारे घर में हुई मौत एक जमींदार के बेटे और भाई की मौत थी। यद्यपि हमारे जमींदार घराने के कारिंदों ने छोटे ताऊ की मौत का बदला उस युवक को मारकर ले लिया था, फिर भी मेरे बड़े ताऊ की नजर में अभी उनके छोटे भाई की हत्या का साथ इन्साफ पूरा हुआ ही नहीं था।

पास के कसबे में पुलिस चौकी थी। इस पुलिस चौकी की सारी जरूरत की चीजें हमारा घराना मुहैया कराता था। इस वक्त पुलिस वाले हमारे घर पर हमारे मातम में शरीक हो रहे थे, पर बड़े ताऊ इतने से ही संतुष्ट नहीं थे। कुछ देर में ही कुछ पुलिस वालों के साथ हमारे घराने के कारिंदे उस युवक और युवती के गांव पहुंचे। युवक और युवती दोनों के घर वालों की बेरहमी से पिटाई की गई और युवती को जबरन उठाकर हमारे घर ले आया गया। तुरंत ही लकड़ी के एक ढेर में आग लगवाकर बड़े ताऊ ने ऐलान कर दिया कि उनके भाई की लाश जले, उससे पहले इस लड़की को आग में झोंककर जला दिया जाये।

मैंने पहले ही जिक्र किया कि वह लड़की न सिर्फ सुकोमल थी, बल्कि उसमें शेरनी की ताकत भी थी। खुद को आग में झोंके जाने का उसने जबरदस्त विरोध किया। कहते हैं कि भगवान् हमेशा हिम्मत से संघर्ष करने वालों का साथ देते हैं। इस वक्त भगवान् ने उस दुखियारी शेरनी की मदद करने का फैसला किया। मेरे पिताजी जो शहर में स्नातक की पढ़ाई कर रहे थे, वे उस दिन यूँ गाँव की याद आने की वजह से घर आ गए।

घर का ये वीभत्स मंजर देखकर पहले तो पिताजी को कुछ समझ नहीं आया, पर तुरंत ही वे अपने बड़े भाई की लाश और उस युवती को जलाये जाने का प्रयास देखकर माजरा समझ गए। यद्यपि भाई की मौत उनके लिए एक हृदयविदारक सदमा था, पर उस समय उन्होंने अपना कर्तव्य सुनिश्चित किया और भागकर उस युवती को, जो लगभग जलती आग में फेंक दी गई थी, उसे आग से खींच निकालकर अपने कोट को उतार उससे उस लड़की के कपड़ो में लगी आग बुझाने लगे।

पिताजी ने अपने स्नातक की पढ़ाई दांव पे लगा दी थी। उस नवयुवती की रक्षा और आठ गाँव में अपने घराने के आतंक को रोकने के लिए। पिताजी ने उस लड़की से विवाह का प्रस्ताव रखा, जिसे उस लड़की ने स्वीकार कर लिया। पहले मैं इस स्वीकृति का कारण यह समझता रहा कि उस लड़की ने खुद को बचाने वाले इंसान को देवता समझा होगा और जब उस देवता ने विवाह का प्रस्ताव रखा तो वह मना न कर सकी होगी, जबकि उस देवता का भाई उसके प्रेमी का हत्यारा था।

(अगले अंक में जारी)

महाकवि मूसल की नारी चेतना

पूरन सरमा

महाकवि मूसल का काव्य नारी सुलभ भावनाओं तथा उसकी समग्र चेतना से सराबोर रहा है। उनकी चेतना का आलम यह है कि नारी देखते ही कुलाँचें मारने लगती है तथा घण्टों तक उसमें डूबे उसी रंग से लबरेज रचनाएँ लिखते रहते हैं। वे नारी को वंदनीया मानते हैं तथा खुशहाल जीवन के लिए उसका पूजन भी स्वीकार करते हैं। उनकी कविताओं में नारी का चेतना स्वर बहुत ही प्रखरता से आया है और वे उसी के संयोग तथा वियोग का वर्णन अपनी काव्य रचनाओं में सघनता से कर पाये हैं। उनके गीत नारी की कमर, कपोल, लटों, होंठों, चाल तथा शारीरिक सौष्ठव में डूबे नये-से-नये आयाम ढूँढ़ते देखे जा सकते हैं।

महाकवि मूसल की शारीरिक रचना उनके नामानुरूप मूसल के आकार की है तथा वे उसी के स्वभावगत साम्य के साथ वे अपना बौद्धिक कौशल भी रखते हैं। मूसल की उम्र इस समय करीब साठ वर्ष है लेकिन नारी के मामले में वे सदैव बिलबिलाते मिलेंगे। वे अपनी पत्नी से उपेक्षा भाव बरतकर दूसरी नारियों में प्रेम के भाव तलाशते देखे जा सकते हैं। महाकवि मूसल सदैव किसी मनन-चिंतन में उलझे नारी स्तुति तथा सौन्दर्योपासना में लगे रहते हैं।

महाकवि मूसल से मेरा परिचय घनघोर है तथा वे जब तब अपनी कोमल कवितायें मुझ पर पेलते रहे हैं। उनका दर्द एक है, लेकिन उसे उन्होंने गाया हजारों तरह से है। वे अपने जीवन में नारी को ऊर्जा के रूप में स्वीकार करते हैं तथा मानते हैं कि यदि उन्हें एक नारी की संगत मिल जाये, तो वे कविता में क्रान्ति कर सकते हैं। लेकिन इस देश की नारियाँ उन्हें अभी क्रांति का मौका ही नहीं दे रही हैं। जब वे उनकी प्रशंसा में कविता लिखते हैं, तो वे उस समय उनका सान्निध्य चाहते हैं।

इसी कारण वे उनकी धर्मपत्नी से उपेक्षित हो गये तथा आज वे इसी दर्दे-दिल को लिये विविध आयामी सृजन के प्रति समर्पित हैं। पत्नी को वे पूरे दिन में तीन हजार गालियाँ निकालते हैं तथा दूसरी अनाम प्रेमिका के लिए अपने जीवन की तमाम मिठास को उँड़ेल देते हैं। हालाँकि उनकी कविता में उलाहना शैली ज्यादा सघनता से उभरी है। लेकिन वे अगली कविता में अपना बैलेंस बना लेते हैं और नारी चेतना का स्वर बराबर बनाये रखते हैं।

यदि उन्हें नारी सुलभ हो जाये तो कविता लिखना भूल जाते हैं। यही वजह है कि उनकी कविताओं का स्वर वियोग पर ज्यादा केन्द्रित रहा है। नारी वियोग के कारण ही वे हजारों हजार कवितायें आज हिन्दी साहित्य संसार को सौंप चुके हैं। उनकी कवितायें नारी अंगों की सुंदरता तथा उनके लिए नायाब उपमायें ढूँढ़ने में नूतनता के साथ सामने आयी हैं।

२

सुना है पच्चीस वर्ष की आयु में कोई नारी उनके जीवन में आयी थी, वह भी केवल दो घण्टे के लिए। तब से आज तक घरवाली को भूल उसकी स्मृति को यादों में संजोये काव्य सृजन के प्रति पूरे मनोयोग से जुड़े रहे हैं। महाकवि मूसल की रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि बन सकती हैं, यदि कोई आलोचक आगे आकर अपना समय बरबाद करने की कूवत रख सकता हो तो। वे अपने मूल्यांकन के प्रति भी कभी चिंतित नहीं रहे हैं। वे सदैव अनाम नायिका के नाम ढेर सारे उपालंभ भेजते रहते हैं और वह है कि जालिम भूले मन से भी उन्हें याद नहीं कर पाई है।

महाकवि मूसल नारी जाति को एकटक देखते हैं, उसमें कविता ढूँढ़ते हैं तथा एक-एक अवयव की पूरी चीर-फाड़ के बाद नये बिम्ब उभारते हैं। वे बिम्ब प्रेम कविता जगत में सर्वथा नवीन भावबोधों के साथ विद्यमान हैं तथा वह समय अब दूर नहीं है, जब उनकी रचनाएँ शृंगार के अन्य प्राचीन महाकवियों को भी मात दे सकेंगी। भारतीय काव्य शास्त्र की मीमांसा में भी वे नारी चेतना के भावों को वरीयता देते हैं तथा पुरजोर दबाव के साथ माँग करते हैं कि नारी स्वरूप, दुर्गा का प्रतीक है तथा वह ऊर्जा की देवी है। वे नारियोचित भावनाओं से भरे मधुरिम क्षणों से घिरे स्वयं से बतियाते रहते हैं। महाकवि मूसल की इसी शृंगारिकता के कारण पूरे मोहल्ले के लोग उन्हें अपने घरों में प्रवेश नहीं देते और यदि वे आ भी जावें, तो चंद क्षणों में ही बहानेबाजी के बाद टरका देते हैं। वे इसी कारण सामाजिक प्राणी भी नहीं कहला पाये हैं। महाकवि मूसल की साधना स्थली, नदी का किनारा, पेड़ों के झुरमुट तथा कोयल की कुहू-कुहू के बोलों के मध्य ही रह पायी है। वे प्रकृति में कोमलता तलाशते हैं तथा उसी के प्रतीकों को नारी गीतों तथा गजलों में पिरो देते हैं।

महाकवि मूसल दर-दर की ठोकर खाने के बाद जान पाये हैं कि जमाना बड़ा बैरी है तथा प्रेमी मन को पींगें नहीं बढ़ाने देना चाहता है। इसलिए उन्होंने जमाने को अपनी रचनाओं में आड़े हाथों लिया है तथा इस कदर कोसा है कि शोधार्थी ही उसमें निहित मर्म को बाहर निकाल सकता है। उन्होंने ऐसे-ऐसे नये भावजन्य प्रतीक खोजे हैं, जो पूर्ववर्ती किसी भी साहित्य में नहीं पाये जाते।

महाकवि मूसल कविता-पाठ के लिए सदैव तत्पर रहते हैं तथा वे हर छंद पर दाद चाहते हैं। गलती से यदि किसी ने दाद दे दी, तो फिर वे लगातार कविता पर कविता पेलते जायेंगे। उनसे कविता सुनने का अर्थ है कि आप अमूल्य समय गँवायें। वे सारे दिन जगत दायित्वों से ऊपर उठकर कविता में खोये रसिकमना कविताओं की चासनी यहाँ-वहाँ टपकाते फिरते हैं। महाकवि मूसल जब भी काव्य सृजन का क्षण जीते हैं तो वे किसी प्रसूता से कम व्यथित दिखाई नहीं देते। वे भावों की सघन पीड़ा में ओत-प्रोत कनपटियों को लाल किये तमतमाये चेहरे से मुक्ति संघर्ष के क्षण भोगते रहते हैं। वे यथार्थ को जीकर लेखन पर जोर देते हैं।

३

उनकी नारी चेतना का अंदाज इस बात से भी लगाया सकता है कि वे नारी को जगाकर उनसे साक्षात्कार को प्रेरित करते हैं। इसके लिए वे कभी क्रोध में भुनभुनाते हैं तो कभी मीठी लोरी के बाद जागरण का उद्बोधन करते हैं। भारतीय हिन्दी साहित्य के इतिहास में नाम दर्ज कराने के लिए उन्होंने अपना जीवन होम कर रखा है। नारी वियोग की आग में जलते हुए जिस किसी ने उन्हें देखा है वही जान सकता है कि वे किस तापमान पर तप रहे हैं। वे ओलिया, औघड़, संत, फकीर पता नहीं कितने उपमानों से अपने आपको अलंकृत करते रहते हैं तथा जीवन को एक ऐसी संवेदना से जोड़े रहते हैं जहाँ लौकिकता का मोह स्वतः ही टूटता है तथा आध्यात्मिकता का नूतन दर्शन प्रस्फुटित होता है। यही वजह है कि वह सूफियाना ढंग से अपनी प्रियतमा के लिए पीहू-पीहू की रट लगाते कुहूकते हैं। महाकवि मूसल का यह पक्ष उन्हें नारी जनित भावबिम्बों के करीब ले जाता है तथा वे नारी चेतना के प्रखर प्रणेता बन जाते हैं।

महाकवि मूसल की मानसिकता इतनी घृणित तो है नहीं कि उन्हें पहचानने में हम भूल करें। वे सृजन के क्षणों में कविता को जीते हैं तथा काल्पनिक चित्रात्मकता उनके मानस में सतत् रूप से बनी रहती है। महाकवि मूसल की, इसी नारी चेतना का परिणाम है कि वे कवि सम्मेलनों में बिना बुलाये पहुँचते हैं तथा निःशुल्क रूप में पाँच की एवज पचास की संख्या में कविताएँ श्रोताओं को छकाने के लिए फेंकते रहते हैं। मूसल का मानसिक नारी भाव दया, सहानुभूति तथा करुणा का मिला-जुला अनूठा संगम है, बशर्ते कि कोई उनकी भावनाओं की आंतरिक गहराई को जान और पहचान सके तो महाकवि मूसल प्रगतिवादी युग में भी नारी जनित दोषों से घिरे गुप्त रोगों से पीड़ित हुये भावात्मक गरिष्ठताओं को अपने कलेजे में दबाये किसी सुखद परिणाम की आशा में जीवन से इत्तफाक करते हैं।

यही समय होता है जब कविताओं में जीवनगत नारियोचित विद्रूपताओं को जीवंत रूप से वे उभारते हैं तथा एक ऐसी भावात्मकता को जन्म देते हैं जब वह नारी के साँगोपांग स्वरूप-दर्शन में एकाकार हो जाने के लिए छटपटाते हैं। वे नारी चेतना के मामले में अद्भुत और अनूठे हैं। उनके चालीस साल की उम्र के बेटे तथा बीस साल के पोते हैं। उसके बाद भी नारी चेतना को उन्होंने विलुप्त नहीं होने दिया है। ऐसे महाकवि मूसल से आप मिलना चाहें तो मुझसे मिलें। मैं जरूर मिलवा दूँगा। वे हँसते कम हैं, रोते ज्यादा हैं। आप मिलकर क्या महसूस करते हैं, यह मुझे जरूर बताना।

(पृष्ठ २७ का शेष)

तुम्हें टॉप करना है

ले गई और डॉक्टर से मिलकर सारी बात सुनाई कि मैं कुछ गलत तो नहीं चाहती, अपने बेटे का भविष्य ही सुधारना चाहती हूँ। पर लगता है यह डर के मारे कुछ भी नहीं कर पा रहा है। अपनी योगयता से भी पीछे हो गया है। आत्मविश्वास ही नहीं रहा इसमें, पहली परीक्षा में ही हारकर बैठ गया है, बस रोए जा रहा है।

डॉक्टर ने अपने तरीके से सूरज को समझाया और उसके दिमाग से बोझ कम करने और कोई टैंशन न लेने को कहा। फिर सूरज को बाहर भेजकर उस की मम्मी को भी समझाया कि ठीक है, हमें बच्चों को समय समय पर राह दिखानी पड़ती है, पर बार-बार बच्चे को कम आंकना या किसी के साथ तुलना में लाना उस बच्चे की अपनी योग्यता और क्षमता को भी भुला देता है। और बच्चा जब नहीं कर पाता तो मानसिक तनाव उसके अंदर घर कर जाता है। वह खुद को दोषी मानने लगता है, हार मान लेता है और अकेला महसूस करता है। ऐसे में कोई गलत कदम भी उठा सकता है। इसलिए बच्चों को कुछ स्पेस और आजादी देनी पड़ती है जिससे वह अपनी क्षमता को पहचानकर अपना बेहतर दे सकें।

मम्मी समझ गई थी। सूरज में भी थोड़ा आत्मविश्वास जगा था उसने बिना किसी डर और अंकों के खौफ के अपना बेहतर किया और अच्छे अंक भी लाए। हाँ, उतने तो नहीं जितने मम्मी चाहती थी, पर उतने जो वह अपनी कड़ी मेहनत से बिना इम्तिहान को हौआ समझे ला सकता था। मम्मी भी अब समझ चुकी थीं। सूरज को फिर स्वस्थ और आत्मविश्वास से भरा हुआ देखकर मम्मी बहुत खुश थी। उन्होंने फिर कभी सूरज से नहीं कहा कि तुम्हें टॉप करना है। ■

(पृष्ठ ४ का शेष)

हमारे बुजुर्ग...

एक ऐसी ही निःसंतान अभागी बुढ़िया का शव मेरे आँखों के सामने चलचित्र की तरह घूम रहा है जिसका शव पड़ा हुआ था और रिश्तेदारों में धन के लिये आपस में झगड़ा हो रहा था। कोई बैंक अकाउंट चेक कर रहा था तो कोई गहने ढूँढ़ रहा था, मगर जीते जी किसी ने उसकी देखभाल ठीक से नहीं की। सभी एकदूसरे पर दोषारोपण करते रहे तथा कहते रहे कि जो सम्पत्ति लेगा वह सेवा करेगा, लेकिन वो बूढ़ी चाहती थी कि मेरी सम्पति सभी को मिले, क्योंकि जब अपना बच्चा नहीं है तो सभी रिश्तों के बच्चे बराबर हैं।

आज की परिस्थितियों में बुजुर्गों को थोड़ा उदार तथा मोह माया से मुक्त होकर संत हृदय का होना पड़ेगा अर्थात् नौकर-चाकर पर खर्च करना होगा, जिससे उनकी ठीक तरीके से देखभाल हो सके। क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि गरीब अपने बुजुर्गों की सेवा तथा देखभाल तो स्वयं कर लेते, किन्तु अमीरों को सेवा करने की आदत नहीं होती ऐसे में उन्हें सेवक पर ही निर्भर होना होता है और सेवक तो तभी मिलेंगे न जब खर्च किया जाये। यदि बुजुर्ग अपना पैसा स्वयं पर नहीं खर्च करते हैं, तो उनकी संतानों को चाहिए कि अपने माता-पिता के लिए सेवक नियुक्त कर दें, क्योंकि माता-पिता की सेवा सुश्रूषा करने का दायित्व उन्हीं का है। यदि स्वयं सेवा नहीं कर सकते तो किसी से करवायें। वैसे भी अपने माता-पिता की सम्पत्ति के उत्तराधिकारी तो वे ही हैं।

यह सर्वथा ध्यान रखना चाहिए कि कल को सभी को इसी अवस्था से गुजरना है, हम आज जो अपने बुजुर्गों को देंगे, हमारी औलादें हमें वही लौटाएंगी। ■

(पृष्ठ २८ का शेष)

कैसी-कैसी आजादी

आई जिन्होंने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान पर ट्वीट किया था कि उन्होंने जीवन में कभी बेटा-बेटी में फर्क नहीं किया। मरने के बाद वे अपने जीवन भर की कमाई फकत चंद सौ करोड़ रुपए बेटा-बेटी के बीच बराबर बांटने वाले हैं। कितनी महान सोच है। लोग बेवजह बेटा-बेटी के बीच भेदभाव का रोना रोते हैं।

ऐसे ही न जाने कितने सेलीब्रिटी ऐसे रहे जो सरकार के किसी विवादास्पद कदम पर तत्काल ट्वीट कर प्रतिक्रिया देने लगते हैं कि यह देश हित में है। भले ही हाथ में थैला पकड़कर बाजार जाने की नौबत शायद ही उनके समक्ष कभी आई हो। एक ही देश में आदमी-आदमी के बीच सोच का कितना अंतर है। कोई टमाटर की कीमतें बढ़ने का रोना रोता है, किसी को बेरोजगारों की चिंता सता रही है।

देश के विभिन्न भागों के साथ मेरे गृहजनपद में भी बाढ़ की विभीषिका मारक रुप में सामने आई। एक ही जिले में एक प्रखंड को शिकायत है कि किन्हीं कारणों से पड़ोसी प्रखंड को तो हर साल बाढ़ की विभीषिका झेलने के अभिशाप से आजादी मिल गई, लेकिन उनके प्रखंड को नहीं। किसी को शिकायत है कि बाढ़ की विनाशलीला की चैनलों पर बस झलक दिखाई जा रही है, वहीं सेलीब्रेटियों के एवार्ड शो का निर्बाध प्रसारण घंटों हो रहा है। खैर आजादी की सालगिरह निकट है। जल्द ही सोशल साइटें देशभक्ति के प्रमाण और प्रतीकों से पटने वाली हैं। लेकिन वहीं एक वर्ग पहले ही की तरह कमियों का पिटारा लिए बैठा है। ■

(पृष्ठ १४ का शेष)

एक कदम स्वच्छता...

के शिखर तक पहुंचाया। मल्हीपुर पंचायत ने यह साबित कर दिखाया कि हर मनुष्य सरकार के कदम में कदम मिलाकर मन में ठान ले, तो सभी कार्य आसानी से हो जायेंगे। और किसी भी जिला में जिलाधिकारी अपनी ओर से लोगों को तन-मन-धन से प्रोत्साहित करते हुए साथ दें तो मैं दावे के साथ कहता हूँ कि स्वच्छता अभियान या कोई भी अभियान ऐसा नहीं, जो सफलता की ओर न बढ़ सके। मैं जिलाधिकारी रोहतास, प्रखंड विकास पदाधिकारी चेनारी, संकुल संयोजक श्री हिरामन साह, पंचायत मल्हीपुर तथा सभी ग्रामीण जनता एवं सहयोगी कर्मचारी को अपनी ओर से इस कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूँ। जय स्वच्छता! जय बिहार!! जयहिन्द!!! ■

(पृष्ठ २० का शेष)

चोटी की प्रधानता

गया हमेशा से गधे को ही मूर्खता का पर्यायवाची क्यों मानते हैं, ये मेरी समझ से बाहर है।

कुल मिलाकर देखा जाये तो कुछ ही दिनों में भारत एक ऐसे चोटी प्रधान देश के रूप में जाना जायेगा जहाँ अपनी चोटी बचाये रखने के लिए लोग दूसरों की चोटियां काटते हैं और देश के खोखले होने की दुहाई चिल्ला-चिल्लाकर देते हैं। अगर गौर किया जाये तो इस देश में हर दूसरे तीसरे आदमी की चोटी किसी न किसी के घर गिरवी रखी मिलेगी, क्योंकि भारत महान है। ■

(पृष्ठ २२ का शेष)

हामिद अंसारी...

अल्पसंख्यक मजे कर रहे हैं। उन्होंने पत्थरबाजों का समर्थन करके अपनी विकृत मानसिकता का परिचय देश को दे दिया है तथा परोक्ष रूप से सेना का मनोबल भी तोड़ने का असफल प्रयास किया है।

अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष गेरूल हसन का यह कहना सही है कि अंसारी को यह बात अपने कार्यकाल के आखिरी दिनों में ही कहने की आवश्यकता क्यों आ पड़ी? इससे यह बात साफ हो रही है कि राष्ट्रपति पद के चुनाव के दौरान व बाद में उपराष्ट्रपति पद पर उनकी फिर से वापसी पर चर्चा तक नहीं की गयी। उनके मन में यही छटपटाहट रही होगी जिसके बाद अपनी भावनाओं का प्रकटीकरण इस प्रकार से कर दिया और मोदी सरकार को अपमानित कर दिया। यदि वे बिना कुछ बोले चले जाते तो संभवतः उन्हें कोई याद नहीं रखता। ■

गीत

मेरे मन के तीर बड़ी हलचल
तंगहाल हो रही डगर नित आशाओं की
बदल रहा जीवन क्षण क्षण परिभाषा भी
जगे स्वप्न आँखों निशि दिन अगिन रंग के
खेले खेल नींद नयन को पग पग देते छल
ढलक चिढ़ाए मुँह दर्पण लख बेबाक जवानी
उथलाती तन रही उतर हृदय जो बनी रूहानी
राग रंग सुर ताल बिसर धवलता नाचे लट पे
बिम्ब ताकता दूजी आँखों अचरज ले ये मन
कठिन बहुत कह पाना क्या कुछ रीत रहा है
उजियारो हो चकचौंध गहन तम जीत रहा है
खड़ा निपट अंजान डगर तन मन हो स्तंभित
अंध पथिक सा टोह रहा आहट आस स्पंदन
साँझ सवेरे पलक भांजते बेदम हो भाग रहे हैं
बावल मन सब वीतराग चुन चुन के ताग रहे हैं
मीठा खट्टा और तीत कसाय बटोर मन गागर
शहद घोल खारे जल में कर रहा प्रबल मंथन

-- प्रियंवदा अवस्थी

दोहे

मीठी बोली बोल के, वचन निभाये आज।
कैसे मानव हो लिये, सवाल जग में आज।।
पानी पानी कह रहा, पानी मिला न पास।
भटका घर घर देहरी, पानी दिया न आस।।

-- अशोक बाबू माहौर

लाल कला मंच की काव्य गोष्ठी

नई दिल्ली। ७१वें स्वतंत्रता दिवस के पूर्व संध्या पर लाल कला मंच, नई दिल्ली की ओर से एक ओज काव्य गोष्ठी का आयोजन वरिष्ठ समाजसेवी डा. बी.बी. सिंह की अध्यक्षता में मीठापुर चौक पर संपन्न हुआ।

काव्य गोष्ठी की शुरुआत मंच के अध्यक्ष सोनू गुप्ता एंव समाजसेवी जगदीश चंद्र शर्मा तथा डा. बी. बी. सिंह के दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इसके बाद इसे आगे बढ़ाया संस्था के संस्थापक सचिव लाल बिहारी लाल ने लघु सरस्वती वंदना और युवा कवि सिद्धांत कुमार ने अपनी कविताओं से। काव्य गोष्ठी में जय प्रकाश गौतम, के.पी. सिंह कुंवर, मास्टर नानक चंद, असलम जावेद, रवि शंकर, `पा शंकर तथा गिरीराग गिरीश ने भी अपनी ओजपूर्ण कवितायें पढ़ीं। सुरेश मिश्र ने देश में स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति पर तंज कसा, तो काजल चौबे ने अपनी बात कविता के माध्यम से सैनिकों के समसामयिक हालात पर कही।

संचालन कर रहे शिव प्रभाकर ओझा ने भी देश में हो रहे विभिन्न वर्गों, जाति, धर्मों में हो रहे भेदभाव को मिटाने की बात पर बल दिया। धुरन्धर राय ने लाल बिहारी लाल की प्रसिद्ध रचना कण-कण में महके चंदन सुनाकर सबका मन मोह लिया।

इस अवसर पर समाजसेवी लोकनाथ शुक्ला, राजेन्द्र अग्रवाल, मलखान सैफी, अशोक कुमार, राजेन्द्र प्रसाद आदि मौजूद थे। अंत में संस्था के अध्यक्ष सोनू गुप्ता ने आये हुए सभी कवियों एंव आगन्तुकों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ धन्यवाद दिया। ■

शशांक मिश्र भारती सम्मानित

शाहजहांपुर। बीते दिनों समग्र साहित्यिक योगदान व कई पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन सहभागिता के लिए उ. प्र. के शशांक मिश्र भारती को देश की कई प्रतिष्ठित संस्थाओं ने अपने-अपने सम्मानों से अलंकृत किया।

इनमें इतिहास एवं पुरातत्व शोध संस्थान संग्रहालय बालाघाट मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ वीरेन्द्र सिंह गहरवार ने 'राष्ट्रीय कीर्ति भारती', विद्श्री सुरभि साहित्य संस्कृति अकादमी खण्डवा मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ जगदीशचन्द्र चौरे ने 'महाअलंकरण सम्मान', पद्मश्री डॉ मणिभाई देसाई मानव सेवा ट्रस्ट पुणे महाराष्ट्र के डॉ रविन्द्र दि. भोले ने 'भारतरत्न डॉ ए.पी.जे. अब्दुलकलाम राष्ट्ररत्न पुरस्कार २०१६', अहिन्दीभाषी हिन्दी लेखक संघ, पांऊटा साहिब, हिमाचल प्रदेश के महासचिव सुरजीत सिंह जोबन ने 'सरस्वती साहित्य गौरव सम्मान', सन्त गाडगे बाबा कर्मभूमि सेवा प्रतिष्ठान मुर्तिपुर व तरुणाई फाऊंडेशन कुटासा तालकोट के अध्यक्ष श्री दिवाकर सोनो व श्री सन्दीप देशमुख ने 'संत गाडगे बाबा कर्मभूमि पुरस्कार' तथा कम्यूनिटी वेलफेयर फाउण्डेशन इण्डिया, संगोली, महाराष्ट्र के प्रेसीडेंट डॉ विजय कुमार एस. शाह ने 'कम्युनिटी डेवलेपमेण्ट सार्टिफिकेट' से श्री भारती को सम्मानित किया। ■

डॉ सुनील कुमार परीट को 'शतकवीर सम्मान'

बेंगलूरु। दिल्ली की मंजिल ग्रुप साहित्यिक मंच (मगसम) ने बेंगलूरु में बनशंकरी में रचना पाठ एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षा बी.एस. शांताबाई, मुख्य अतिथि डॉ. मोहनचंद्र जोशी, संस्था के राष्ट्रीय संयोजक सुधीर सिंह 'सुधाकर', बेंगलूरु संयोजिका उर्मिला श्रीवास्तव, समाज सेवक मदन बलदोता ने मिलकर डॉ सुनील कुमार परीट को 'शतकवीर सम्मान', 'रचना प्रतिभा सम्मान', 'रचना रजत प्रतिभा सम्मान' प्रदान करके सम्मानित किया। संस्था के सदस्यों और पाठकों ने डॉ परीट की रचनाओं को दो हजार से अधिक ग्रीन कार्ड दिये हैं और संस्था ने उनको मगसम का दक्षिण भारत के प्रभारी के रुप में नियुक्त किया है। डॉ परीट अहिंदीभाषी प्रदेश कर्नाटक के कन्नड भाषी होते हुए भी हिंदी साहित्यकार हैं। ■

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन व सम्मान समारोह

आगरा। यूथ हॉस्टल-आगरा में ६ अगस्त को दिव्यांग दर्पण परिवार द्वारा अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 'काव्यामृत वर्षा' व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिव्यांग दर्पण पत्रिका के विशेष सहयोगी श्री राकेश चन्द्र डिमरी का जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से सेवानिवृत्त होने पर सपत्नीक सम्मान किया गया। ज्ञात हो कि श्री डिमरी ने आजीवन पूर्णतः निःशुल्क पत्रिका व दिव्यांगजनों की सेवा का व्रत लिया है। इनके साथ ही दिव्यांग सुशील कुमार व जितेन्द्र पाल सिंह को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में कविगण डॉ. भगवती प्रसाद मिश्र अतीत, घुमक्कड़ कवि गाफिल स्वामी, सुरेश सिंह यादव, मान सिंह मनहर, प्रेमपाल वियोगी, मुकेश कुमार ऋषि वर्मा, राकेश जैन, उमेश भारती, विनोद पाटिल, रवि गुप्ता, विपिन चौहान आदि ने अपनी काव्य रचनाओं से मिठास घोली। कार्यक्रम का संचालन पत्रिका के मुख्य संपादक प्रताप सिंह सिसोदिया ने किया। वहीं अध्यक्षता डॉ. भगवती प्रसाद मिश्र 'अतीत' ने की।

उपस्थित सभी वक्ताओं ने देश, समाज, नारी, दिव्यांगजनों व राष्ट्रभाषा हिन्दी पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम में भुवनेश्वर कुलश्रेष्ठ, जितेन्द्र जादौन, सौरभ श्रीवास्तव, लोकेन्द्र, अतुल सिरोही, कु. आरती, श्रीमती अनीता डिमरी, अनिल अग्रवाल, पंकज कुलश्रेष्ठ, के. के. गर्ग, राकेश खण्डूरी, दिगपाल सिंह, श्रीमती चन्द्रमाला, उमेश, सोहन लाल, अतुल गर्ग आदि उपस्थित रहे। ■

कार्टून -- श्याम जगोता

डोकलाम विवाद समाप्त दोनो सेनाएं पीछे हटेंगी

जय विजय मासिक

कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०६ (महा.)

मोबाइल-9919997596; ई-मेल-jayvijaymail@gmail.com; वेबसाइट-www.jayvijay.co

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।